ओ३म्

एक प्रति मूल्य 12/-

हिन्दी मासिक

जनज्ञान

जनवरी २००८ — वर्ष:४२ अंक:९ — पौष–माघ २०६४

26 जनवरी
गणतंत्र दिवस पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

वन्दे मातरम् !
सुजलाम्, सुफलाम्,
मलयज-शीतलाम्,
शस्यश्यामलाम्, मातरम् !
वन्दे मातरम् !
शुभ्रज्योत्स्नां, पुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम्, वरदाम् मातरम् !
वन्दे मातरम् !

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों से आह्वान्!

कम से कम एक और परिवार में पहुँचाएं जनज्ञान

'जनज्ञान' वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद तथा सबल समर्थ राष्ट्र के सृजन का प्रेरक माध्यम है। पत्रिकाएं तो सैकड़ों हैं। उनमें से अधिसंख्य विशुद्ध व्यावसायिक हैं, जबकि जनज्ञान एक 'अभियान' का सशक्त स्वर है। विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक तथा राष्ट्र से संबद्ध विषयों पर निर्भीक टिप्पणियां जनज्ञान की विशेषता है।

- ❖ यह अभियान है आर्य मर्यादा के प्रति जागरण का।
- ❖ यह अभियान है हिन्दुत्व के तर्कसंगत पृष्ठपोषण का।
- ❖ यह अभियान है सामाजिक समता भाव के स्फुरण का।
- ❖ यह अभियान है देशद्रोही तत्वों से समाज को बचाने का।
- ❖ यह अभियान है अपने बिछुड़े बंधुओं को पुनः साथ लाने का।
- ❖ यह अभियान है तुष्टीकरण के चक्रव्यूह से राजनीति को छुड़ाने का।
- ❖ यह अभियान है कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्घोष को गुंजाने का।
- ❖ यह अभियान है हिन्दुत्व के विश्वबंधुत्वमय स्वरूप को दर्शाने का।
- ❖ यदि यह अभियान आपको प्रिय है तो सहयोग का हाथ बढ़ाइये।
- ❖ अपने मित्रों, परिजनों में कम से कम एक और जनज्ञान का सदस्य बनाइए।
- ❖ यही है परिस्थिति का आह्वान। घर-घर पहुंचे जनज्ञान।
- ❖ सामग्री प्रकाशन में आपके सुझाव का होगा स्वागत।
- ❖ क्योंकि आप हमारे परिजन हैं, नहीं हैं अभ्यागत।

बार्षिक शुल्क १०० रु. है।

-सम्पादक

जनज्ञान मासिक मंगाने के नियम

1. जनज्ञान के पाठक पत्र व्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें (सदस्य संख्या : जनज्ञान के रैपर पर लिखे पते के साथ अंकित रहती है।)
2. 'जनज्ञान' प्रतिमाह पांच और छः तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।
3. मास के अन्त तक 'जनज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भी भेज दिया जाता है।
4. 'जनज्ञान' की एक प्रति का मूल्य बारह रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये है।
5. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है। **पत्र के साथ मनीआर्डर फार्म और पोस्टकार्ड संलग्न होता है। कृपया पोस्टकार्ड पर उत्तर अवश्य दें।**
6. आगामी वर्ष के लिए शुल्क मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा **दिल्ली के किसी भी बैंक के चैक द्वारा** भेज सकते हैं। शुल्क प्राप्त न होने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी. पी. द्वारा भेजा जाता है।
७. **वी. पी. में पच्चीस रुपये डाकव्यय अतिरिक्त लगता है जिसका लाभ न तो सदस्यों को और न ही संस्था को होता है।** अतः कृपया सूचना मिलते ही धन तुरन्त मनीआर्डर द्वारा भेज देवें अथवा संलग्न कार्ड पर उत्तर अवश्य दें।

-सम्पादक

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

वेद — ऋक् यजु साम अथर्व

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

जनज्ञान प्रकाशन नई दिल्ली - 5

हिन्दू राष्ट्र स्थापना हेतु संघर्ष करो

सम्पर्क-स्थल
2286 आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 28752741, 41004741

मुख्यालय
वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-110036
मोबाइल : 9818257254

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक : **पंडिता राकेश रानी**
सह-सम्पादक : **दिव्या आर्य**
वार्षिक शुल्क -110 रु0
एक प्रति - 12 रुपये
विदेश में **वार्षिक शुल्क**-500 रु.
(हवाई जहाज से) **वार्षिक शुल्क**-1000रु.
जनवरी, 2008 वर्ष 43 अंक 9

सम्पादकीय

गणराज्य दिवस का आह्वान : जगे राष्ट्र का स्वाभिमान

२६ जनवरी भारत राष्ट्र के इतिहास की अविस्मरणीय प्रेरक तिथि। इसी दिन स्वतन्त्र भारत ने अपना संविधान स्वयं को समर्पित किया था। यह प्रेरक दिवस राष्ट्र के समुज्ज्वल भविष्य के सृजन हेतु जन-गण द्वारा समर्पण भाव के पुनरुच्चार का क्षण तो है ही, साथ ही यह है विद्यमान परिस्थितियों पर गहन-चिंतन मनन कर भविष्य की राह के निर्धारण का भी । राष्ट्र के समक्ष आज आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद, साम्प्रदायिकता, संकीर्णता, जातिवाद उपस्थित हैं।

राष्ट्र जागरण के इस पावन पर्व पर उपरोक्त चुनौतियों पर पार पाने अथवा इन समस्याओं के समाधान पर ध्यान देने पर यह तथ्य भी उभरकर समक्ष आता है कि यह आर्यावर्त्त यह हिन्दुस्थान, यह अपना भारत महान जिन जीवन मूल्यों और संस्कृति की प्राण वायु से अमरत्व का अहसास कर सकता है, उसके तेजस्वी और ओजस्वी रूप के जागरण और उन जीवन मूल्यों के अनुगमन तथा 'शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चिन्ता प्रवर्तते' की नीति का अनुसरण ही विद्यमान विकराल समस्याओं अथवा चुनौतियों के शमन का अमोघ मंत्र है। कोई भी तटस्थ और वैचारिक दृष्टि से दिग्भ्रमित पोच-सोच से मुक्त विश्लेषक इसी निष्कर्ष पर पहुंचे बिना नहीं रहेगा कि हिन्दुत्वनिष्ठ मूल्यों तथा संस्कृति के आधार पर ही होगा राष्ट्र जागरण अथवा नवोत्थान।

यह लक्ष्य तभी सच हो सकेगा जब राष्ट्र अपनी जीवनदायिनी संस्कृति के आधार पर जागृत होगा। जब राष्ट्र का जन-गण अपने को पहचान कर स्वाभिमान से सीना तानकर एक सबल-समृद्ध और सशक्त राष्ट्र का अविभाज्य अंग होने के पावन भाव से अभिभूत होगा।

विदेशी दासता से मुक्ति और 'अपने देश में अपना राज' की कामना कर ब्रिटिश दासता के विरूद्ध इस राष्ट्र ने १८५७ के स्वातन्त्र्य समर का प्रेरक पृष्ठ इतिहास में समाहित किया था। उस महान क्रान्ति समर के बाद यदि हम अपने देश के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो यह तथ्य समझ आ जाता है कि हम-कदम दर कदम आगे बढ़ रहे हैं। इस समग्र परिदृश्य में राष्ट्र जागरण के सन्दर्भ में निराश होने का भी कोई कारण नहीं है। चरैवेति,

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी 2286 आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005 से प्रकाशित एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स 308/4 शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

चरैवेति के वैदिक आह्वान से निनादित रहो इस मातृभूमि, पितृभूमि एवम् पुण्यभूमि भारतवर्ष के राष्ट्रजन आगे बढ़े है, बढ़ रहे हैं और अनेक क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की स्थिति भी पा रहे हैं। काल प्रवाह को दृष्टिगत रखते हुए हमारे इस उत्तरोतर विकास में भी विशिष्ट गति की आवश्यकता है। अन्यथा खतरा इस बात का भी है कि इस प्रक्रिया में ही कोई बाह्य शक्ति हम पर पुनः हावी, प्रभावी नही हो जाए। गणतन्त्र दिवस के इस पावन पर्व पर इस बात की चिंता करना भी युगधर्म है।

जिन पुण्यात्माओं स्वातन्त्र्य संघर्ष के अद्‌भुत योद्धओं ने राष्ट्र का नेतृत्व किया था, उनके तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के अनन्तर स्वदेश के नीति निर्धारिकों के मन भी इस चिन्ता से मुक्त नहीं रहे। क्योंकि वे इस तथ्य से अनभिज्ञ नहीं थे कि व्यवस्था, नेता, नीति, दल, सरकार, विचार, महापुरुष आदि तो सहायक मात्र हैं। इन सबके अतिरिक्त एक मूलभूत तथ्य है, जिसके आधार पर ही ये सब सहायक होंगे। इस देश के राष्ट्रनिष्ठ नेतृत्व ने समय-समय पर इस मूल तत्व की चिन्ता तो की ही है कुछ इस तरह से इसे वर्णित किया है:- समग्र भारतवर्ष के जन साधारण के मन में देशात्म बोध की चेतना को जागृत कर जब तक उनके सद्‌गुणों के स्तर को अधिकार नहीं दिया जाएगा तब तक इस देश में कोई भी शुभ कार्य सफल नहीं हो सकता।

गणतन्त्र दिवस के इस प्रेरक अवसर पर यह विचार करना भी आवश्यक है कि स्वाभिमान से मस्तक ऊंचा उठाकर आगे बढ़ने की यह प्रक्रिया सुचारू रूप से गतिमान है अथवा नहीं? जब इस दृष्टि से विचार करते हैं तो यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि हम युग की इस होड़ में एक सीमा-तक पिछड़े हुए हैं। जिससे संकट भी उपस्थित हो सकता है। विद्यमान हालात पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि नवोत्थान की दिशा में बढ़ते हुए हमने काफी अर्जित किया है सफलाएँ प्राप्त की हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् अनेक विविधताओं के बावजूद हमने अपने प्रजातंत्र को बड़ी हद तक सुचारू रूप से चलाया है। लोकतांत्रिक व्यवस्था से समग्र समाज में समता लाने के हेतु हम सतत प्रयासरत हैं। ऐसा भी नहीं है कि यह सब कुछ शान्ति सहित होता रहा है। राष्ट्र का इतिहास साक्षी है कि स्वातन्त्र्य के स्वर्णविहान के बाद से अब तक के कालखंड में हमें चार युद्ध लड़ने पड़े हैं और उनमें भारत की शौर्य परम्परा का अनुगमन करने वाले जयिष्णु जवानों ने विजयश्री का वरण किया है। हमने परमाणु शक्ति का अर्जन कर विश्व में अपनी प्रतिष्ठा में वृद्धि की है। हमारे देश के अनेक क्षमतावान व्यवसायियों ने अब उसी देश के अनेक व्यापारिक प्रतिष्ठानों को खरीदने का चमत्कार भी कर दिखाया। कि जहां से आकर कभी ईस्ट इंडिया कम्पनी ने व्यापार करने के बहाने इस देश की धरती पर अपने पैर जमाकर अपनी कुचालों से भारत भूमि पर अपनी दासता का जाल बिछाया था।

जहां यह सब घटनाक्रम स्वतन्त्रता के बाद विभिन्न क्षेत्रों में विकास की प्रेरक तस्वीर पेश करता है, वहीं देश के चित्र का एक और भी पक्ष है। चार-चार युद्धों में विजयश्री का वरेण्य करने, अणु अस्त्र सम्पन्न भारत देश के अगल-बगल में उस अंचल में उभरे पाकिस्तान और बंगला देश जैसे लघु देश, जिनका जन्म ही किसी षड्‌यंत्र अथवा काल प्रवाह के फलस्वरूप हुआ है, वे भी हमें धमकाने से बाज नहीं आ रहे। उनके द्वारा परिपोषित आतकंवाद आज हमारी इस पुण्य भूमि में अब तक अनेक स्थानों पर अपना रौद्र रूप दर्शा चुका है। स्वतन्त्रता के छः दशक बाद भी नन्दनवन कश्मीर और पूर्वोत्तर में समस्याओं का तना तान-वितान समस्याओं के रूप में विद्यमान् है।

वस्तुतः दासता की बेड़ियों को काटने में सफलता पा लेने के तुरन्त उपरान्त स्वतन्त्र राष्ट्र अपने उद्देश्य के बारे में स्पष्ट हो जाता है। उसका सर्व प्रधान उद्देश्य यही रहा है कि अपने समग्र क्षेत्र पर उसका सम्प्रभु राज्य स्थापित हो। पूर्ण वैभव की प्राप्ति भी उसकी उद्देश्यमालिका का एक मणका होता है। विश्व में सभी स्वतन्त्र राष्ट्र इन उद्देश्यों की पूर्ति में संलग्न हैं। किन्तु जब हम इस परिप्रेक्ष्य में स्वतंत्र भारत के सम्बन्ध में विचार करते हैं तो यह प्रश्न उभर कर समक्ष आता है कि आखिर स्वतंत्रता के बाद आज तक अपने देश की सम्प्रभु भूमि का कौन सा चित्र हमारे समक्ष है? इस प्रश्न का कोई सुनिश्चित उत्तर तो नहीं ही है।

विद्यमान हालात पर ध्यान जाता है तो जहां यह चित्र नेत्रों के समक्ष उभर आता है कि जहां हम आर्थिक क्षेत्र में काफी आगे बढ़े हैं हम वहीं दूसरी ओर हमारे किसान आत्महत्या करने पर भी बाध्य हो रहे हैं। एक ओर भौतिक सुख-सुविधाएं, सामग्री और साधनों में वृद्धि हो रही है, वहीं दूसरी ओर ६० प्रतिशत लोग इन सबसे सर्वथा वंचित हैं। अतएव यह विचार करने पर बाध्य होना पड़ता है कि आखिर गड़बड़ कहां है? राष्ट्र जागरण का भी अपना-अपना अर्थ हर व्यक्ति लगाता है। जिस भान्ति मानव की प्रकृति के आधार पर उसके उत्थान का परिमाण निर्धारित होता है, उसी तरह किसी राष्ट्र की अपनी प्रकृति के आधार पर उत्थान के

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो।)

सम्पादकीय	१
सामयिक विचार	४
महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी	५
आपके पत्र	७
वैदिक चिन्तन -वेदों में विज्ञान - *आचार्य डा. विशुद्धानन्द मिश्रा*	९
शान्ति करण - *देव नारायण भारद्वाज*	११
वर्तमान काल में आश्रम-व्यवस्था - *स्वाम विवेकानन्द सरस्वती*	१२
वेदों में ज्ञान-विज्ञान कल्पना नही.... - श्र प्रकाश आर्य	१५
वेदों में शत्रु कौन ? - महत्मा रामचन्द्र शर्मा वीर	१७
गणतंत्र दिवस के प्रेरक पर्व पर .. - *संदीप कुलकर्णी*	१९
भारतीय गणराज्य क सुदृढ़ता और शस्त्रास्त्रबल - वीर सावरकर	२०
विशेष अधिकार नहीं, समान अधिकार - *न्यायमूर्ति रामा जायस*	२२
पूर्वोत्तर अंचल में भारतीय गणराज्य.. - *मनमोहन शर्मा*	२४
संविधान में हिन्दी *: बाधाओं के घेरे में बंदी -डा. बलदेव सहाय*	२६
भारतीय गणराज्य की राजभाषा हिन्दी... - *डा. कृष्ण लाल*	२९
संविधान का अनुच्छेद २५ और मत-मजहब - *आचार्य आर्य नरेश*	३०
हर संकट से उबरे हम - *प्रां. मक्खन लाल*	३२
महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और शुद्धि - *हरबंसलाल कोहली*	३५
उनके गीत सुनकर मुर्दे भी जी उठते थे -	३६
क्रान्तिवीर बरजोर सिंह -	३७
मलयेशिया जहां शिकायत करने वाले .... - *जवाहरलाल कौल*	३८
दयानन्द संस्थान के सहयोगी : उत्तम चन्द इसराणी -*राकेश रानी*	४०
वेद संबंधी प्रश्नोत्तर - अरविन्द मोहन वेदशीर्ष	४१
पर्यावरण की रक्षा आर्थिक विकास का अनिवार्य तत्व- वेदप्रकाश सिंह	४३
स्वास्थ्य चर्चा : गाजर खाएं, कैंसर भगाएं -*करमचन्द*	४५
रोग निवारक है देवनागिरी लिपि के स्वर -	४६
एक साधे सब सधे - *भद्रसेन*	४७
महिला-जगत : हरे चने के जायके -	४८
बाल जगत : सादगी के प्रतीक राजेन्द्र प्रसाद - *डा. राष्ट्र बन्दु*	४९
अजमेर में भव्य ऋषि मेला	५२
समाचार-दर्शन	५३

परिणाम का निर्धारण होना चाहिए।

यह तथ्य स्मरणीय है कि वैदिक संस्कृति में विकास की कल्पना अथवा परम वैभव का जो स्वरूप है, वह केवल भौतिक नहीं है, उसमें मानसिक समृद्धि भी समाहित रही है। श्री के साथ विजय का भाव भी इसमें समाहित है। क्या कोई इस तथ्य की अनदेखी कर सकता है कि जनगण के मन में विजय की उत्कृष्ट अभिलाषा-फिर चाहे क्रीड़ा स्थली हो या रणभूमि। भारत की जीत की आकांक्षा है। हमारी संसद ने सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित किया कि हम गुलाम कश्मीर को भी भारत में जोड़ेंगे। प्रत्येक राष्ट्रभक्त को प्रतीक्षा है कि ऐसा कब होगा? कश्मीर समस्या बस इतनी ही तो हैं।

प्रत्येक को अपनी प्रतिभा की पूर्ण अभिव्यक्ति का अवसर मिले हमें ऐसा तन्त्र चाहिए। तभी हमारा राष्ट्र सर्वे भवन्तु सुखिनः (सभी सुखी हों) और विश्व बंधुत्व के अपने महान उद्देश्य को प्राप्त कर सकेगा। सबल सशक्त भारत साम्राज्यवाद का प्रसारक नहीं होगा, महाशक्ति के रूप में विश्व मंच पर अंकित होकर निर्धन देशों का शोषण नहीं करेगा। प्रश्न उपस्थित है कि हम नव जागरण की इस कल्पना के अनुसार चले हैं क्या? ऐसा लगता तो नहीं है। हां, यह मानना होगा कि हम भी आज दुनिया का जो चलन है, उसी का अनुगमन कर रहे प्रतीत होते हैं। हंमे ध्यान देना होगा कि क्या आर्थिक, वैज्ञानिक, व्यावसायिक क्षेत्र तथा राष्ट्र की सुरक्षा के प्रसंग में भी अपने समग्र देश, अपने राष्ट्र उसकी प्रगति, मूल आकांक्षा और आवश्यकता के अनुसार हमारी नीतियां बनी हैं? क्या इस आधार पर आधारित है हमारी विदेश नीति? समग्रता में और मूलभूत विचार करके नीतियों का अपनी आवश्यकता के अनुसार निर्धारण ही समय की मांग है। संसार के देश आज भले ही एक दूसरे के निकट आ रहे हैं, इस कथन में भी सार है परन्तु इस तथ्य की भी तो अनदेखी नहीं कि जा सकती कि हर इंसान अपनी पहचान के गौरव के आधार पर जीवन जीना चाहता है। यह स्वाभाविक ही है, क्योंकि बिना चेहरे के तो आप इंसान की कल्पना भी नहीं कर सकते। विश्व में आज भी विकसित देश हैं, विकासशील देश हैं, उनकी अपनी स्थितियां हैं। कुछ देश आज महाशक्ति हैं तो ऐसे भी हैं जो किसी गिनती में नहीं आते। मात्र अपना देश भारत ही अपवाद है। हम राष्ट्र हैं तो हमारी पहचान क्या है? हम कौन हैं? लोगों की इसकी पहचान नहीं और यदि है भी तो उसे बताने में हम सकुचाते हैं। उसे व्यक्त करने वालों को अपने स्वार्थ के कारण दबाया जाता है। लोग नाम लेते भी कतराते हैं। इतना ही नहीं अपितु स्वदेश की संस्कृति ने जिन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिष्ठित किया है, उनके अस्तित्व पर भी इस सांस्कृतिक परिवार में जन्में 'सपूत' ही प्रश्न चिन्ह लगाते हुए नही सकुचाते।

काल प्रवाह की मांग है कि हम अपनी पहचान पर गर्व जनगण में जगाएं यह विश्वास कि भारत हिन्दू राष्ट्र है और हिन्दुत्व कोई संकीर्ण चिन्तन नहीं। वेद प्रतिपादित जीवन मूल्यों के आधार पर ही इस राष्ट्र का और इसके माध्यम से समग्र विश्व का, मानवता का उत्थान होगा क्योंकि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' ही इस देश की संस्कृति का मूल मन्त्र है। 'सर्वेपि सुखिनः संतु' सर्वे सन्तु निरामया ही इस चिन्तन का मूल स्वर है।

पढ़िए दीवार पर लिखा सच

–सूर्यकान्त बाली

जरा सोचिए तो कि गुजरात के अति लोकप्रिय मुख्यमंत्री और भाजपा तथा हिन्दू विचारधारा का भविष्य बनकर उभरे नरेन्द्र मोदी ने इन विधानसभा चुनावों में किसे हराया है : कांग्रेस, वामपंथी, इस्लामी कट्टरपंथी, मीडिया, भाजपा के असंतुष्ट नेताओं की जमात, मोदी से नाराज विश्व हिन्दू परिषद और मोदी से उदासीन आरएसएस? हमने इस आलेख के पहले ही वाक्य में नरेन्द्र मोदी के साथ दो विशेषण बताए हैं। एक, कि वे गुजरात के अति लोकप्रिय मुख्यमंत्री हैं और दो, कि वे भाजपा तथा हिन्दू विचारधारा का भविष्य बनकर उभरे हैं। शुरू में ही बता देना ठीक रहेगा कि ये विशेषण हमारे दिए हुए नहीं हैं। हम ये दोनों विशेषण नरेन्द्र मोदी के नाम के साथ जोड़ना चाहेंगे या नहीं, इसका कोई महत्व भी नहीं है। जाने-अनजाने ये दोनों विशेषण उन ताकतों ने दिए हैं जो, एक दूसरे के साथ सहमत न होते हुए भी, एक दूसरे को पछाड़ने की इच्छा रखते हुए भी और वैसी कोशिशें करते हुए भी नरेन्द्र मोदी को इन विधानसभा चुनावों में हराने के लिए हमसफर बन गए थे।

इन चुनावों में नरेन्द्र मोदी को 'मौत का सौदागर' कहा गया। ऐसा कहना गलत था, यह बात तो चुनाव आयोग ने भी मान ली है। पर उस कथित 'मौत के सौदागर' को गुजरात की जनता ने, जिसमें हिन्दू भी शामिल हैं और मुसलमान भी, एक बार फिर गुजरात के नायक का ताज पूरी इज्जत और शिद्दत से पहनाया है, यानी जता दिया है कि अपने सबसे लोकप्रिय नेता के खिलाफ वे ऐसी घटिया बात सहन नहीं करेंगे।

उधर कांग्रेस के केन्द्रीय नेताओं को यह कहने की क्या जरूरत थी कि गुजरात के विकास के बारे में मोदी सरकार जो दावे कर रही है, वे झूठे हैं? विकास कोई ऐसी चीज नहीं होती कि जिसका ढोल पीटा जाए। होता है तो लोग उसे अनुभव करते हैं, जैसा गुजरात के लोगों ने अनुभव किया। अगर विकास न हुआ हो तो भी लोग अनुभव करते हैं और गलत दावा करने वाले को वैसे ही हड़का देते हैं जैसे पिछले लोकसभा चुनावों में लोगों ने एनडीए को हड़का दिया था। यानी मोदी 'मौत के सौदागर' नहीं हैं, विकास का उनका दावा झूठा नहीं है, कांग्रेस को यह सीधा-सीधा संदेश देकर गुजरात की जनता ने नरेन्द्र मोदी को अपना अति लोकप्रिय नेता मान लिया है, इस स्थापना का श्रेय हम या आप नहीं ले सकते, क्योंकि कांग्रेस की शीर्ष टीम ने ही यह स्थापना कर अपनी कमजोर राजनीतिक सूझबूझ का परिचय दे दिया है। और इस शीर्ष कांग्रेस टीम की यह कमजोर सूझबूझ मोदी के पक्ष में गई।

हमें कांग्रेस की इस शीर्ष टीम से कोई शिकायत नहीं। भारत के व्यक्तित्व और भारत की महत्वाकांक्षाओं की जितनी समझ उन्हें है, वे उससे आगे जाकर कुछ भी सोच-बोल-कर ही नहीं सकते। पर हमारे मीडिया के साथियों को क्या हो गया था? उनकी उंगली तो देश की नब्ज पर रहती है। वे क्यों अनजाने में या गफलत में 'मौत के सौदागर' और 'विकास के झूठे दावे' जैसी मानसिकता का शिकार होकर, नरेन्द्र मोदी के खिलाफ लामबन्द हो गए? वे तो अपने देश के लगातार परिपक्व और खूबसूरत हो रहे लोकतन्त्र का चौथा खम्भा हैं। वे क्यों गुजरात में हुए इस चुनावी महाभारत में एक पार्टी बन गए? अगर गुजरात की जनता एक बार नहीं, तीन-तीन बार एक विचारधारा, उनकी प्रतिनिधि एक पार्टी और उस पार्टी के एक नेता को अपना समर्थन डंके की चोट पर देती है, तो क्या लोकतंत्र का तकाजा नहीं है कि उसका चौथा खम्भा, यानी सबसे मजबूत खम्भा, लोक के द्वारा, जनसामान्य के द्वारा अनुमोदित-समर्थित उन विचारधारा, उस पार्टी और उस नेता के बारे में लोकतंत्री मानसिकता बनाकर सोचे, न कि किसी एक पार्टी या हिन्दू विरोधी विचारधारा का डर बना नजर आए।

हम ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि अगर भारत नामक देश की चौरासी पचासी प्रतिशत आबादी हिन्दू है, जो कि है, तो इस देश का मानस, इस देश की शक्ल, इस देश का वर्तमान और इस देश का भविष्य, इन्हें बनाने में इस आबादी की भूमिका निर्णायक रहने वाली है। यही लोकतंत्र का तकाजा है और इसी लोकतंत्री तकाजे की इज्जत करने की आदत मीडिया को डालनी चाहिए। इतनी बड़ी आबादी जो करेगी, उसकी सोच को आप हिन्दू सोच कहें, हिन्दूवाद कहें, हिन्दू धर्म कहें, हिन्दुत्व कहें, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आज की राजनीतिक शब्दावली में स्वीकृत शब्द हिन्दुत्व को ही अगर इस पचासी प्रतिशत आबादी के विचार और कर्म का प्रतिनिधि मान लिया जाए तो खुद को लोकतंत्र का सबसे बड़ा पैरोकार मानने वाले मीडिया का, यानी प्रेस, टीवी, फिल्म, थियेटर, कला, साहित्य आदि का क्या फर्ज बनता है? इस हिन्दुत्व की पड़ताल करना, उसे समझना और उसे संवारना या कि उसे नकारना, गरियाना और उसकी पीठ में छुरा घोंपना? हर लोकसभा और विधानसभा चुनाव में पूरा का पूरा मीडिया खम ठोककर हिन्दुत्व की पीठ में छुरा घोंपता नजर आता है। इस बार के गुजरात चुनाव में तो इस चौथे खम्भे ने सारी हदें पार कर दीं। लेकिन भाजपा और मोदी की जबर्दस्त जीत ने मानो मीडिया से कह दिया है कि हिन्दुत्व भारत की दीवार पर लिखा सच है, लोकतंत्र के हर खम्भे को चाहिए कि इसे ठीक से पढ़ ले, वरना लोक की शक्ति उसे लोकतंत्री प्रवाह में एक अप्रासंगिक लहर बनाकर खदेड़ देगी।

(शेष पृष्ठ ३९ पर)

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी

धर्म या अधर्म?

धरती की केवल एक समस्या है, धर्म रहे या अधर्म। अधर्म आकर्षक है, सरल है, इसलिए मनुष्य उस पर चलना आसान समझता है किन्तु इस पर चलने का निश्चित परिणाम दुःख-चिन्ता-कष्ट-क्लेश होता है।

धर्म एक चढ़ाई है, जिस पर चलने में कठिनाई अवश्य है पर यह व्यक्ति को उठाता है, पवित्र बनाता है, शान्ति-सन्तोष प्रदान करता है। धर्म प्रकाश है, प्रेरणा है, गति है, विश्वास है, और है अमरता का सन्देशवाहक।

अधर्म अन्धकार है, पशुता है, शून्यता, अविश्वास और मृत्यु है। इनमें निरन्तर असन्तोष है, प्यास और पथभ्रष्टता है। अधर्म का मार्ग मृत्यु की ओर जाता है। जीवन एक अविरल धारा है, जिसमें गति है, स्नेह-साधना-ममत्व का मिश्रण है। किन्तु धर्म जहां पतवार है अधर्म वहां नाव में छेद का प्रतीक है। झूठ-पाखण्ड-चोरी-व्यभिचार-धोखा-हिंसा सबका जनक अधर्म है। धर्म का उपासक देवता है तो अधर्म का असुराधर्म यदि अमृत है तो अधर्म विषाधर्म यदि गंगा है तो अधर्म गन्दा नाला। धर्म दूध है तो अधर्म शराब।

आज की ही नहीं, धरतीकी शाश्वत आवश्यकता है धर्म की स्थापना। इसी के लिए महापुरुष राम-कृष्ण-दयानन्द समय-समय पर जन्म लेते रहे हैं। इसी के लिए देवता बलिदान देते रहे हैं, शायद मृत्यु का वरण करते रहे हैं।

और आज हमारा संघर्ष भी केवल धर्म की स्थापना के लिए है। अधर्म का तूफान जोरों पर है। प्रायः सभी समय के प्रवाह में बह रहे हैं किन्तु हम इस अधर्म के तूफान के आगे घुटने टेकने के लिए तैयार नहीं, हमें मरना स्वीकार है, पर अधर्म अंगीकार नहीं।

आपको अधर्म की छाया में रहने की स्वतंत्रता है किन्तु यह तो सर्वनाश को स्वीकार करना है। आपका शरीर सदा नहीं रहेगा, फिर इसके मोह के लिए क्यों अपने को अन्धकार में भटकाते हो? यह क्यों भूल जाते हो कि तुम 'शरीर' नहीं हो, तुम 'आत्मा' हो। सौ वर्ष रहने वाले शरीर के लिए अमर आत्मा को क्यों भटकाते हो, शाश्वत आनन्द की प्राप्ति के लिए धर्म को क्यों नहीं अपनाते मेरे प्राण! आज धर्म का शंख फूंकने के लिए शंख भी चाहिए और सुदर्शन चक्र भी। धर्म की स्थापना के लिए प्रत्येक स्तर पर युद्ध करना होगा। यह प्रभु का आदेश है और हम इसी ईश्वर-आज्ञा का पालन कर रहे हैं।

प्रभु पुत्रो, हमारा साथ दो, धर्म की विजय के लिए हमारे साथ आओ। ईश्वर के आदेशों को स्थापित करने के लिए हम तुम्हें बुला रहे हैं- तुम्हें! उन्हें जो प्रभु के भक्त हैं। कर्म करो पवित्र, धर्म स्वयं जीतेगा। साधन जुटाओ, साधना करो, प्रकाश फैलेगा। दुःख दूर होंगे, शान्ति-अमृत बरसेगा, धर्म पर चलो, धर्म पर चलाओ, धर्म को बढ़ाओ-बचाओ।

हम धर्म की रक्षा कर रहे हैं।

आप स्वयं अपना कर्तव्य सोचिए।

पत्थर भी पिछलते हैं

सुना था पत्थर भी पिघलते हैं, १२ वर्ष के बाद घूरे के दिन भी बदलते हैं। पर मैं पिछले ३० वर्षों से देख रहा हूं कि इन्सान भी अपने को बदलने के लिए तैयार नहीं। प्रश्न यह उठता है कि दयानन्द के अनुयायी पत्थर से भी अधिक कठोर मन के क्यों हो चुके हैं कि वे अपने को बदलने को तैयार नहीं। शब्दों से दयानन्द की जय बोलकर वे समझते हैं कि उनका काम पूरा हो गया। पाखंडी दनदनाते बढ़ रहे हैं पर हम मौन हैं। नास्तिकता बढ़े, चिन्ता नहीं, धर्म मिटे, परवाह नहीं, धरती के नक्शे से हमारा निशान मिट जाए, पर हम इतने जिर्लज्ज हो चुके हैं कि पिटते रहने पर भी कहते हैं कि हम जीत रहे हैं। सच और झूठ में से झूठ को चुनकर हम उसके राही बन बैठे हैं, अपने घर में शेर बनकर आत्म-प्रशंसा

में लीन होकर हम अपने हाथों अपनी मौत का सामान जुटा रहे हैं। आंखें होते हुए भी हम देखने को तैयार नहीं, दुनिया की समस्याओं को समझने के लिए हम तैयार नहीं, विश्वविजय का हमारा लक्ष्य अपने घर में भी तो विजयध्वज नहीं फहरा सका।

मैं आशावादी हूं, इसलिए ही तो गालियां, ठोकरें, मुसीबतें खाकर दयानन्द का सपना पूरा करने के लिए युद्ध कर रहा हूं। पर कितने दयानन्द के भक्त ऐसे मिले जिन्होंने इस संघर्ष की राह को ज्वलन्त करने के लिए हाथ बंटाया?

आर्यसमाज़ों को भाषण चाहिएं। नेताओं कों गद्दियां चाहिएं, युवकों को नारे चाहिएं, पर वे दयानन्द के भक्त कहां हैं जिन्हें विजय चाहिए?

कौन करेगा? कौन जलेगा इसलिए कि दयानन्द का सपना पूरा हो? बातें तो आसान हैं, पर काम करने के लिए आदमी कहां से आएं।

रोते हुए भी हँसना हमें आता है। मरते हुए भी जीवन के गीत गाता हूं, इसलिए कि शायद कोई अपना जीवन मेरी झोली में डाल सके। दयानन्द के सपनों में रंग भरने के लिए अपना खून जो रंगों के लिए दे सके।

मेले-उत्सव-आयोजन देखकर लगता है कि कोई दयानन्द की अरथी उठा रहा है। राजनीति के रंग, प्रदर्शनों से पंगा, वर्तमान भविष्य की नींव का पत्थर नहीं बन सकता।

भविष्य के लिए रक्त-मांस-हड्डी शरीर जलाकर ही भवन तैयार हो सकेगा। दयानन्द को अपना कहने वाले युवक क्या वर्तमान से अलग होकर कुछ करने की साध मन में नहीं सजा सकते?

कुछ बोलो तो सही, मन के पट खोलो तो सही, इन पंक्तियों को पढ़ने वालो! अपना मानस टटोलो तो सही-तुम दयानन्द के लिए अपनी आहुति दे सकते हो?

धर्म के लिए दयानन्द ने प्राण दिये थे, हमें भी धर्म के लिए सब कुछ देना होगा। नारे-घोषण-प्रस्ताव-प्रदर्शन कुछ न कर सकेंगे-सत्य है। यह मरने की राह है। जीना है तो मरना होगा-अन्य कोई राह है ही नहीं।

सब कुछ मिट गया।

जो साथ आएं स्वागत-जो दूर रहें स्वागत। मैं जब तक जीवित हूं, कर्म करता रहुंगा। वेदमंदिर-निर्माण का सपना यमुना की बाढ़ के समय का कुचक्र नहीं तोड़ सकेगा।

धरती को वेदमय बनाने के लिए हम आगे बढ़ेंगे। अवैदिक मतों के जाल से मनुष्य को हम मुक्त कराएंगे। सर्वत्र सब धर्मस्थानों पर ओ३म् पताका फहराएंगे।

हम आज एक बार फिर अकेले ही धरती का भाग्य प्रवाह बदलने का व्रत लेते हैं और हमारे बाद क्या होगा की चिन्ता हम छोड़ चुके हैं। जो भी होगा ठीक होगा बस अब तो बढ़ना है। वेद को घर-घर पहुंचाना है। गुरुदेव देव दयानन्द का सपना पूरा करना है।

आप अपना कर्तव्य स्वयं सोचिये, क्या सहयोग दे सकते हो। निर्णय कीजिये, आपका प्यार पाकर हम सब कुछ पा लेंगे। विश्वास कीजिए हम जब तक हैं तब तक हमारी हर सांस सत्य-धर्म-वेद का संगीत गुंजाती रहेगी और अन्तिम क्षणों में भी हम यही कहेंगे, हम जीतेंगे-वयं जयेम।

(जनज्ञान कार्तिक सम्वत् २०३५ से)

दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार अभियान में विगत ४५ वर्षों से सतत प्रयासरत दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव दिनांक १४ से १६ मार्च तक समारोह आयोजित किया जाएगा।

इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ, आर्य महिला सम्मेलन, आर्य युवा सम्मेलन एवम् राष्ट्र जागृति सम्मेलन, कवि सम्मेलन, जनज्ञान पाठक सम्मेलन तो आयोजित होंगे ही साथ ही सप्ताह व्यापी योग शिविर के आयोजन का भी प्रयास किया जा रहा है। योग शिविर में भाग लेने वाले बहन, भाई अपना नाम शीघ्र भेजें।

कार्यक्रम में मार्गदर्शन लेने के लिए देश के प्रसिद्ध जन नेताओं, विचारकों और विद्वत् मनीषियों तथा प्रमुख समाज सेवियों को आमंत्रित किया जा रहा है इस वर्ष भी सामाजिक क्षेत्र में विशिष्ट योगदान करने वाले कुछ प्रमुख सज्जनों का अभिनन्दन भी किया जाएगा।

वार्षिकोत्सव को सफल बनाने में वेद एवम् धर्म तथा राष्ट्रनिष्ठ बहन, भाइयों का तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है।

-स्वामी जगदीश्वरानन्द
आचार्य, दयानन्द संस्थान

जहां न हो वृद्धों का सम्मान वह समाज है धूर समान

देश के अनेक संम्पन्न परिवारों में आज बुजुर्ग उपेक्षित हैं। विगत कुछ दशकों के दौरान तो इस समस्या ने विकराल रूप ले लिया है और बुजुर्गों, वृद्ध माता-पिता की उपेक्षा अनेक सुसम्पन्न परिवारों में व्यथा-कथा का रूप ले चुकी है। अब देश में बुजुर्गों की इस व्यथा से द्रवित होकर संसद में एक विधेयक पारित कर उन लोगों पर लगाम लगाने का प्रयास किया है, जो अपने परिवार के बुजुर्गों द्वारा अपनी हड्डियां गलाकर की गयी कमाई पर स्वयं तो सुख सुविधायुक्त जीवन व्यतीत करते हैं, किन्तु बुजुर्गों को दयनीय हालत में जीने को बाध्य करते हैं।

भारतीय समाज में आ रहे इस विकार को हम अपनी प्रगति का नहीं प्रभाव का परिचायक ही मान सकते हैं। जिस राष्ट्र की संस्कृति का मूल मन्त्र मातृदेवो भव पितृदेवो भव और आचार्य देवो भव है, उसी राष्ट्र में अपने माता-पिता के प्रति उपेक्षा भाव को पतन की पराकाष्ठा ही कहा जा सकता है। वस्तुतः ऐसे परिवार धिक्कार के ही पात्र हैं जिनमें परिवार के वृद्धजन उपेक्षित जीवन जीने को बाध्य हैं। ऐसा व्यवहार करने वाले इस तथ्य से भी आँखें मूंदे हुए हैं कि आज वह युवा हैं कल उन्हें भी काल का प्रवाह उनके बुजुर्गों जैसी अवस्था में पहुंचाएगा। उनकी सन्ताने अपने परिवार में अपने दादा-दादी के प्रति अपने माता-पिता का जो व्यवहार देख रहे हैं, वे क्या अपने माता-पिता के साथ वही व्यवहार नहीं दोहराएंगे। विद्यमान स्थिति में संसद द्वारा पारित उपरोक्त विधेयक निश्चय ही एक सराहनीय कदम है, इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

–विजय गुप्ता, नई दिल्ली

बालकों में बढ़ती यह घातक प्रवृति

राजधानी के समीप स्थित औद्योगिक नगरी के रूप में चर्चित हो रहे गुड़गांव के एक प्रमुख स्कूल में घटित हुई घटना ने हर किसी को आहत किया है। परन्तु कई ऐसे हैं, जो इस घटना को अचरज नहीं मानते। उनकी राय है कि समाज आज जिस द्रुत गति से नैतिक पतन की राह पर बढ़ता जा रहा है, उसके चलते समाज में संवेदनशीलता का भाव अपना अस्तित्व ही खोता जा रहा है। अनुशासन तो बाजार में बिकाऊ वस्तु के समान होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में गुड़गांव के प्रमुख स्कूल में गोलीबारी की घटना अप्रत्याशित या अकल्पनीय नही हैं। शिक्षक से भी अधिक दोषी तो अभिभावक ही है, जो बालकों के पालक और पोषक है। बच्चों को संस्कारित करने का पहला दायित्व भी उन्हीं का है। मगर इस बात को भी भुलाया नहीं जा सकता कि संस्कारित अभिभावक ही अपनी सन्तान को संस्कारवान बना सकते हैं। वस्तुतः अभिभावकों को स्वयं भी संस्कारित बनना होगा। आधुनिकता की अन्धी होड़ में आज सम्पन्न जन अपनी संस्कृति और संस्कारों से विमुख होते जा रहे हैं। उन्हें आत्मचिन्तन करने की आवश्यकता है। तभी वे समस्या के मूल और भूल को पहचान कर अपनी सन्तान को संस्कारवान बनाने में सफल हो सकते हैं।

–ऋषिपाल सिंह, देहरादून (उत्तराखंण्ड)

विद्यमान स्थिति में प्रेरक पंक्तियां

'साहित्य भारती' के वार्षिक काव्य समारोह में हिन्दी कवि सम्मेलन में मंच पर एक लोकप्रिय संज्ञा डॉ. सुनील जोगी ने हास्य-व्यंग्य की कविताओं से जन-अनुरंजन की अपनी व्यवहार विधा से हटकर अपनी सम-सामयिक तथा अरुणवर्णी आक्रोश मुद्रा में दो मुक्तक पढ़े जो इस पत्र के माध्यम से प्रस्तुत हैं इनमें से एक में कवि ने उस भ्रान्त मानसिकता पर प्रहार किया है जो राष्ट्र के आदर्श पुरूष राम के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगाती है:-

दुनिया में कहीं ऐसे पुण्यधाम नहीं हैं
भारत की तरह धर्म के आयाम नहीं हैं
रावण के खानदान के होंगे वो दोस्तो
जो लोग कह रहे हैं यहां राम नहीं हैं।

और उनका दूसरा मुक्तक है, जो गणराज्य दिवस के पावन प्रेरक पर्व पर उन पेशेवर राजनीतिज्ञों के विकृत चिन्तन पर प्रहार है जो अपनी संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त होकर उस ध्वज को ही विसार बैठे हैं, जो हमारी समग्रता का प्रतीक है। जिसे झुकने नहीं देने के लिए मातृभूमि के अनेक लोह लाड़लों ने अपने जीवन प्रसन्नमना समर्पित किए हैं। राष्ट्र विरोधी तत्वों द्वारा तिरंगे ध्वज की आभा को खंडित करने के लिए षड्यन्त्र रचे जा रहे है। इन षड्यन्त्रों के चलते इस ध्वज के तीनो रंगों की प्रतीकात्मकता को भी लांछित किया जा रहा है। डॉ. सुनील ने अपने दूसरे मुक्तक के माध्यम से हर राष्ट्रभक्त को जगाने की चेष्टा की है। मुक्तक प्रस्तुत है-

पानी से भरी हर नदी गंगा तो नहीं है
भागे जो दीप से वो पतंगा तो नहीं है,
माना हमारे देश में झण्डे तो बहुत हैं
लेकिन सभी के दिल में तिरंगा तो नहीं है।

–विजेन्द्र सिंहल, डी.एल.एफ. गुड़गांव (हरियाणा)

मलयेशिया के हिन्दुओं पर मौन?

देश में एक अजीब सा माहौल है। अल्पसंख्यकों पर कोई टीकाटिप्पणी हो जाए तो उसके विरोध के स्वर विश्व भर में गूँज उठते हैं। यहां के सभी राजनीतिक ऐसी किसी भी टिप्पणी के विरोध में मुखर हो उठते हैं परन्तु मलयेशिया में इन दिनों हिन्दुओं पर अत्याचार हो रहे हैं। मगर उनके खिलाफ कोई भी राजनीतिक दल खुलकर स्वर उभारने को तैयार नहीं। खुद को हिन्दुत्व का सबल प्रहरी जताने वाली भारतीय जनता पार्टी ने भी अभी तक अभागे मलयेशियाई हिन्दुओं के दमन उत्पींडन के विरोध में कोई प्रदर्शन नहीं किया। भारत देश में रह रहे मुस्लिम बन्धु जो विदेशों में किसी के द्वारा मुस्लिम मतावलम्बियों को ठेस पहुंचाने वाले किसी कार्टून या चित्र के विरोध में सड़कों पर उमड़ पड़ते हैं। वे भी मलयेशिया के भारतवंशी प्रवासीजन के उत्पीड़न पर मौन हैं।

जहां तक भारत सरकार का सवाल है, उसका अब तक रवैया भी ऐसा ही है कि मानों मलयेशिया में रह रहे भारतवंशी प्रवासियों से उसका दूर से भी कोई सरोकार शायद नहीं ही है। विदेश मन्त्री प्रणव मुखर्जी का इस सिलसिले में दिया गया बयान भी टालने वाला ही लगता है। उनके बयान और भारत सरकार के मलयेशियाई हिन्दुओं के प्रति अपनाए गए रवैये को दृष्टिगत रखते हुए यह सवाल सहसा ही मन में उभार पाता है कि क्या यह वही हैं जो कभी फिलस्तीनी लोगों तथा कभी दक्षिण अफ्रिका देशों के लोगों के पक्ष में आवाज उठाने में आगे आता है।

भारत सरकार ने वहां के हिन्दुओं के संगठन के नेताओं से मुलाकात करना भी जरूरी नहीं समझा। आखिर इस व्यवहार को सरकार की कमजोरी कहा जाए या मलयेशियाई भारतवंशी हिन्दुओं का दुर्भाग्य मानकर सन्तोष कर लिया जाए।

–मदन सिंह, नोएडा (उ.प्र.)

अल्पसंख्यक : एक एक विचार

* विश्व के तथाकथित सर्वश्रेष्ठ संविधान की धारा ३६६ में अल्पसंख्यक शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं किया गया हैं।

** इस अस्पष्टता के कारण स्वार्थी नेताओं में अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की होड़ लगी हुई है जिसके फलस्वरूप धर्म निरपेक्षता में विकृति आ चुकी हैं।

*** संविधान की मूल भावना के अनुसार जनता को धर्म के आधार पर बांटना गलत है।

**** कुछ वर्षों से, सरकारी स्तर पर अल्पसंख्यक अधिकार दिवस मनाया जाने लगा है जबकि संविधान में अल्पसंख्यकों को कई प्रकार के विशेषाधिकार और रियायतें पहले से प्राप्त हैं।

***** फूट डालो और राज करो की नीति के अनुसार ४९ प्रतिशत तक की जनसंख्या वाले समुदाय को भी अल्पसंख्यक माना जा रहा है।

****** अपवाद स्वरूप देश में अल्पसंख्यकों (मुस्लिम, ईसाई) का प्रतिशत १२ से बढ़कर १७ हो गया है।

अतः हम देशहित में मांग करते हैं-

(१) अखिल भारतीय स्तर पर किसी भी समुदाय को अल्पसंख्यक नहीं माना जाए। राज्य पर उसी समुदाय को अल्पसंख्यक माना जाए जिसकी संख्या १० प्रतिशत से अधिक न हो। अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ, आयोग व निगम भंग किए जाएं। उत्तर प्रदेश में केवल ईसाई, पारसी व यहूदियों को ही अल्पसंख्यक माना जाए। अल्पसंख्यक को बढ़ावा देने वाले कार्यों में सहयोग न दिया जाए।

इन्द्रदेव गुलाटी, सावरकर विचार मंच, बुलन्दशहर

परम आदरणीया मातृस्वरूपा पं. राकेश रानी जी सादर चरण वन्दन।

"जनज्ञान" को गत 6 वर्षों से पढ़ते हुए हमारा मन और अंतःकरण निरन्तर पवित्रता और शुद्धता की ओर अग्रसर होता रहा है, शब्द चेतना में अपनी आहुति देने के लिए जो वेदी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखा में बनी एवं उसमें जो अग्नि प्रज्ज्वलित हुई उस अग्निपुंज को और तीव्र करने का समिधा के रूप में जो कार्य आप के साहित्य व जनज्ञान ने किया वन्दनीय, है। वर्तमान में देश विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है, हिन्दुत्वनिष्ठ ताकतों को कमजोर करने का कुचक निरन्तर चल रहा है, ऐसे में हिन्दुसमाज को सजग होकर अपना दायित्व निभाना होगा, परन्तु ऐसा प्रकाश अभी घने मेघों से अच्छादित है। "जन" को जब इसका "ज्ञान" हो जायेगा तभी यह अज्ञान का तिमिर समाप्त होगा। १८५७ की क्रान्ति के १५० वर्ष बाद, भगतसिंह चन्द्रशेखर आजाद, पं. गुरुजी आदि महामानवों के जन्म के १०० वर्ष बाद भी फिर कोई महारानी लक्ष्मी बाई, भगत सिंह, आजाद, आदि इस आजाद भारत की माटी में नही जन्में, यह काल की बिडम्बना एवं हमारा दुर्भाग्य है। देव दयानन्द कृपा करें, यही कामना है। राखी के प्रतिस्वरूप ११००/- रु. का वार्षिक आजीवन सदस्यता शुल्क प्रेषित कर रहा हूं, स्वीकार करे एवं किसी प्रकार की त्रुटि को क्षमा करें, यही कामना है। बन्देमातरम्।
आपका चरणानुरागी- भूराराम चौधरी एवं नरेश जे. नन्दवाना "क्रान्ति", जिला संयोजक "बजरंग दल"

भूराराम चौधरी, जयभारत जनरल स्टोर्स, सरदार भगतसिंह मार्ग, श्री वांकलमाताजी चौराया, ग्रा.+पो. नाडोल, जिला-पाली (राजस्थान)

वेदों में विज्ञान

–आचार्य डॉ.विशुद्धानन्द मिश्रा

वेद आर्य सभ्यता और संस्कृति का मूलाधार है। वेद समग्र आर्य वाङ्मय का प्राण है। ज्ञान और विज्ञान का उज्ज्वल धाम है। वेद ब्रह्म वाणी का गान और रणाङ्गण का विहाग भी हैं। वेद में आदि भौतिक उन्नति की चरम सीमा है, आदि दैविक अभ्युदय की पराकाष्ठा है और आध्यात्मिक उन्नयन का चूडान्त रूप है। साधारणतया वेदों के विषय में आधुनिक विद्वानों की धारणा बन गई है कि वेद मन्त्र केवल यज्ञात्मक कर्मकाण्ड के ग्रन्थ हैं। परन्तु वेद के विषय में विधिशास्त्र, मनु स्मृति आदि के प्रणेता महाराज मनु का साहित्यिक उद्घोष यह है कि-

"भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात् प्रसिध्यति।
सैनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्व भूसयाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति।।"

अर्थात् अतीत, वर्तमान और भविष्य का जितना ज्ञान-विज्ञान है, उसे वेदविद् जानता है, सेनापतित्व, राज्य संचालन, दण्डनीति तथा भूगोल और खगोल के समस्त पदार्थों पर वेदज्ञ आधिपत्य रखता है। वेदों में कितना विज्ञान अथवा कला कौशल भरा पड़ा है, इस सबका अनुशीलन वैदिक विद्वानों ने बड़े-विस्तार से किया है। आर्य हिन्दुओं के समग्र वाङ्मय के विस्तार का मूल तो वेद ही हैं। इसीलिए तो महर्षि वेदव्यास को लिखना पड़ा- **"इतिहासपुराणाश्यां वेद समुपवृंहयेत्।"** अर्थात् इतिहास और पुराण विद्या के द्वारा वेद की व्याख्या और सम्प्रस्तुति करें। संस्कृत विद्वान डॉ. सम्पूर्णानन्द ने लिखा है कि समस्त भगवद्गीता यजुर्वेद के 'ईशावास्यमिदं सर्वम्' तथा 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि' इन दो ही मन्त्रों की विशद व्याख्या है।

प्रकृत विषय को हम यहां संक्षेप में ही प्रस्तुत कर पायेंगे कि वेदों में इस भौतिक विज्ञान का बड़ा स्पष्ट वर्णन आता है। आज ज्ञान के आदि स्रोत वेद हमारे विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों के पाठ्य विषयों में अत्यन्त उपेक्षित हैं, जबकि प्राच्यातिप्राच्य काल में ऋषि और महर्षियों ने वेद से ही समस्त विद्याओं का आविष्कार किया था।

आज जब कि विद्या शत्रु विदेशियों द्वारा हमारे महार्घ-पुस्तकालयों से वर्षों तक हमाम गरम किए जाते रहे। हमारी प्राचीन समस्त ग्रन्थ राशि विनष्ट कर दी गई। साथ ही रामायण और महाभारत आदि ग्रन्थों में अद्भुत आग्नेय और वारुणास्त्र आदि का उपलब्ध वर्णन तो पाश्चात्य विद्वानों को चौंका देने वाला है। आधुनिक खोज में मिला हुआ महर्षि भारद्वाज का 'विमान-शास्त्र' का उपलब्ध वर्णन ही वैज्ञानिकों और आविष्कारों के आश्चर्य का विषय बन गया है। यह एक शाश्वत सिद्धांत है कि किसी भी भौतिकी रचना चाहे वह शस्त्र सम्बन्धी हो, **विमान, जलपोत, शतघ्नी (तोप) भुशुण्डी (बन्दूक) अथवा भवन आदि की हो।** प्रथम वह मस्तिष्क में रूप रेखा में आती है, पुनः उसके लिए तत्सम भाव व्यंजक शब्द जुटाए जाते हैं, पश्चात् वह आविष्कार दृश्यमान रूप में आता है।

फलतः यह बात सिद्ध है कि **व्योम यान, जलयान, कृत्रिम वृष्टि कराना, कृत्रिम टाँग लगाना, अन्धों को नेत्र देना, वृद्ध को तरुण बनाना, अभिलाषित सन्तान उत्पन्न करना आदि समस्त विद्याएँ वेद मन्त्रों में वर्णित हैं"** इसीलिए इस युग के वेदोद्धारक महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा था-

'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सभी आर्यों, हिन्दुओं का परम धर्म है।

मुझे सुसंगत लग रहा है कि उक्त वैज्ञानिक विषयों को विहंगम दृष्टि से वेदोद्धरण देकर सप्रयास पुष्ट किया जाए। अतः यहां उनका विवण प्रस्तुत है- व्योमदान-वेदों में आकाश में उड़ने का कई स्थानों पर उल्लेख आया है। **ऋग्वेद में एक ऐसे रथ का वर्णन किया गया है जिसमें न घोड़ा है और न लगाम है पर जो नियंत्रित रूप से तीन पहियों पर पृथ्वी पर चलता है और आकाश भ्रमण करता है।**

**"ओ३म् अनश्वो जातो अनभीशुरुक्थ्यो
रथस्त्रि चक्रः परि वर्ज्ञते रजः।'**

एक अन्य स्थान पर सैनिकों को प्रेरणा दी गई है कि तुम ऐसे व्योम यानों पर स्थित होकर पक्षियों के समान उड़ो, जो विद्युत से चलते हों, जिनके विशाल पंख हों तथा जिनमें शास्त्रास्त्र और खाद्य सामग्री निहित हो-

"ओ३म् आविद्युन्मद्भिर्मरूतः स्वर्कै रथेभिर्यात
ऋष्टिमद्भिरश्वपर्णैः। आ वर्षिष्ठया न इषानयो न
पप्तता सुमायाः।" ऋग्वेद १/८८/१

ऋग्वेद के दशम मण्डल में कपोत (कबूतर) नामक व्योम यान का वर्णन है।

जलयान– जलयान के प्रयोग का उपदेश देने के लिए 'अश्विनौ' द्वारा व्यापारी भुज्यु (पालक) को समुद्र पार ले जाने का एक काल्पनिक वर्णन है।

"ओउम् तुग्रोह भुज्युर्माशियवनोद मेघे- "ऋग् १/११६/३

वृष्टि कराना– "ओउम् अर्ष्टिषेषा: होत्रमृषिर्निषीदन् देवापि देवसुमतिं चिकित्वान् स उत्तरस्माद धरं समुद्रमथो दिव्या असृजद वर्ष्याअथि। ऋग्वेद 10/98/5

शास्त्रास्त्र व सेना से सन्नद्ध राजा का वेद ज्ञाता, देव सत्संगी अर्थ: पुरोहित 'देव सुमति चिकित्यान्' वृषि विद्या को जानता हुआ 'होत्रम् निच्छीदत्' यज्ञ कर्म के लिए बैठकर अन्तरिक्ष समुद्र से इस पृथ्वीस्थ समुद्रके लिए दिव्य वर्षा के जलों को उत्पन्न करता है।

कृत्रिम टाँग लगाना– रात्रि में रणक्षेत्र में युद्ध करते-करते खेल योद्धा की पत्नी विश्यला की टाँग कटकर गिर पड़ी। इस प्रकार पक्षी का पंख टूट कर गिर जाता है। खेल नाम की कल्पना इसलिए की गई है कि जो युद्ध को एक खेल ही समझे। विश्यला का अर्थ होता है प्रजा का पालन करने वाली वीरांगना। **अश्विनी नामक चिकित्सक उसकी टूटी टाँग को बदलकर उसके स्थान पर लोहे की नई टाँग लगा देता है। जिससे वह वीरबाला भली प्रकार सरलता से चल-फिर सकती है।**

"ओ३म् चरित्रं हि बेरि वाच्छेदि परम मात्रा खेलस्य परित्कम्यायाम्। सधो जग मायसीं विश्यलायै।"

ऋ. १/११६/१५

इसी प्रकार अन्य विषयक प्रमाण भी उपलब्ध हैं। वस्तुत: वेद विज्ञान के भण्डार हैं **डॉ. वी.के. वर्मा बिलासपुर (मध्य प्रदेश) निवासी ने अभी-अभी दो खण्डों में वेद में सृष्टि विद्या पर महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं।** विशेष जिज्ञासु उनका अध्ययन करें।

इसी प्रकार वेदों में गणित विद्या, भूकम्प, जल प्लावन, विद्युत कोप, वायु कोप, नीति विद्या, रसायन, धनुर्विद्या, ज्योतिष आदि का विशद वर्णन है। मध्य काल में वेदों पर अश्रद्धा बनाने के लिए नास्तिक, वाममार्गी तथा पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों को 'गडरियों के गीत व **त्रयो वेदस्य कर्तारां भाण्ड धूर्त निशाचरा: अर्थात् वेद के कर्ता भाँड, धूर्त और निशाचर हैं ऐसा प्रचार किया।** परिणामत: जन मानस में शनै:-शनै: वेदों के अध्ययन और अध्यापन के प्रति उपेक्षा तथा निरादर का भाव बढ़ता गया। इस प्रकार वेद के सूर्य रश्मि विज्ञान, गणित विज्ञान, जल विज्ञान, वायु विज्ञान जिससे ऋषियों ने प्रलयाग्नि के समान अग्नि वर्षक आग्नेयास्त्र, बादलों से भी अधिक तेज जल वर्षक वारुणास्त्र, सेना को सुला देने वाले जम्भयास्त्र, सब को उड़ा देने वाले वामव्यास्त्र, पाशुपतस्त्र, अमोघ ब्रह्मास्त्र, पुष्पक विमान और आकाशवाणी दिव्य दृष्टि आदि जैसी अद्‌भुत विद्याएँ लुप्त हो गईं।

प्रसन्नता की बात है कि स्वतन्त्र भारत में अब केन्द्र सरकार की ओर से 'वेद विद्या प्रतिष्ठान जैसे संस्थान इस ओर कुछ ध्यान दे रहे हैं, पर वह अपर्याप्त है। वैदिक विज्ञान के विषय में आचार्य श्री पं. सत्यव्रत स्वामी जी लिखते हैं- वेदों के कतिपय भागों के ही अध्ययन से प्रतीत हो जाता है कि भारत भूमि में कई वैज्ञानिक अन्वेषण इतने गहरे उतर चुके थे जितना कि अमेरिका और यूरोप जैसे देश जो वैज्ञानिक अन्वेषणों में अग्रणी गिने जाते हैं, वे अभी तक वहां नहीं पहुंच सके हैं।

यदि भारत के वे सौभाग्यशाली दिन फिर से कदाचित लौट आवें और परमेश्वर की कृपा से भारत से संसार भर में वेदों का वह अद्‌भुत नाम त्वरित सन्देश प्रसारित हो जावे तो विश्व जनमानस को इस आर्य संस्कृति की छाया में पुन: प्राचीन स्वर्णिम युग की झाँकी के पुण्य दर्शन हो सकेंगे। ***

जनज्ञान के सदस्यों से

जनज्ञान का वार्षिक शुल्क समाप्ति का पत्र मिलते ही शीघ्र वार्षिक शुल्क एक सौ रुपये भेजने का यत्न करें तथा पत्र के साथ संलग्न कार्ड पर उत्तर भी दें।

डाक व्यय बढ़ जाने से वार्षिक शुल्क की वी.पी. भेजने में अब २५ रुपये लगते हैं। अत: मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट अथवा केवल दिल्ली के चैक द्वारा "जनज्ञान" के नाम शुल्क भेजें। **दिल्ली से बाहर के चैक पर बैंक चार्ज लगभग ४० रुपये व्यर्थ पड़ जाता है।**

पत्र व्यवहार में अपना सदस्य नं. ...... अवश्य लिखें तथा कार्ड पर उत्तर भी अवश्य ही देने की कृपा करें। हमारे यहां से भेजे पत्रों में सदस्य नं....आपके पते के साथ लिखा होता है। धन्यवाद

–सम्पादक

दोहे-चौपायी में

शान्ति करण

–देव नारायण भारद्वाज

करें प्रार्थना ओम् की, नित्य मनन मनुहार।
ओंम् हमें सुख शान्ति दें, शक्ति-भक्ति आधार।।
विद्युत अग्नि सुरक्षा द्वारा। विद्युत जल सुख वरे अपारा।।
विद्युत सोम सुओषधि दाता। विद्युत वायु अन्न धन दाता।।
सभी पदारथ ये सुखकारी। दें संयोग शान्ति बलभारी।।१।।
सफल ऐश्वर्य हों सुख दाता। ईश प्रशंसा शान्ति प्रदाता।।
बुद्धि प्रवर धन हो सुखकारी। नियम अटल हों संशयहारी।।
हों विख्यात पुरूष यश वाले। न्यायाधीश कुपथ से टाले।।२।।
वायु सूर्य प्रभु जल आकाशा। सुखदायी हों करें विकासा।।
पृथ्वी सूर्य लोक लोकान्तर। घने मेघ पर्वत प्रस्तान्तर।।
विद्वानों को जहां पुकारें। करें वहीं उपकार हमारे।।३।।
ज्योति बली पावक शुभकारी। प्राण अपान वायु दुखहारी।।
ज्योतित विभा लोक हितकारी। सुखनि सम्मत हो वायु विहारी।।
उत्तम कर्ता कर्म समुत्तम। सुखद सुफल दें हमें महत्तम।।४।।
हों पृथ्वी द्यौ लोक सुखारी। अन्तरिक्ष हो दृष्टि प्रसारी।।
सुखकारी हों वन की औषधियाँ। दूर करें जो सकल व्यधियाँ।।
करें कर्म हम पूर्वज वाले। विविध लोक पति हों सुख वाले।।५।।
विद्युत सम्वत्सर सुख दाता। प्राण संग जो आत्म सुहाता।।
दुष्टों को प्रभु रूद्र रूलावे। विज्ञ आत्म उपदेश सुनावे।।
सूर्य रश्मियाँ हों धनदाता। वरुण मरुत सब हों भय त्राता।।६।।
अन्न सोम हो शान्ति प्रदाता। वेदि ईट प्रस्तर सुखदाता।।
सर्वयज्ञ हों मंगल दाता। हों उपचार निरामय दाता।।७।।
विशद् प्रकाशक देव दिवाकर। सदा करें कल्याण प्रभाकर।।
पर्वत सागर सभी दिशायें। प्राण प्रवण जल सुख वरसायें।।
ईश्वर का उपकार है, यह सारा संसार।
ओम् हमें सुख शान्ति दें, शक्ति, भक्ति आधार।।८।।
अन्नवती हो भूमि सुखारी। मरुत प्राण आन्नद विहारी।।
सूर्य मेघ हों मंगलकारी। भानु लोक हो वायु सुखारी।।९।।
विभा वरद दिनकर सुखदाता। अरुण प्रभात सुमगंल दाता।।
मेघ प्रजा जन मंगलकारी। भवन श्वेत सब हों सुखकारी।।१०।।
हों विद्वान दिव्य सुखदाता। उत्तम विद्या बुद्धि प्रदाता।।
विज्ञ सुसेवक आत्म दर्शी। हों विद्वान प्रचुर उत्कर्षी।।
पानी भूमि वस्तु जग नाना। भरें सदा कल्याण खजाना।।११।।
सुखकारी सत्पति विद्वाना। धेनु अश्व पशु वाहन नाना।।
सुकर श्रमिक शिल्पी कारीगर। हों पितर भाँति सब मंगलकर।।
कर्म कला सहयोग से, हर्ष होय विस्तार।
ओम् हमें सुख शान्ति दें, शक्ति-भक्ति आधार।।१२।।

अंश-अंश संसार विराजा। कृपा करें ईश्वर जग राजा।।
गगन मेघ सागर जल सारे । पार करें जलयान सुखारे।।
दिव्य शक्ति विज्ञान निवासा। सुखद भूमि बहुरूप विकासा।।१३।।
जगदीश्वर अनन्त अविनाशी। हो विद्युत बल भाँति प्रकाशी।।
प्रजा पुत्र गोधन पशु सारें। ईश्वर कृपा से सुख विस्तारें।।१४।।
वायु सुखद सूरज शुभकारी। विद्युत गर्जन हो हितकारी।।
मेघ सहर्ष दृष्टि बरसावें। ईश्वर कृपा दृष्टि सरसावें।।१५।।
दिन हों त्राणवान सुख दाता। निशा शान्ति विश्राम प्रदाता।।
होवे विद्युत अग्नि सुखारी। विद्युत जल हो अन्त प्रसारी।।
विद्युत पृथ्वी मगंलकारी। विद्युत औषध जन हितकारी।।
विद्युत के उपयोग है, अद्भुत अपरम्पार।
ओम् हमे सुख शान्ति दें, शक्ति भक्ति आधार।।१६।।
ईश्वर दें अभीष्ट आनन्दम्। सब कल्याण भरे हों वृन्दम्।।
हो जल वृष्टि सुखद निर्द्वन्दम्। करे शान्ति सुख जो स्वच्छन्दम्।।१७।।
सूर्य लोक हो शान्ति प्रदाता। अन्तरिक्ष हो शान्ति प्रदाता।।
भूमि शान्ति जल शान्ति प्रदाता। औषधियाँ हो शान्ति प्रदाता।।
वृक्ष-वनस्पति शान्ति प्रदाता। विद् विज्ञानी शान्ति प्रदाता।।
ब्रह्म, ज्ञान हो शान्ति प्रदाता। शेष सभी हो शान्ति प्रदाता।।
शान्ति स्वयं हो श्रेय प्रदाता। ऐसी शान्ति हमें दो दाता।।१८।।
पथ दर्शक रवि देव हितैषी। सम्मुख बसते ओम् शुभैषी।।
सौ वर्षों तक देखें तुमको। सौ वर्षों तक जीवें तुमको।।
कहें वर्ष शत सुनें वर्ष शत। स्वस्थ अदीन रहें शत प्रतिशत।।
दैन्य रहित हों शत स्वाधीना। मिले शताधिक आय प्रवीना।।
हृदय वन्दना ओम् की, जीवन का सुखसार।
ओम् हमें सुख शान्ति दें, शक्ति भक्ति आधार।।१९।।
मन दूर विचरता जागृत का। भरपूर भटकता सोबत का।।
दूर-दूर तक जाने वाला। सर्व इन्द्रियों की जो ज्वाला।।
मन मेरा हो मगंल वाला। शिव शोभन संकल्पों वाला।।२०।।
कर्मनिष्ट मेधावी स्वामी। धीर प्रेरणा प्रण अनुगामी।।
करें यज्ञ घन ज्ञान प्रसारें। युक्त व्यक्ति नित मन को वारें।।
देह सर्व में पूज्य विशाला। हो मन शिव संकल्पों वाला।।२१।।
बुद्धि प्रदायक स्मृति दाता। धीरज ज्योति अमर मन दाता।।
जिस बिन होवे काम न कोई। हो मन वर विचार मय सोई।।
मरण रहित रह देह भुआला। हो मन शिव संकल्पों वाला।।२२।।
चिन्तन मनन शक्ति संभावी। वर्तमान् अतीत औ भावी।।
नेत्र नाक कान दो-दो हैं। मुख एक सात ये सोता हैं।।
इनसे जीवन यज्ञ कराता। वह मन हो हमको सुखदाता।।

शेष पृष्ठ १४ पर

वर्तमान काल में आश्रम-व्यवस्था की प्रासंगिकता

–स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

[स्वामी जी महाराज ने अपने संक्षिप्त सारगर्भित लेख में सुग्राह्य शब्दों के माध्यम से विश्व को सन्देश दिया हैं कि वैदिक आश्रम व्यवस्था एक स्वाभाविक सामाजिक प्रक्रिया है। वर्तमान जगत् का कर्तव्य है कि आज की अराजकतापूर्ण सामाजिक परिस्थितियों में प्राचीन आश्रम व्यवस्था को अपनाकर विश्व समाज में शान्ति एवं सद्भावना का सञ्चार करे। केवल प्राचीन होने के नाते इस व्यवस्था की उपेक्षा न की जाय। उपयोगिता के आधार पर इसको देखा- परखा जाये। वेद के आधार पर भारतीय मनीषियों ने लोक-कल्याण की भावना से इस व्यवस्था का अविष्कार किया था, हजारों वर्ष तक भारतीय जनता के इसका अनुसरण करके अपने मानव जीवन को सार्थक किया था। अतः कोई कारण नहीं कि आज भी इसका सुफल प्राप्त न हो। आवश्यकता दृढ संकल्प की है, जहाँ चाह होती है, वहाँ राह भी मिल ही जाती है। आर्य जनता को इस व्यवस्था का सक्रिय पालन करके अग्रणी बनना होगा। -सम्पादक]

किसी भी कार्य को सम्यक् रूप से सुसम्पादित करने की विधा पर कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व ही यदि उस कार्य के सम्पन्न कराने वाले कारणों पर विचार किया जाये और उसके विविध पक्षों की समीक्षा कर प्रारम्भ से कार्य के पूर्ण होने तक कार्य के फलाफल का समीक्षण कर लिया जाये, तो कार्य निर्विघ्न रूप से सम्पन्न होता है। जिस प्रकार कोई भी व्यक्ति यदि किसी भवन का निर्माण कराना चाहता है तो वह वास्तुविशाद के पास जाकर अपनी इच्छा व्यक्त करता है और वास्तुविशाद उसी इच्छानुसार भवन-निर्माण का एक चित्र निर्मित करता है, जिसमें भवन-निर्माण में प्रयुक्त होने वाली सभी प्रकार की आवश्यक सामग्रियों का तथा उसके कर्मकरों का यहाँ तक कि वह कितने समय में पूर्ण होगा, इसका भी सम्यक् आकलन करता है और भवन-निर्माता के समक्ष भवन की सारी रूप-रेखा प्रस्तुत कर देता है। वह यहाँ तक भी बता देता है कि इस-इस प्रकार इन-इन साधनों से निर्मित भवन की आयु कितनी है? प्रारम्भ से अन्त तक की कालावधि तथा उसकी आयु का परिज्ञान भवन-निर्माता को बता देना, यह किसी विशेषज्ञ वास्तुविशारद की विशेषता है और उसकी इस विशेषता का निर्देश पाकर ही निर्मित-भवन निर्माता की अभिकांक्षा को पूर्ण करता है या उसका मनोवाञ्छित भवन निर्मित हो जाता है।

मनुष्य जीवन रूपी भवन के निर्माण के विषय में भी हमारे प्राचीन वैदिक मनीषियों ने प्रारम्भ में ही इस प्रकार का गहन चिन्तन किया और वे यह मानकर चले कि मनुष्य जीवन की आयु सौ वर्ष है-'**शतायुर्वै पुरूषः शतेन्द्रियः** (श०ब्रा०१२.३.१३) तथा वेद प्रार्थना के अनुसार '**पश्येम शरदः शतम्**' (यजुः ३६.२४) को उन्होंने अपने चिन्तन का आधार बनाया। इसका अर्थ यह है कि मनुष्य की पूर्ण आयु सौ वर्ष है तथा सुविधार्थ कार्य की दृष्टि से उन्होंने इसको चार भागों में विभक्त किया- शैशव, यौवन, प्रौढ़ता, वार्द्धक्य। महाकवि कालिदास ने रघुवंशी राजाओं के जीवन-चरित्र का वर्णन करते हुए इसके कार्य का भी स्पष्ट कर दिया हैं-

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्द्धक्ये मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥

अर्थात् शैशव काल में जीवन क्षेत्र में आने वाली विद्याओं का अभ्यास ज्ञान-विज्ञान, यौवनावस्था में गृहस्थ धर्म का पालन, प्रौढ़ावस्था में अर्थात् वार्द्धक्य में राज्य का परित्याग कर वानप्रस्थ का समाश्रयण और अन्त में इन सबका न्यास परित्याग कर योगारूढ़ होकर नश्वर शरीर का परित्याग करना।

नीतिकारों ने इसी बात को दूसरी प्रकार से कहा है-

प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये नार्जितं पुण्यं चतृर्थे किं करिष्यति॥

वास्तव में यह सृष्टि की स्वाभाविक प्रक्रिया है महाभाष्यकार पतञ्जलि एवं यास्काचार्य ने पदार्थों के सम्बन्ध में भी कुछ ऐसा ही कहा है-

षड् भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः।
जायते्‌ अस्ति, वर्द्धते, विपरिणमते, अपक्षीयतयये, विनश्यतीति॥ (निरू० १.१)॥

इस प्रकार से यदि अस्ति और विपरिणमते का समावेश क्रमशः जायते और वर्द्धते में कर दिया जाये तो ये भी चार ही होंगे। इस प्रकार से यह निसर्गसिद्ध अवस्था है। इस अवस्था में व्यवस्था लाने का प्रयास

(उपक्रम) हमारे वैदिक मनीषियों के द्वारा किया गया है, जिसे उन्होने ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम की व्यवस्था के नाम से उद्घोषित किया। इस व्यवस्था का स्वरूप काल्पनिक नहीं है, किन्तु निसर्ग के तुल्य है। तत्वदर्शी महर्षियों के द्वारा निर्मित आगमों तथा ईश्वर की शाश्वतिक वाणी निगमों में भी इसका स्पष्ट समुल्लेख किया गया है। यथा-

ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवेत्, गृही भूत्वा वनी भवेत्। वनी भूत्वा प्रव्रजेत्॥ (श०ब्रा०कां० १४ 'जाबालोपनिषद् खण्ड' ४)।

ब्रह्मचर्य समाप्त कर गृहस्थ होवे, गृहस्थ समाप्त कर वानप्रस्थ तथा वानप्रस्थ आश्रम समाप्त कर संन्यासी होवे।

यदहरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेद् वनाद् वा गृहाद् वा ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजेत्। (अथर्ववेदीय जाबालोपनिषद् खण्ड ४)

जिस दिन वैराग्य होवे उसी दिन घर या वन अर्थात् गृहस्थ से या वानप्रस्थ से अथवा इन दोनों को न करके सीधे ब्रह्मचर्याश्रम से ही संन्यास ले लेवे।

वेदों में **ब्रह्मचर्येण** (अथर्व० ११.५.१६), ब्रह्मचारी (अथर्व० ११.५.१) शब्दों का प्रयोग के द्वारा ब्रह्मचर्याश्रम, **गृहपते** (ऋ०६.१५.१९), **गृहपत्नी** (ऋ.१०.८५.२६) शब्दों के प्रयोग के द्वारा गृहस्थाश्रम तथा **यतयः** (ऋ०८. ६.१८) एवं **विजानतः** (यजुः० ४०.७) शब्दों के प्रयोग के द्वारा वानप्रस्थ एवं संन्यासाश्रम का संकेत प्राप्त होता है।

शतपथ ब्राह्मण में तो एक स्थान पर- लोकैषणायाश्च वितैषणायाश्च पुत्रैषणायाश्च उत्थाय अथ भैक्षचर्य चरन्ति। (श०ब्रा०४.५.२.१)

अर्थात् लोकैषणा एवं पुत्रैषणा का परित्याग कर संन्यास आश्रम का आश्रय लेते हैं। इस प्रकार यह आश्रम परम्परा शास्त्रसम्मत एवं लोकसम्मत व्यावहारिक परम्परा है। एक स्थल पर विद्या की परिपूर्णता का ज्ञापन कराते हुए महर्षि पतञ्जलि ने लिखा है कि-

चतुर्भिश्च प्रकारैर्विद्योपयुक्ता भवति- आगमकालेन स्वाध्यायकालेन प्रवचनकालेन व्यवहारकालेनेति।

इसमें भी लगभग उन चार अवस्थाओं का ही वर्णन किया गया है। इसके द्वारा जीवन को इस रूप में विभक्त किया जा सकता है- **आगमकाल**-विद्या का अर्जन, **स्वाध्यायकाल**- इसका परिवर्धन और संकलन, **प्रवचनकाल**-संकलन का आवण्टन एवं **व्यवहारकाल**- उसका जीवन में साक्षात् प्रयोग।

मनुष्य की जीवन यात्रा सौ वर्ष की मानकर ऋषियों ने इसको चार भागों में विभक्त किया, जिसको हम पड़ाव कह सकते हैं अथार्त् यहाँ रुककर (ठहरकर) वा विश्रामकर अगली यात्रा की पूरी साजसज्जा (तैयारी) करते हैं। आ+श्रम्+घञ्=आङ् उपसर्गपूर्वक '**श्रमु तपसि खेदे च**' धातु '**घञ्**' प्रत्यय करके आश्रम शब्द निष्पन्न होता है। आश्रम शब्द का शाब्दिक अर्थ है- **आश्रम्यन्ति एवं स्वं तपश्चरन्ति यत्र**, जहाँ रुककर मनुष्य अपने भावी जीवन के अभ्युदय के लिए पुरुषार्थ करता है। मेरे विचार से इस आश्रम- व्यवस्था की धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, सामाजिक दृष्टि से, राष्ट्रीय दृष्टि से या यों कहें कि मानवीय (वैश्विक) दृष्टि से अर्थात् विश्व की समस्त मानव जाति के उत्थान की दृष्टि से रचना की गई है। यह आश्रम-व्यवस्था एक सोपान है, जिस पर आरूढ़ होकर मनुष्य अपने अन्तिम लक्ष्य स्वात्मानन्द में अवस्थित हो जाता है, उसको सहजता से प्राप्त कर लेता है। इस आश्रम-व्यवस्था रूपी सोपान परम्परा के द्वारा वह सांसारिक ऐहिक कार्यों को सम्पन्न करता हुआ राग-द्वेष, मोह-ममता का परित्याग कर अशेष प्रपञ्च अपने आत्मस्वरूप में अवस्थित हो जाता है।

सृष्टि में स्वाभाविक रूप से सभी प्राणियों में या सभी स्थलों पर यह प्रक्रिया दिखाई देती है, यद्यपि अरण्य में वृक्ष, वनस्पति, औषधि तथा उसके अनुकूल-प्रतिकूल सभी जीव-जन्तु अवस्थित रहते हैं, किन्तु वहाँ सब कुछ होने पर भी कोई जीव निश्चिन्त एवं निर्भय नहीं है। यहाँ तक कि वृक्ष, वनस्पति, ओषधियाँ वहाँ हैं, किन्तु उनका विकास भी उस प्रकार नहीं हो पाता, जिस प्रकार उद्यान में होता है। कारण स्पष्ट है- अरण्य में सभी वस्तुएँ अवस्थित हैं, व्यवस्थित नहीं। जैसे- वृक्षों का अत्यधिक पार्श्व-पार्श्व एवं अव्यस्थित रूप में होना उनके सर्वांगीण विकास में साधक न होकर बाधक ही होता है। यथासमय उन वृक्षों को जल तथा उर्वरक भी प्राप्त नहीं होता इसीलिए उनको विकास में विलम्ब के साथ अपूर्ण विकास की भी सम्भावना बनी रहती है। दूसरी ओर यदि हम उद्यान की ओर दृष्टिपात करते हैं तो उद्यान के स्वामी के द्वारा विविध वृक्ष, वनस्पति, ओषधियों का यथास्थान आरोपण, प्रत्यारोपण एवं यथाकाल जल-सिञ्चन, उर्वरक एवं उनके विरोधी-तत्वों से उनको सुरक्षा प्रदान की जाती है तथा उसमें रहने वाले सभी प्राणी

निर्भय होकर सुखपूर्वक विचरते हैं। जिस वृक्षादि के विकास के लिए अरण्य में अधिक समय लगता है, उद्यानों में उससे कम समय में ही उन वृक्षों का विकास हो जाता है। इसमें मुख्य कारण है कि जंगलों तथा अरण्यों में से सभी चीजें अवस्थित हैं, व्यवस्थित नहीं। दूसरे शब्दों में इसे हम इस प्रकार कह सकते हैं कि जंगलों में अवस्था है, व्यवस्था नहीं । इस अरण्य व्यवस्था से मुक्त कराकर उद्यान की सुखद, सुरम्य अवस्था प्रदान करना ही आश्रम-व्यवस्था का मुख्य ध्येय है। अब प्रश्न होता है कि क्या यह आश्रम-व्यवस्था वर्तमान काल में भी उतनी ही उपयोगी है, जितनी अपने उद्भव काल में थी? तो हमारा कहना यह है कि वर्तमान समय में मानव जाति की अवस्था सर्वथा आरण्यकी अवस्था से भिन्न नहीं है। इसका प्रत्यक्ष ज्ञान वर्तमान काल की सामाजिक अवस्था को देखने से होता है। नवयुवकों का अनियन्त्रित जीवन, वृद्धों के लिए वृद्धाश्रम तथा शिशुओं के लिए पृथक् स्थान का निर्माण करना आदि हमें यह बता रहे हैं कि वर्तमान अवस्था को व्यवस्था कहना ही अनुचित है। नित्य नये असन्तोष, अशान्ति, विद्रोह इस बात को साक्ष्य प्रदान करते हैं कि इस समय पूर्ववत् या पूर्वकाल की भाँति आश्रम-व्यवस्था का पुनः शुभारम्भ होना चाहिए। जब रोग अधिक बढ़ता है तो उस रोग के उपशमनार्थ रोगी को उचित ओषधि देने का वही उचित काल होता है। रोगी के लिए कल्याणकारी उचित ओषधि को यह कहकर नहीं प्रदान करना कि यह ओषधि तो पुराने युग की है, बुद्धिमता का कोई लक्षण नहीं है। प्राचीन आश्रम-व्यवस्था के अनुसार प्रारम्भिक अवस्था में अर्थात् पच्चीस वर्ष तक बालक को अपनी विद्या तथा भावी जीवन के उत्थान में आने वाली प्रत्येक वस्तु के विकास का पूर्ण सुनियोजित, सुव्यवस्थित, सुरक्षित, सुअवसर प्रदान किया जाता था। उसके चतुर्दिक् विकास के लिए इस प्रकार के परिसर-वातावरण में रखा जाता था, जिससे उसे उस अवस्था की विरोधी शक्तियों का सामना करना पड़े और ऐसी ही सुव्यवस्था वैदिक मनीषियों की भाषा में ब्रह्मचर्य आश्रम-व्यवस्था कही जाती थी। इस प्रकार के गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रम की व्यवस्था भी थी। इस प्रकार की व्यवस्था के कारण सभी उद्यान की भाँति एक-दूसरे के अन्योन्य सहयोगी बने रहते थे। वर्तमान अवस्था में इस आश्रम-व्यवस्था की महती आवश्यकता है। यदि आलस्य, प्रमाद, अज्ञान के कारण पूर्व की कही जाने वाली आश्रम व्यवस्था में कोई दोष आ गया तो इस दोष का परिमार्जन कर उसके अवदात रूप में उसको पुनः सञ्चालित करना चाहिए। प्रतिश्याय होने पर उसका समुचित निदान न कर नाक कटवा देना कोई समुचित उपचार नहीं है।

आक्रान्ता जब आक्रमण करता है तो उसके आक्रमण के प्रभाव को रोकने के लिए उचित उपाय करना ही बुद्धिमानी है। वर्तमान समय सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक अवस्था विरोधी अवस्थाओं से आक्रान्त है, उसकी सुरक्षा का साधन एकमात्र वैदिक मनीषियों द्वारा सुनिश्चित आश्रम-व्यवस्था ही है, दूसरी व्यवस्था नहीं। वृक्ष-संवर्द्धन के लिए उसके मूल में ही उर्वरक, पानी देना उसके विकास में सहयोगी हो सकता है, पतों पर जल-सिञ्चन करना तो क्षणिक लाभदायक प्रतीत होता है।

आज हमें विश्व के पुनरूद्धार के लिए इस आश्रम-व्यवस्था के मूल को जल से सिञ्चित करने के प्रयास में जुट जाना चाहिए। **न्यायः पन्था विद्यतेऽयनाय।**

-गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला झाल, टीकरी, मेरठ।

(पृष्ठ ११ का शेष)

होता के कर्मों की माला। मन भावन संकल्पो वाला।।
हो शुभ संकल्पमय, मन मेरे अधिकार।
ओम् हमें सुख शान्दि दें, शक्ति भक्ति आधार।।२३।।
ऋग्वेद सोम यजुः अथर्वा। सृष्टि सुरथ के पहिये सर्वा।।
इन पहियों की उत्तमनाभी। ज्ञान भक्ति युत कर्म प्रभावी।।
सूत वस्त्र ज्यों व्यापक माला। वह मन मेरा ही सुख वाला।।२४।।
कुशल सारथी रखता कोड़ा। नहीं बहकता मन का घोड़ा।।
चन्चल द्रुत गति हृदय निवासी। मन मेरा हो मंगल राशी।।२५।।
उपजाओ प्रभु सोम प्रकाशा। करो युद्धजन शान्ति विकासा।।
गौ-मानव-राजन कल्याना। औषधि सुख दो लाभ सुजाना।।२६।।
अन्तरिक्ष हो निर्भय कारी। भूमि और रवि लोक सुखारी।।
पीछे-आगे ऊपर-नीचे। हम हर ओर अभय सुख सींचे।।२७।।
मित्र-मण्डली अभय विहारी। करो शत्रु से निर्भयचारी।।
ज्ञात और अज्ञात अभांता। निशि दिन दिशि हो अभय पुनीता।।

माँ पितु भ्राता मीत सब, रहे अभय परिवार।
ओम् हमें सुख शान्ति दें, शक्ति भक्ति आधार।।२८।।

'वरेण्यम्' अवन्तिका-आई,
रामघाट मार्ग, अलीगढ़-२०२००१

वेदों में ज्ञान-विज्ञान कल्पना नहीं अपितु सप्रमाण

–श्री प्रकाश आर्य

प्रस्तुत लेख के लेखक हैं श्री प्रकाश आर्य। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री आर्य गायक और संगीतकार तो हैं ही रचनाधर्मी कवि और लेखक तथा प्रखर वक्ता भी हैं तो पेशे से अधिवक्ता हैं। देव दयानन्द के निष्ठावान अनुगामी श्री प्रकाश आर्य स्वाध्यायी भी हैं। देव दयानन्द ने वेद को सभी सत्य विद्याओं का पुस्तक बताया है। अर्थात् वेद-ज्ञान का भंडार है तो विज्ञान का भी आधार है। प्रस्तुत लेख में भी विद्वान् लेखक ने वेदों में विज्ञान विषय पर सप्रमाण प्रकाश डाला है। लेख पठनीय भी है और मननीय भी। प्राचीन काल में भी विज्ञान की विद्यमानता और महत्ता से सुविज्ञ जन अनभिज्ञ नहीं थे। परम पिता परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद में विज्ञान व भू-गर्भ की जानकारी प्रदान की गयी है। जिसके पठन-पाठन का महर्षि दयानन्द ने आह्वान किया। यह ऐतिहासिक तथ्य भी अब उपलब्ध और सुचर्चित है कि महर्षि दयानन्द के आह्वान से प्रेरित एक युवक ने मुम्बई की चौपाटी पर स्वनिर्मित विमान का सफल प्रदर्शन किया था। तब तक पाश्चात्य जगत् में विमान का निर्माण कर उसका न दर्शन किया था और न ही प्रदर्शन। उस मेधावी युवक ने वेदों में विज्ञान विषय का अध्ययन किया तो उसकी दृष्टि ऋग्वेद के इस मंत्र पर भी पड़ी और गड़ी।

स्वचालित विमान

दो राहितौ वाजिनौ वाजिनीवान्त्रिभि: शतै: सचमानावदिष्ट। यूने समस्मै क्षितयो नमन्तां था श्रुतरदाय मरूतो दुवोया।।

–ऋग्वेद ५.३६.६.

अश्वशक्ति में यन्त्रों की शक्ति का आकलन दो शताब्दी पूर्व तक की गई खोज है, परन्तु वेदों में इसकी व्याख्या मूल रूप से उपलब्ध है।

सूर्य से ऊर्जा की प्राप्ति

सं भानुवा यतते सूर्यस्यानुह्वानो धृतपृष्ठ:स्वञ्चा।
तस्मा अमृधा उषसो व्युच्छान्य इन्द्राय सुनवामेत्याह।।

इस शोध की अनन्त सम्भावनाएं हैं। अब तक किए गए प्रयास सूर्य से प्राप्त हो सकने वाली ऊर्जा के उपयोग की दिशा में शैशवावस्था में ही हैं।

भौतिकी-पदार्थ की तीन दशाएँ

त्रीणि त आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्त: समुद्र। उतेव में वरूणश्छ नस्यर्वन्यत्रा त आहु: परम जनित्रम्।

ऋग्वेद १.१६३.४

दो यह प्रार्थना मन्त्र है–उपमालंकार के रूप में वर्णित है कि अग्नि के तीन स्वरूप है। हे विद्वान् जैसे आपका विद्याजन्म श्रेष्ठ है वैसे मेरा भी हो। इस निवेदन के साथ पदार्थ की तीन दशाओं को दर्शाया गया है और अग्नि कारणीभूत देव है।

स्वत: चालित वाहन यान्त्रिकी

युड्ग्ध्वं ह्यरूषीरथे युड्ग्ध्वं रथेषु रोहित:।
युड्ग्ध्वं हरी अजिरा धुरि वोल्हवे वहिष्ठा धुरि वोलहवे।।

ऋग्वेद ५.५६.३

सूत्र रूप से इस मन्त्र में यह दर्शाया गया है कि अग्नि और वायु की संयुक्त शक्ति उत्पन्न की जाए तथा ऐसे संचालित कर शक्ति की अगली धुरी में प्रेषित कर वाहन को गति दी जाए। स्वत: चालित यन्त्रों के लिए यह मूल मन्त्र है और सभी वाहन इसी आधार पर चलते हैं।

पृथ्वी की गति

अव: परेण पर एनावरेण पदा वत्सं विभ्रति गौरूदस्थात्। सा कद्रीनी कं स्विदर्ध परागात्क्व स्वित्सूते नहि यूथे अन्त:।।

ऋग्वेद १.२६४.१७

पृथ्वी का भ्रमण

अहस्ता यदपदी वर्धत क्षा: शचोभिर्वेद्यानाम्।
शुष्णं परि प्रदक्षिणिद विश्वायवे निषिष्नय:।

ऋग्वेद २०.२२.२४

पृथ्वी सूर्य के आस-पास चक्कर लगाती है इससे यह सिद्ध होता है।

सूर्य और पृथ्वी में आकर्षण

सविता यन्त्रै: पृथिवीमरम्णादस्कम्भने सविता द्यामद्दंहत्। अश्वमिवाधुक्षद् धुनिमन्तरिक्षमतूर्ते बद्धं सविता समुद्रम।।

ऋग्वेद १०.२४८.१

सूर्य रज्जु समान पृथ्वी को बांधता है, अनारम्भ/निराधार आकाश में अपने आस-पास स्थित व टूटने योग्य बंधे हुए ध्वनि करते हुए घोड़े के समान घुमा रहा है।

आग्नेय शस्त्र

इन्द्र सेनां मोहयामित्राणाम्। अग्नेर्वातिस्य भ्राज्या तान् विषयो वि नाशय।। अथर्व० ३.१.५

इस वेदमन्त्र का अर्थ है-शत्रुओं की सेना को

मोहित कर दे और किंकर्तव्यविमूढ़ और आग्नेयास्त्र और वायव्य अस्त्र से उनके सैनिकों को छिन्न कर डाल

अथर्ववेद में इसी प्रकार के अन्य मन्त्र में तमसा और पर्वतेन ताम्रशास्त्र और धूम शस्त्र का भी उल्लेख है।

घर्षण विद्युत

इममु व्यमथर्ववदग्नि मन्थन्ति वेधसः। यमङ्कूयन्तमानयन्नमूंट श्याव्याभ्यः।। —ऋग्वेद ५.३६.६

सिद्ध होत मन्थन किए रात्रि क्रिया संपन्न।
चिन्ह प्राप्ति या अप्रत्यक्ष विद्युत रूपी अग्नि।।
यथा भिन्न जो मूढ़ से, गहते ज्ञान प्रबुद्ध।
अथर्व में मन्थन कहा, घर्षण विद्युत सिद्ध।।

गृह निर्माण

इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूर्थ स्वस्तिमत्।
छर्दिर्यच्छ मघवभ्द्यः मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः।
—ऋग्वेद ६.४६.८

ऐश्वर्यो से युक्त मनुज, हो ऐसा निज वास
तीन धातुओं से बने, त्रय ऋतु हित आदास
विविध सुखों से युक्त गृह धन का व्यय उपयुक्त
शुभ्र प्रकाश जिससे मिले, चिन्ताओं से मुक्त।।

प्रकाश में सात रंग।

बृहस्पतिः प्रथमं जायमानों महो ज्योतिषः परमे प्योमन्।
सप्तास्यस्तुविजातो रवेण वि सप्तरष्मिरमत्तमांसि।।
—ऋग्वेद ४.५०.४

भौतिक विज्ञान में श्वेत रंग को सात रंग का सम्मिश्रण बताया गया है। जिसे संकेत रूप में प्रत्येक रंग के प्रथम आंग्ल अक्षर से दर्शाते हुए शब्द दर्शाया जाता है। ऋग्वेद का उपरोक्त मन्त्र वर्तमान विज्ञान की इस खोज को करोड़ों वर्ष पूर्व से देवभाषा संस्कृत में संजोए हुए है, आवश्यकता है कि आज हम विज्ञान के विभिन्न आयामों को वेद के माध्यम से जाने, जिनकी खोज अभी संसार के समक्ष आनी शेष है।

पृथ्वी की गति से दिन-रात

कतरा पूर्वा तकरापरायोः कथा जाते कवयः को विवेद।
विध्वंत्मना विभूतो युद्ध नाम वि वर्तते अहनी चक्रियेव।। ऋग्वेद० १.१८५.१

पृथ्वी की गति से ही दिन-रात सम्पन्न होते हैं और समयचक्र गतिमान रहता है।

अन्तरिक्ष में आवास संकेत

देवइन्द्रो नराष सस्त्रिवरूथः सरस्वत्यष्विभ्यामीयते रथः। रैतो न रूपममृतंज नित्रमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि व सुवने वसुधेयस्क व्यन्तुयज।। —यजु० २१.५५

यजुर्वेद के इस मन्त्र में भूमि के नीचे, भूमि पर और अन्तरिक्ष में आवास संकेत को कितना स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।

वस्त्रों की बुनाई प्रौद्योगिकी

तन्त्रमेके युवती विरुपे अम्याक्रामं वयतः षण्मयखम्।
प्रान्या तर्न्तूस्तिरते धत्ते अन्या नाप वृज्जाते गमातो अन्तम्।।

इस वेद मन्त्र में दिवस प्रभा व रजनी की युवती की संज्ञा प्रदान की है जो कालरूप वस्त्र बुनने का कार्य कर रही है। छः ऋतुएं बनने के यन्त्र (करघे) की खूंटिया और संवत्सर की खड्डी बताया गया है। एक ओर जहां अनन्तकाल वर्णन इस मन्त्र में किया गया है वहीं दूसरी ओर मनुष्यों को वस्त्र बुनने के यन्त्र की खूंटियों खड्डी आदि भागों का ज्ञान व बुनने की क्रिया और युवतियाँ द्वारा बुनने के मुख्य कार्य की ओर इंगित किया गया है।

वेद मे नलकूप

उर्ध्वं नुनुद्रेवतं त ओजसा दादृहाणं चिद्बिभिदुर्वि पर्वतम्।
धमन्तो वाणं मरूतः सुदानवो मदे सोमस्य रण्यानि चकिरे।।
ऋ १.८५.१०

इस वेद मन्त्र में जलराशि को ऊपर उठाने के सम्बन्ध में हैण्डपम्प नलकूप जैसे यन्त्र की कल्पना की गयी है।

नलकूप

सिंचन्ति नमसावतमुच्चा चक्रं परिज्मानम्।
नीचीनबरमक्षितम्।।

इस मन्त्र में भी भूमि के नीचे जल और ऊपर चक्र के माध्यम से नीचे एकत्रित जल को ऊपर लाने का उपाय अर्थात् नलकूप (ट्यूवबेल) के बारे में बताया गया है।

आज पृथ्वी का जल स्तर गिरता जा रहा है। कुछ भागों में तो ५०० से ३०० फुट गहराई तक जल बोरिंग भूखनन कराने पर भी प्राप्त नहीं हो पर रहा है। भूगर्भ विशेषज्ञ इसे अत्यधिक मात्रा में पृथ्वी से जल प्राप्त करने का परिणाम भी मानते हैं, किन्तु अत्यधिक खनन हो अन्यथा परिणाम ठीक नहीं है। यह चेतावनी भी एक वेदमन्त्र में पहले से ही दी गयी है।

दत्ते भूमे विखनाभि क्षिप्रं तदपि रोहतु।
ऋग्वेद १२.१.३५

इस वेदमन्त्र का अर्थ है किन्तु हमारा खनन कार्य सीमा को पार न करे अन्यथा भूगर्भ स्थित मूल्यवान पदार्थ एक वार ही समाप्त हो जाएंगे।

वेदों के शत्रु कौन?

—महात्मा रामचन्द्र शर्मा वीर

महात्मा रामचन्द्र वीर शतायु महापुरुष हैं । हिन्दू समाज की एकता के महान अभियान के वे निष्ठावान पुरोधा रहे हैं। समाज में व्याप्त बलि प्रथा, अस्पृश्यता आदि कुरीतियों पर प्रहार करने वाले वे ऐसे महावीर हैं जिन्होंने आसेतु हिमाचल समग्र हिन्दुस्तान में अपने दीर्घकालीन अनशनो से इस मानव कल्याणकारी और राष्ट्रहितकारी संघर्ष को गतिमान किया । उनकी मान्यता रही है कि वेद परम परमात्मा की कल्याणी वाणी हैं। हिन्दू धर्म के नाम से सम्बोधित व्यवस्था का प्राचीन नाम वैदिक धर्म है, यह उनकी सुस्पष्ट मान्यता है। वेदों की विकृत व्याख्या करने वाले भाष्यकारों के वे प्रखर आलोचक हैं। निश्चय ही उनकी निष्ठा प्रतिभाओं के प्रति रही है, किन्तु वे मठाधीशों के मन्दिरों पर एकाधिकार तथा उनमें से अनेक के मर्यादाहीन व्यवहार के प्रखर आलोचक भी रहे हैं। प्रस्तुत लेख में उन्होंने वेदों की महत्ता का प्रतिपादन तो किया ही है साथ ही उन्होंने यह भी मुक्त कंठ से स्वीकार किया है कि इस युग में वेदों के सत्यार्थ को संसार के समक्ष लाने का श्रेय आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द को ही प्राप्त है। दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित चारों वेदों का हिन्दी भाषाभाष्य के प्रकाशन और प्रसार अभियान को उनका शुभाशीष प्राप्त रहा है।

जिसे अब हिन्दू धर्म कहा जाता है उसका प्राचीन नाम वैदिक धर्म है। वेदों के सिद्धान्तानुसार इस धर्म के सभी नियम स्थिर किए गए है, वह वैदिक धर्म विश्व का आदि और सनातन धर्म है। इस वैदिक धर्म के अन्तर्गत जैन, बौद्ध, वैष्णव, शैव, शाक्त आदि समस्त पवित्र मत हैं, यद्यपि जैन मतावलम्बी अपने को वैदिक नहीं कहते, किन्तु यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि जैनों का प्रत्येक सिद्धान्त वेदों के सिद्धान्तों के अनुकूल है।

वाम मार्गियों ने जब देवी-देवताओं के समक्ष पशुओं के वध को प्रचलित कर दिया और समस्त धर्म पुस्तकों में अश्वमेध, नरमेध, गोमेध और अजमेध के कल्पित विधान समाविष्ट करके अपने पापाचार को धर्म का रूप दे दिया और बार-बार वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति, जैसे दुष्टतापूर्ण कुवाक्य सुनाने लगे, तब जैन मतावलम्बियों ने आवेश में आकर स्पस्ष्ट रूप से वेदों के विरुद्ध विद्रोह किया।

समस्त संसार के पुराविदों ने यह स्वीकार कर लिया है कि संसार का सबसे पुरातन धर्म ग्रन्थ वेद ही है। जर्मनी ने तो वेदों के मंत्रों से विज्ञान के अनेक आविष्कार भी कर डाले। अंग्रेजों और अमेरिकनों ने भी वेदों का आदर किया है, फिर वैदिक संस्कृति के अनुयायी जैन वेदों के शत्रु कैसे हो सकते थे? किन्तु वाम मार्गियों द्वारा अहिंसां का बार-बार हनन देखकर और वैदिकी हिंसा, 'हिंसा न भवति' के घोष को सुन-सुन कर वे वेद द्रोही बन गए। इस पर नास्तिको वेद निन्दकः बोल-बोलकर अपने जैन बन्धुओं का बहिष्कार कर दिया, और वेदों के समर्थकों को वेदों के प्रति अश्रद्धा हो गयी। मेरे मत में जैनों की यह भयंकर भूल थी जो उन्होंने वेदों से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। **ब्राह्मणों ने भी यह आदेश घोषित कर दिया कि हमारे अतिरिक्त कोई वेद न पढ़े। इस प्रकार करोड़ों वैदिकों को अवैदिक बनाने का पाप स्वयं ब्राह्मणों ने ही किया और प्रच्छन्न रूप से वेदों के स्वयं शत्रु बन गए। अनेक पुराणों की रचना करके वेद विरोधी विचारों का प्रचार करने लगे, अगणित कल्पित देवताओं की पूजा होने लगी। और संसार के सर्वश्रेष्ठ धर्म-ग्रन्थ वेदों का सूर्य अज्ञान की धाराओं से घिर गया।**

रावण के भाष्य में तो हिंसा का प्रतिपादन था ही, क्योंकि रावण स्वयं चरित्र भ्रष्ट था। और अपने पापाचारों पर आवरण डालने के हित मे ही उसने वेदों का अनर्थ किया था किन्तु **सायण और महीधर ने भी रावण के समान वेद भाष्य रचकर मांसाहार, मदिरापान और व्यभिचार, दुराचार का प्रचार कर दिया।** इस प्रकार परमपिता परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद का अपमान करके आर्य संस्कृति पर पाखंडी दिशाओं ने प्रबल **प्रचण्ड कुठाराघात किया। मैं आर्यसमाजी नहीं हूं और आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती के एक दो विचारों से**

सहमत भी नहीं हूं किन्तु स्वामी दयानन्द ने वेदों के सत्यार्थ को संसार के समक्ष प्रकट किया और अश्वमेध, गौमेध, नरमेध, आदि हिंसात्मक यज्ञों की धारणा का मूलोच्छेद करने के लिए अपने पवित्र विचारों के कुठार का प्रहार किया यह ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा स्वामी जी के वेद भाष्य पढ़ने से ही ज्ञात होता है।

भारत के सात प्रान्तों में गत वर्षों में मैने जो पशुरक्षा का आंदोलन किया था उसमें वेदों के शत्रु तथा कथित वैदिकधर्मियों ने मेरे विरुद्ध जो प्रहार किया, वह मुझे स्मरण रहेगा। महाराष्ट्र के कुरुन्दवाड़ नगर में विजबेड़कर शास्त्री ने संवत् १९८६ में जो राक्षसी यज्ञ किया, वह वेदों के नाम पर खुला पाखण्ड था। इसी प्रकार उसके दो वर्ष उपरान्त सांगली में बासुदेव शास्त्री नातू तथा उनके पुत्र शुकर शास्त्री ने आप्तुदभि यज्ञ करके एक कच्छर्य और ग्यारह बकरों के नाश कर जो घृणित आयोजन किया था और जिसके विरूद्ध 'यज्ञ' को विध्वंस करने के लिए जो आक्रमण तथा २१ दिन का अनशन किया था, वह महाराष्ट्र प्रान्त में चिरस्मरणीय रहेगा। **क्या इस प्रकार के हिंसात्मक राक्षसी यज्ञों का वेद मन्त्रों द्वारा प्रतिपादन करने वाले वेदों के शत्रु नहीं हैं?**

आर्यसमाज के अतिरिक्त श्रद्धेय हरिप्रसाद जी वैदिक मुनि तथा माननीय पंडित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर आदि महानुभावों ने भी वेदों के सुन्दर सत्य-सत्य अर्थ किए हैं, उससे निश्चय ही हिन्दु संस्कृति का कल्याण होगा। **वेदो के शत्रु तो मुझे भी नास्तिक तथा धर्म-द्रोही कहेंगे, किन्तु मैं वेदों की रक्षा के लिए प्राण भी दे सकता हूं।** ❑

वेद मन्दिर की गौशाला : एक आग्रह एक निवेदन

देव दयानन्द के वेद प्रचार के आह्वान् को शिरोधार्य कर दयानन्द संस्थान विगत लगभग पांच दशक से आपके सहयोग-सम्बल के बल पर **''चारों वेदों का हिन्दी भाष्य''** तथा अन्य वैदिक साहित्य अब तक दो लाख से भी अधिक परिवारों में पहुंचाने में सफल रहा है।

महर्षि दयानन्द ने गौ पालन और गौ-रक्षण में प्रवृत्त रहने का भी वैदिक आस्थाओं के प्रति श्रद्धालु जन से आह्वान् किया था। दयानन्द संस्थान ने महर्षि के इस निर्देश के अनुसार महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेदमन्दिर इब्राहीमपुर, दिल्ली में लगभग १५ वर्ष पूर्व एक गौशाला का शुभारम्भ किया था। इस गौशाला में गौओं की संख्या इस समय एक दर्जन हो गई है। इस गौशाला में उत्पादित गौ दुग्ध का वितरण आश्रमवासियों तथा समय-समय पर आने और ठहरने वाले अतिथि गण में किया जाता है।

गौभक्तों एवं उदारमना तथा स्व-संस्कृति के प्रति आस्थावान दानी सज्जन वृन्द से हमारा साग्रह निवेदन है कि संस्थान की गौशाला की गौओं को उत्तम चारा सुलभ कराकर गौ रक्षा के अपने दायित्व के निर्वहन में सहभागी बनें। जो भी सहयोगी जन चारा प्रदान करेंगे उनका यह सहयोग गौशाला के संचालन में भी ठोस योगदान सिद्ध होगा। अतः आपके सहयोग की तुरन्त आवश्यकता है। यदि आप राजधानी से दूरस्थ स्थान के निवासी हैं तो गौओं हेतु अपने योगदान की राशि **''दयानन्द संस्थान''** के नाम ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। दिल्ली के किसी भी बैंक का चैक भी भेज सकते हैं।

दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित गौशाला के संचालन में चारा प्रदान करने वाले गौभक्त के नाम और राशि को 'जनज्ञान' मासिक में भी प्रकाशित किया जाएगा। दानराशि निम्न पते पर प्रेषित करें :-

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

२२८६, आर्यसमाज मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५ फोन : ९८१०२५७२५४

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती *(आचार्य)* **राकेश रानी** *(अध्यक्ष)*

गणतंत्र दिवस के प्रेरक पर्व पर उन पुण्यात्माओं का पुण्य स्मरण

❑ जिन्होंने विदेशी दासता की
शृंखलाओं को काटने के लिए क्रान्तिपथ
का वरण कर अपने जीवन प्रसून
स्वातंत्र्य लक्ष्मी के श्री चरणों में अर्पित किए।

❑❑ जिन्होंने अपने यौवन राष्ट्रभक्ति
के पावन अपराध में कारागारों
की काल कोठरियों में बिताया।

❑❑❑ हाथों में हथकड़ियाँ जिनका
कंगन बनीं और पाँवों में पड़ी बेड़ियाँ आभूषण।

❑❑❑❑ जिन्होंने छत्रपति शिवाजी और
हिन्दुकुल सूर्य महाराणा प्रताप तथा
दशमेश पिता गुरु गोविन्द सिंह
के अपने देश में अपना
राज के संकल्प को पूर्ण करने
के लिए (तेरा वैभव अमर रहे
मां हम दिन चार रहें न रहें) को
अपना जीवन संगीत बनाया।

❑❑❑❑❑ जिन्होंने स्वधर्म, स्वसंस्कृति के पुनरुद्धार एवं
स्वदेश में संप्रभु, स्वतंत्र गणराज्य
की स्थापनार्थ प्रसन्नमना कंटक पथ अपनाया।

–संदीप कुलकर्णी,
कुलकर्णी उत्तर हिन्दुस्थान प्रमुख शिवसेना

भारतीय गणराज्य की सुदृढ़ता और शस्त्रास्त्रबल

–वीर वि.दा. सावरकर

स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर का विदेशी सत्ता के विरुद्ध स्वाधीनता संग्राम में योगदान एक अविस्मरणीय प्रेरक आख्यान है। उन्होंने स्वतन्त्र और सम्प्रभु गणतांत्रिक भारत का सपना अपने नेत्रों में संजोकर क्रांति पथ का वरण किया था और वे इस पथ के अनेक पथिकों के प्रेरणा स्रोत भी रहे थे। उनका यह सौभाग्य रहा कि उन्होंने अपने इस स्वप्न को साकार होते हुए देखा। स्वतन्त्र भारत में २६ जनवरी १९५० को संविधान के तहत अर्थात् २४ जनवरी को उनका एक वक्तव्य प्रकाशित हुआ था, जिसका मुख्य आशय प्रस्तुत है।

"यह घटना ऐतिहासिक एवं गौरवास्पद है कि आगामी २६ जनवरी को अपने स्वाधीन भारतीय गणराज्य की स्थापना का पर्व समारोह आयोजित होगा। अपनी मातृभूमि के प्रति नि:शंक, निष्ठापूर्वक, बिना किसी शर्त तथा मन: पूर्वक प्रेम करने वाला प्रत्येक नागरिक ब्रिटिशों की दासता से अपनी मातृभूमि की विमुक्ति के उपलक्ष्य में होने वाले समारोह में निश्चय ही सहभागी रहेगा। व्यक्तिगत, प्रान्तगत एवम् पक्षगत जो भी छोटी मोटी सामान्य मत विभिन्नता हो उसे भूलते हुए हम सब एक मंच पर सम्मिलित होकर अपनी इस राष्ट्रीय विजय से अखिल विश्व को गरजकर अवगत कराएंगे।

हाँ, अपनी यह विजय अवश्य हीं महान है। साम्राज्यवादी अंग्रेजों को हृदय परिवर्तन होने के कारण वे नितान्त उदारता सहित भारत छोड़ गए हैं, यह मानना पागलपन है। वास्तव में वे अपने आप नहीं चले गए हैं, वस्तुत: हमने उन्हें भारत से बाहर निकाला है। जब रोमन शासक ब्रिटेन को छोड़कर जाने लगे तो उस समय की ब्रिटिश जनता उसके पाँव पकड़कर गिड़गिड़ाने लगी थी कि हमें दान की सत्ता और सागर की गहराई जैसी विपत्ति में छोड़ कर मत जाइएगा। आज हमने उनकी भांति किसी के पांव तो पकड़े ही नहीं उल्टे उनकी दान की सत्ता को सागर की गहराई में डूबो दिया है। ब्रिटिशों का यदि सचमुच हृदय परिवर्तन हुआ होता तो आज भी अफ्रीका के विशाल प्रदेश एवं अन्यत्र बिखरे हुए छोटे मोटे भू प्रदेश वे अपनी सत्ता के तले क्यों दबोचे रखते? वास्तव में तो स्थिति यह है कि १८५७ से छिड़ा भारतीय स्वाधीनता संग्राम विभिन्न प्रकार के मार्गों को अपनाते हुए अविरत चलता ही आया है। अहिंसक सत्याग्रह, असहयोग, उसका एक रूप था तो दूसरा था सशस्त्र प्रतिकार। विगत दो महायुद्धों में हर सशस्त्र प्रतिकार का ब्रिटिशों ने अनुभव किया और अंत में जब भारतीय थल सेना और नौसेना उनके विरोध में खड़ी हो गयी, उसकी (प्रतिरोध) शक्ति अधिकतर मारक सिद्ध हुई तभी ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने धवल (सफेद) ध्वज को दिखाते हुए शरण ले ली और इस देश को छोड़कर वे चले गए। केवल अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के कारण यह होना संभव नहीं था। किन्तु १९२४ एवम् १९४२ में छिड़े रहे महायुद्धों में अपने सशस्त्र क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों के शत्रुओं से सहायता ली। वे देश में शस्त्रास्त्र लाए और भारत में विदेशी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह की पतंग फहराते रहे। बाहर से भी सशस्त्र आक्रमण करके यह स्वाधीनता संग्राम लड़ा गया। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का लाभ उठाने वाला दांव-पेंच भी तो स्वाधीनता संग्राम ही था।

अब शान्ति सहित सत्ताधिष्ठित कोई-कोई खाऊमीत और मतलब के यार जोर-जोर से दावे के साथ कहता है कि "यह क्रान्ति रक्तहीन क्रान्ति है। पापभीरू अंग्रेज इस देश को मानो इसलिए छोड़कर चले गए कि हमारा रक्त न गिरे, इस प्रकार इन देश भक्तों का प्रलाप हटना खरा उतरता है कि उन्होंने स्वतन्त्रता के लिए रक्त की एक बूँद तक नहीं दी है। किन्तु इन्हें छोड़कर समग्र देश की स्थिति को सोचें तो क्या दिखाई देता है? केवल १८५७ के स्वधीनता संग्राम में अपने एक लाख लोग लड़ते-लड़ते काम आए। तदुपरांत विगत ५० वर्षों में पूणे में फांसी चढ़े ... बंधुओं से लेकर लंदन में फाँसी चढ़े ऊधम सिंह तक के अंग्रेजों का रुधिर बहाने वाले सशस्त्र क्रान्तिकारियों ने अपने नव तरुण रुधिर से वधस्तम्भों को अविरल गीला रखा। कूका, वासुदेव बलवंत फडके, गवर कामाग एमारु हौगकांग, सिंगापुर, ब्रह्मदेश आदि विद्रोहों में लिप्त रहे क्रान्तिधर्मियों तथा प्रथम विश्वयुद्ध में जलियावाला बाग में नि:शस्त्र लोगों का गिरा रक्त अमर नेताजी (सुभाष) की स्मृति में आजाद हिन्द सेना द्वारा छेड़े गए संग्राम में और तदनन्तर नौसेना और वायुसेना द्वारा किए गए विद्रोहों में,

अंत में ब्रिटिशों ने कुटिल नीति को अपनाते हुए किए गए देश विभाजन के कारण दोनों पक्षों के लक्षावधि निरपराध लोगों का गिरा-गिराया रक्त, देखो यह सब कुछ और बताओ क्या रुधिर की नदियां बहीं या नही?

इस प्रकार एक दीर्घकालीन तक चले राष्ट्रीय युद्ध को लड़कर यह जो भारतीय गणतन्त्र का आनन्ददायी स्थापना दिवस हम मना रहे हैं। ऐसे अवसर पर हमें निराश नहीं होना चाहिए। हम सभी को निर्षधाई सा लगने वाला यह विभाजन इससे हुए भयानक दु:ख के मारे भी हमें बेवस वृति को तनिक सा भी प्रादुर्भूत नहीं होने देना चाहिए। सर्वस्व छीन लिए जाने पर भी जिस मार्ग से हमने मातृभूमि का पौना प्रदेश स्वाधीन कर लिया है, उसी निश्चय से यदि हम आगे भी संचेष्ट रहेंगे तो उर्वरित चौथाई भू प्रदेश को पाना भी कठिन नहीं। देश का विभाजन यंह आज की वास्तविक घटना है सही, किन्तु अलेग्जेन्दर ने इसी प्रदेश को जीतकर क्या इसी तरह की एक सत्य घटना घटित नहीं की थी? इसके बावजूद इतिहास ही हमें यह भी बता रहा है कि आगे चलकर कुछ वर्षों में ही उसके सेनापति सेल्युकस ने, अपनी सत्ता छोड़ते हुए हमारी प्राकृतिक सीमा हिन्दुकुश तक का सारा भू प्रदेश और अपनी कन्या भी सम्राट चन्द्रगुप्त को अर्पित करते हुए हमारी मित्रता को प्राप्त किया था। इस प्रकार निश्चित हुई घटनाओं को पुनः निश्चित करने वाले हमारे मार्ग हैं। अब हमने जो कुछ पाया है, प्रथमत: उसे सुसंगठित रूप प्रदान कर विदेशी शक्तियों के प्रति 'जैसे को तैसा' नीति का अनुगमन हम करेगे तो हमारे लिए सब कुछ भला ही होगा।

किन्तु केवल स्वाधीनता दिवस को सानन्द मनाते हुए स्वाधीनता प्राप्ति की शेखी बघारते रहकर स्वाधीनता के साथ ही (संभाव्य) बाह्य आक्रमण तथा आन्तरिक अराजकता के कारण उपस्थित चुनौतियों से उसे सुरक्षित रखने के अपने दायित्व एवं कर्त्तव्य को हम विस्मृत न होने दें। सुरक्षा का एक मार्ग है, हमारी बलशाली थल सेना, नौसेना तथा वायुसेना का निर्माण। इसी सदंर्भ में मैं विशेषकर युवकों का आवाह्न करता हूं कि इस प्रेरक दिवस पर वे सहस्त्रों की संख्या में इन सेनाओं में भर्ती होकर अपनी मातृभूमि को सुरक्षित रखने का प्रण करें।

वैदिक चिंतन

परमतत्त्व का दर्शन

–स्वामी वेदानन्द सरस्वती (उत्तरकाशी)

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति। सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति।। यजु:. ४०.६।।

पदार्थ- (य:) जो व्यक्ति (सर्वाणि भूतानि) सब प्राणियों को (आत्मनि) परमात्मा में (एव) ही (अनुपश्यति) अवस्थित देखता है (तु) और (सर्वभूतेषु) सब प्राणियों में (आत्मानम्) उस परमात्मा का ही दर्शन करता है। (तत:) उससे वह (न) नहीं (विचिकित्सति) पुनर्जन्म की कामना करता।

भावार्थ- परमात्मा की उपासना करने वाले साधक को जब उस प्रभु की कृपा से मेधा बुद्धि प्राप्त हो जाती है तो उस (विजानत:) ज्ञानी को सब प्राणिमात्र में वह परमात्मा ही नजर आने लगता है। सब भूत प्राणियों को उसी परमात्मा के अन्दर अवस्थित देखता है। जैसे बालक अपनी माता को गोदी में अपने को सर्वथा सुरक्षित देखता है। उसे न कोई भय होता है न शोक। उसी प्रकार माताओं की माता, वह जगत् का आदि कारण, परमपिता परमात्मा सभी जीवों के बाहर-भीतर विराजमान हो रहा है। वह हमारा परमहितैषी, सुहृत् सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, कल्याणकारी सखा है। वह सब जगह, सब कालों में और सब परिस्थितियों में हमारा हितसाधन ही करता है। उसके सृदृढ़, सुरक्षित हाथों में रहकर कभी किसी अनिष्ट की कल्पना भी नहीं की जा सकती। उस परमतत्त्व के दर्शन से भय, मोह और शोक साधक के जीवन से पलायन कर जाते हैं। साधक के सब संशय दूर हो जाते हैं। प्रभु-दर्शन से उसका अविद्या-अन्धकार दूर भाग जाता है। अब उसे इस जगत् में पुनर्जन्म की कामना भी नहीं रहती। वह देह त्याग कर अमर पद को प्राप्त करता है। हे जगदीश्वर! आप ही कृपा करके हमें ऐसी दृष्टि दीजिए कि जिससे इस सृष्टि में हम सर्वत्र तेरा ही दर्शर करें। सब प्राणियों में आत्मवत् व्यवहार करके तेरी आज्ञा का पालन करें

–स्वामी वेदानन्द सरस्वती (उत्तरकाशी)

वास्तविक पंथनिरपेक्ष गणतन्त्र हेतु

विशेष अधिकार नहीं, समान अधिकार

–न्यायमूर्ति रामा जायस
(पूर्व राज्यपाल, बिहार एवं झारखण्ड)

हमारे संविधान की धारा ३० (१) भाषायी एवं सांप्रदायिक अल्पसंख्यक समुदायों को अपनी पसंद के शैक्षिक संस्थानों की स्थापना एवं उसका संचालन करने का आश्वासन प्रदान करती है। **पंथनिरपेक्षता तथा समानता हमारे संविधान के दो मूलभूत भाव हैं, अतः धारा ३०(१) भाषायी एवं साम्प्रदायिक अल्पसंख्यकों के लिए सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए उसके द्वारा पंथनिरपेक्षता को सुदृढ़ रखने का प्रयास करती है।**

तथापि, ऐसे अधिकारों के उपयोग पर समानता का भाव अवश्य होना चाहिए। अन्य शैक्षिक संस्थानों की तुलना में इस प्रकार के किसी भी शैक्षिक संस्थानों की स्थापना एवं संचालन करने के सन्दर्भ में, अल्पसंख्यकों के विरुद्ध भेदभाव करने वाला कोई भी कानून नहीं बनाया जाना चाहिए। ऐसे किसी भी कानून, या नियम, या नियमन को निरस्त कर देना चाहिए जो अल्पसंख्यकों द्वारा चलाए जाने वाले संस्थानों को अन्यों द्वारा चलाए जाने वाले संस्थानों की तुलना में अ-लाभकारी बनाता है। इसी प्रकार किसी से भी साम्प्रदायिक आधार पर व्यतिरेकी भेदभाव नहीं होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, बहुसंख्यक **तथा अल्पसंख्यक संस्थानों के बीच समान अवधारणा वाला व्यवहार सुनिश्चित करना ही धारा ३० (१) का सार है।** दूसरे की तुलना में किसी एक प्रकार या वर्ग के संस्थान के प्रति अनुदारतापूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहिए। एक अर्थ में, अधिक उदारतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए। **नियमों एवं प्रावधानों समेत देश का कानून बहुसंख्यक संस्थानों तथा अल्पसंख्यक संस्थानों पर समान रूप से लागू होना चाहिए। (परिच्छेद १३८)**

न्यायमूर्ति बरियावा तथा न्यायमूर्ति अशोक भान ने अपने निर्णय में इस पहलू पर इस प्रकार प्रकाश डाला है-'हमें धारा ३० (१) को एक ऐसा अर्थ प्रदान करना चाहिए, जिससे हमारे संविधान के मूलभूत एवं सर्वोच्च तत्व रहे समानता एवं सेक्युलरिज्म को प्रोत्साहन मिल सके। उसकी व्याख्या ऐसी नहीं होनी चाहिए, जिससे आगे चलकर, एक नागरिक तथा दूसरे नागरिक के बीच दरार उत्पन्न हो जाए। (परिच्छेद ४२५)

सर्वोच्च न्यायालय की ग्यारह सदस्यीय संविधान पीठ द्वारा प्रस्तुत उपरोक्त स्पष्ट व्याख्या सभी नागरिकों को समानता का अधिकार प्रदान करने वाली धारा १४ तथा संप्रदाय अथवा भाषा आदि के आधार पर किसी भेदभाव का निषेध करने वाली धारा १५ के अनुरूप ही है। वह संविधान के मूलभूत तत्व रहे सेक्युलरिज्म एवं समानता के प्रावधानों से भी सुसंगत है। साथ ही, संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित न्यायशीलता एवं बंधुता के तत्वों से भी मेल खाती है। **ग्यारह सदस्यीय संविधान पीठ द्वारा उद्घोषित कानून संविधान की धारा १४१ की दृष्टि से समूचे राष्ट्र का कानून बन जाता है। इस महत्वपूर्ण निर्णय के पश्चात 'वोट बैंक राजनीति' का अन्त हो जाना चाहिए था। लेकिन संविधान एवं सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय की उपेक्षा करते हुए खुद को सेकुलर कहने तथा सभी संप्रदायों के बीच बिना किसी भेदभाव के व्यवहार करने की मांग करने वाली वर्तमान सरकार ने इस विषय में अलग ही रास्ता चुना है। वह 'वोट बैंक राजनीति' को कार्यान्वित करने के लिए वैधानिक शक्ति का दुरुपयोग करते हुए निम्न कानून पारित कर रही है-**

(१) अल्पसंख्यक संस्थानों को संलग्नित होने का विशेष अधिकार; तथा (२) केवल अल्पसंख्यक संस्थानों पर ही लागू होनेवाला 'अल्पसंख्यक शैक्षिक संस्थान राष्ट्रीय आयोग अधिनियम-२००४'। इस अधिनियम की धारा १०-अ में स्पष्ट कहा गया है कि अल्पसंख्यक संस्थानों को अनुसूची में उल्लिखित अपनी पसंद के किसी भी विश्वविद्यालय के साथ संलग्न होने का अधिकार होगा। जबकि ऐसा कोई भी लाभ अथवा सुविधा किसी गैर-अल्पसंख्यक शैक्षिक संस्थान को नहीं है।

संसद द्वारा किया गया दूसरा प्रावधान यानी

'१३वां संविधान संशोधन अधिनियम' भी भेदभाव बरतता है। इस अधिनियम के अन्तर्गत धारा १५ में अनुच्छेद (५) का संशोधन किया गया है। उस अनुच्छेद में प्रथम बार, अन्य पिछड़ी जातियों के लिए सरकार से अनुदान प्राप्त निजी व्यावसायिक कॉलेजों में आरक्षण का प्रावधान किया गया है। यदि अन्य पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण राष्ट्र के हित में है तो वह सभी अनुदान प्राप्त निजी कॉलेजों के लिए होना चाहिए था। लेकिन अनुच्छेद (५) के अनुसार अन्य पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण अनुदान प्राप्त करने वाले गैर-अल्पसंख्यक निजी व्यावसायिक कॉलेजों में ही होगा, न कि अनुदान प्राप्त अल्पसंख्यक कॉलेजों में

केन्द्र में सत्तारूढ़ वर्तमान संप्रग सरकार द्वारा पारित ये दोनों अधिनियम प्रथम दृष्टि में ही असंवैधानिक हैं तथा इससे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा घोषित कानून का स्पष्ट उल्लंघन होता है। इसकी पूरी जानकारी होते हुए भी ग्यारह-सदस्यीय संविधान पीठ द्वारा टी.एम.ए. पै के मामले में दिए गए निर्णय के परिच्छेद १३८ के विरोध में उन दोनों को भी अधिनियमित किया गया है। इससे भी बढ़कर, इन दोनों प्रावधानों को अल्पसंख्यक तुष्टीकरण नीति के अनुसरण में अधिनियमित किया गया है तथा सम्बंधित राजकीय दलों की 'फूट डालो-राज करो' नीति के अधीन संविधान को बौना बनाया गया है। समानता की तरह ही सामाजिक न्याय एवं बन्धुभाव संविधान के मूलभूत ढांचे में समाहित हैं। उपरोक्त दोनों कानून संविधान के मूलभूत ढांचे तथा संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित उदात्त तत्वों का उल्लंघन करते हैं। अत: ये दोनों अधिनियम राष्ट्रहित की दृष्टि से घातक हैं। इस प्रकार की नीति से वर्तमान सत्तारूढ़ दलों के गठबंधन ने हिन्दुओं तथा मुसलमानों के बीच कटुता उत्पन्न की है। क्योंकि, इन दोनों के बीच की कटुता ही उसकी चुनावी रणनीति है। इस 'फूट-डालू' राजनीति को बढ़ावा देने के लिए ही बजट में मुस्लिमों के लिए अलग से प्रावधान, शिक्षा एवं रोजगार में मुस्लिमों के लिए अलग आरक्षण, हज यात्रियों के लिए बैंकों से कर्ज तथा अनुदान देने के लिए ढाई करोड़ रुपयों का विशेष कोष स्थापित किया जा रहा है। न्यायपालिका एवं सुरक्षा बलों में भी मुस्लिमों की संख्या की गिनती करने के आदेश देने का एक दुर्भाग्यपूर्ण कदम भी उठाया गया है। यह 'भारत-तोड़ो आंदोलन' के अलावा कुछ भी नहीं है। ऐसी नीति के द्वारा ये हमारे राष्ट्र की मूलशक्ति का स्रोत रही, देश के सभी नागरिकों के बीच अवस्थित भ्रातृत्व की भावना को ही नष्ट कर रहे हैं और 'जन-दुर्ग' में दरार उत्पन्न कर रहे हैं। बन्धुत्व की भावना एवं राष्ट्रीय एकता को नष्ट करने वाले ऐसे उपायों को देखकर अनेक मुस्लिमों को भी अटपटा-सा महसूस हो रहा है।

उपरोक्त विवरणों से स्पष्ट है कि १९७५ में जब संविधान द्वारा प्रदत्त शक्ति का दुरुपयोग करते हुए प्रजातन्त्र को ही खत्म करने का प्रयास किया गया था, उससे भी अधिक भयंकर स्थिति आज उत्पन्न हुई है। उस समय भी सभी प्रजातांत्रिक शक्तियों ने एकत्रित होकर आपात स्थिति के विरोध में सफलतापूर्वक संघर्ष किया, राष्ट्र एवं संविधान की रक्षा की। आज संविधान द्वारा प्रदत्त विधायिका एवं कार्यपालिका की शक्तियों का दुरुपयोग करते हुए जनता की एकता को नष्ट-भ्रष्ट किया जा रहा है। **ऐसे में देशभक्त तथा राष्ट्रवादी दलों एवं व्यक्तियों को संगठित करके एकत्रित आकर, इन 'फूट-डालू' शक्तियों के साथ प्रखर संघर्ष करते हुए, उन्हें परास्त करके ही देश को बचाया जा सकता है।**

राष्ट्र ने गत पूरे वर्ष श्री गुरुजी की जन्मशती मनाई है। कार्यक्रमों के दौरान राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समरसता के संदेश को ही सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई। श्रीगुरुजी ने सदैव एकता, वैयक्तिक एवं राष्ट्रीय चारित्र्य, राष्ट्र के प्रति अव्यभिचारी निष्ठा तथा सभी के प्रति समानतापूर्ण व्यवहार पर ही बल दिया था। वे समाज को साम्प्रदायिक आधार पर अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक खेमों में बांटने के विरुद्ध थे। अपनी कर्मण्यता या अकर्मण्यता के कारण कोई भी व्यक्ति राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता की रक्षा करने के अपने कर्तव्य में विफल न रहे, इस बारे में वे सदैव चेतावनी देते आए थे। देशभक्ति के अच्छे संस्कारों से युक्त सभी लोगों को इस सचाई को भली-भाँति समझ लेना चाहिए। इस प्रकार के सभी लोगों को अपनी वैयक्तिक कार्यसूची, अथवा भेदभाव एवं अहंकार को दूर करके, इस 'जन-दुर्ग' को अभेद्य बनाने के लिए एकत्र होना होगा। ऐसे सभी लोगों को अपने इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कर्तव्य का निर्वहन करना चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार की ढिलाई राष्ट्र के प्रति घोर अपराध होगा। श्रीगुरुजी सदैव कहा करते थे, 'सुधारने में कभी विलम्ब नहीं होता।' तो आइए, हम सब संगठित होकर जनता को विभाजित करने की नीति के विरुद्ध संघर्ष करते हुए उसे परास्त करें। ❑

पूर्वोतर अंचल में भारतीय गणराज्य को गंभीर चुनौती

—मनमोहन शर्मा

> "गुवाहाटी से दिल्ली आ रही राजधानी एक्सप्रैस में एक भीषण विस्फोट हुआ जिसमें कम से कम पांच यात्री मारे गए। गोलाघाट के समीप हुए इस विस्फोट में ९ यात्री गंभीर रूप से घायल भी हुए हैं। मरने वाले सभी हिन्दी भाषी थे।"

पूर्वोत्तर भारत में हालात दिन-प्रतिदिन निस्फोटक होते जा रहे हैं मगर केन्द्र सरकार जानबूझ कर इससे बेखबर बनी हुई है। उग्रवाद का तांडव जारी है। मासूम जनता हर रोज इसकी भेंट चढ़ रही है। कोई दिन ऐसा नहीं गुजरता जब विदेशी इशारे पर नाचने वाले आतंकवादी इस क्षेत्र में खूनी होली न खेलते हों। हद तो यह है हमारे सांसद भी पूर्वोतर के बिगड़ते हालात के बारे में मौन साधे हुए हैं।

हाल ही में गुवाहाटी से दिल्ली आ रही राजधानी एक्सप्रैस में एक भीषण विस्फोट हुआ जिसमें कम से कम पांच यात्री मारे गए। गोलाघाट के समीप हुए इस विस्फोट में ९ यात्री गंभीर रूप से घायल भी हुए हैं। मरने वाले सभी हिन्दीभाषी थे। पुलिस का कहना है कि यह बम एक सूटकेस में था जिसे इस ट्रेन में एक बीस वर्षीय युवक ने रखा था।

गुप्तचर सूत्रों का दावा है कि इस विस्फोट के पीछे एक नगा उग्रवादी संगठन आदिवासी नैशनल लिबरेशन आर्मी का हाथ है। कहा जाता है कि असमिया मूल के ईसाई आदिवासियों के इस संगठन को असम के एक अन्य कुख्यात आतंकवादी संगठन उल्फा (यूनाइटिड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम) ने बनाया था। इसके कैडर को विद्रोही नागा संगठन ने म्यांमार के वनों में स्थित गुप्त प्रशिक्षण शिविरों में छापामार युद्ध का प्रशिक्षण दिया है।

यह संगठन २४ नवम्बर की घटना के बाद सक्रिय हुआ है जब बिहारी और झारखंडी मूल के गैरअसमिया आदिवासियों ने गुवाहाटी में एक प्रदर्शन करके अनुसूचित जनजातियों में शामिल करने की मांग की थी। इन बिहारी आदिवासियों पर स्थानीय लोगों ने हमला कर दिया। कहा जाता है कि इस हमले के पीछे उल्फा का हाथ था। इसलिए पुलिस एवं प्रशासन ने खुलकर लोकल लोगों का साथ दिया। इस हमले में दो आदिवासी मारे गए। एक युवती को जबरन उसके कपड़े फाड़कर पूर्ण रूप से सरेआम नंगा कर दिया गया। इस शर्मनाक दृश्य को टी.वी. चैनलों ने देशभर के दर्शकों को परोस दिया। इस घटना की देशभर में तीव्र प्रतिक्रिया हुई संसद में भी इसकी गूंज सुनाई दी। झारखंड में एक दिन के बंद का आयोजन किया गया जिसके कारण सारा जनजीवन ठप्प रहा।

यहां उल्लेखनीय है कि इन गैर-असमिया आदिवासियों को अंग्रेज डेढ़ सौ साल पहले बिहार से भर्ती करके असम के चाय बागानों में काम करने के लिए ले गए थे। ये अशिक्षित और गरीब हैं। उन्हें असम की कांग्रेसी सरकार इसलिए आदिवासियों जैसी सुविधाएं देने के लिए तैयार नहीं क्योंकि वह उन्हें उल्फा के दबाव पर असम से खदेड़ना चाहती है। इन बेचारों की संख्या भले ही ४०-४५ लाख हो मगर इनको आज तक मतदाता तक नहीं बनाया गया, इसलिए नेताओं को इनकी कोई चिंता नहीं। अब असमिया आदिवासियों में अपनी जड़ें जमाने के लिए उल्फा ने यह नया आतंकवादी संगठन बनाया है। असमिया मूल के आदिवासियों की सँख्या ६०-७० लाख बताई जाती है इनको चर्च का समर्थन प्राप्त है, इसलिए हिन्दीभाषी आदिवासियों की तुलना में इनकी आर्थिक स्थिति बेहतर है। ये शिक्षित और मतदाता भी हैं। उल्फा के इशारे पर बने इस नए आतंकवादी संगठन आदिवासी नैशनल लिबरेशन आर्मी ने गैर-असमिया आदिवासियों में दहशत फैलाने के लिए राज्य भर में बम विस्फोट का सिलसिला शुरू कर रखा है। अब तक यह नया संगठन राज्य में एक दर्जन बमों के धमाके कर चुका है। ये धमाके हिन्दीभाषी बहुल क्षेत्रों में हुए हैं और इनमें एक दर्जन हिन्दीभाषी मजदूर मारे गए हैं। इसके साथ ही इन्होंने ट्रेनों को भी अपना निशाना बनाया है। कामरुप एक्सप्रेस में बोकाजान रेलवे स्टेशन पर धमाका ३ दिसम्बर को हुआ। इससे अगले दिन उग्रवादियों ने अरूणांचल एक्सप्रेस में बम विस्फोट किया। इसके साथ ही तीन बसों में भी बम विस्फोट किए हैं। खास बात तो यह है कि आंतकवादी राज्य में खूनी खेल खेल रहे हैं, मगर पुलिस आज तक किसी को गिरफ्तार नहीं कर पाई। कहा जाता है कि केन्द्रीय

गुप्तचर ब्यूरो ने राज्य सरकार को इस उग्रवादी संगठन के नेताओं के अड्डों की जानकारी भी उपलब्ध करवा दी थी, मगर असम पुलिस ने इनको गिरफ्तार करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया। **असम के राज्यपाल जनरल अजय सिंह ने केन्द्र को एक विस्तृत रिपोर्ट भेजी थी जिसमें उन्होंने यह आरोप लगाया था कि असम के छह कांग्रेसी मन्त्रियों के उल्फा विद्रोहियों से गहरे रिश्ते हैं।** उन्होंने उन मन्त्रियों के नामों का भी खुलासा किया था जिनके सरकारी बंगलों में ये विद्रोही शरण पाते थे। उल्फा हिन्दीभाषी व्यापारियों का अपहरण करके जो फिरौती वसूलती है उसमें इन मन्त्रियों और कई पुलिस अफसरों का भी हिस्सा होता है। **उल्फा का मुख्यालय बंगलादेश में है और पाकिस्तानी गुप्तचर एजेंसी आई.एस.आई. से गहरे रिश्ते हैं। पाकिस्तान इन उग्रवादी संगठनों को आर्थिक और सैनिक सहायता भी नियमित रूप से देता है** जिसका एक हिस्सा असम के कुछ मंत्रियों और प्रशासन के उच्चधिकारियों तक भी पहुंचता है। **कहा जाता है कि राज्यपाल ने अपनी रिपोर्ट के साथ कुछ ठोस प्रमाण भी केन्द्र सरकार को भिजवाए थे मगर कांग्रेस हाईकमान के दबाव पर इस रिपोर्ट को दबा दिया गया। ज्ञातव्य है कि इसी तरह के आरोप असम के एक अन्य पूर्व राज्यपाल जनरल एस.के. सिन्हा ने भी लगाए थे** मगर गृह मंत्रालय ने देशद्रोही मंत्रियों और अधिकारियों के खिलाफ कोई कदम उठाने की बजाय इस राज्यपाल को ही वहां से हटा दिया। यहां **यह बात भी उल्लेखनीय है कि जिन राज्यपालों ने उल्फा और राज्य के कांग्रेसी मंत्रियों के नापाक रिश्तों का पर्दाफाश किया है वे कोई मामूली हस्ती नहीं हैं। ये दोनों सेवानिवृत उच्च सैनिक अफसर हैं जोकि बेहद देशभक्त और ईमानदार माने जाते हैं।** ये दोनों ही कई दशक तक पूर्वी कमान के प्रमुख रहे हैं, इसलिए वे विद्रोहियों की रग-रग से वाकिफ हैं। उनकी रिपोर्ट पर सन्देह नहीं किया जा सकता।

इस संदर्भ में **यह उल्लेख करना भी जरूरी है कि विदेशी शक्तियां गत ७० वर्षों से पूर्वोत्तर भारत को शेष देश से अलग करने का प्रयास कर रही हैं।** इस साजिश में पहले ब्रिटेन और चर्च का हाथ था, अब इसमें पाकिस्तान, चीन और बंगलादेश भी शामिल हो गए हैं। **भारत को खंडित करने के लिए चर्च और इस्लामी जेहादी इकट्ठे हो गए हैं, जबकि विदेशी इनकी पीठ ठोक रहे हैं। चर्च ने नागालैंड में जो विद्रोह की ज्वाला १९५० में भड़काई थी वह आज भी धधक रही है।** भारत सरकार विद्रोहियों की कमर तोड़ने की बजाय उनके आगे घुटने टेक चुकी है। विद्रोही नागाओं से गत दस सालों से शान्ति वार्ता का नाटक जारी है, मगर विद्रोही अपने तेवर बदलने के लिए तैयार नहीं।

इसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि केन्द्र में जो भी सरकार सत्ता में आई उसी ने उत्तर-पूर्व में सक्रिय विद्रोही तत्वों के फन कुचलने की बजाय उनके आगे घुटने टेक दिए। इस क्षेत्र को सात राज्यों में बांट दिया गया, मगर इसके बाद भी देशद्रोही शांत नहीं हुए। यदि केन्द्रीय गृह मंत्रालय की रिपोर्ट को ही मान लिया जाए तो इस क्षेत्र में ११० उग्रवादी संगठन सक्रिय हैं जोकि पूर्वोतर में ४९ नए राष्ट्रों का सृजन करने की मांग कर रहे हैं। गत १५ वर्षों में इस क्षेत्र में भड़की उग्रवाद की ज्वाला में २१७१६ व्यक्ति मारे जा चुके हैं। उग्रवादियों को कुचलने के नाम पर केन्द्र ६५१६ करोड़ रुपय फूंक चुका है।

विदेशी शक्तियां इस क्षेत्र के भूमिपुत्रों को शेष भारतवासियों के खिलाफ भड़का रही हैं। कभी बंगलाभाषी इनके निशाने पर होते हैं तो कभी नेपालीभाषी। इन दिनों हिन्दीभाषियों को इस क्षेत्र से जबरन भगाने का हिंसक अभियान चल रहा है। यह अभियान पहले सिर्फ असम तक ही सीमित था मगर अब तो सातों राज्यों में फैल चुका है। इस वर्ष के दौरान ६७५ हिन्दीभाषी उग्रवाद की बलि चढ़ चुके हैं। यह सिलसिला जारी है। विदेशी शक्तियां भारत को कमजोर करना चाहती हैं। यह इससे स्पष्ट है कि मणिपुर, अरूणाचल, कार्बो, आंग्लांग, त्रिपुरा में तो एक कबीले को दूसरे के खिलाफ भड़का कर खून के दरिया बहाए जा रहे हैं। इन बाहरी तत्वों का लक्ष्य राष्ट्र को टुकड़े-टुकड़े करना है और राजनीतिक अस्थिरता पैदा करना है। कुल मिलाकर जो तस्वीर सामने है वह भयानक भविष्य की ओर इंगित करती है। पश्चिमी देश इस क्षेत्र में ईसाइयों के प्रभुत्व वाले कई राष्ट्र बनाना चाहते हैं तो पाकिस्तान का लक्ष्य इस क्षेत्र में आबादी के अनुपात को बदल कर इसे इस्लामी देश बनाना है, इसलिए बंगलादेशियों की घुसपैठ को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। ❑

संविधान में हिन्दी: बाधाओं के घेरे में बंदी

–डॉ. बलदेव सहाय

भारतीय गणराज्य के संविधान में हिन्दी को राजभाषा का स्थान तो दिया गया परन्तु साथ ही अंग्रेजी भाषा के उपयोग की पन्द्रह वर्ष तक अनुमति का वाक्य भी जोड़ दिया गया था। वह अवधि द्रुपद सुता का चीर बन गयी है। उसका परिणाम क्या हुआ है वह प्रत्यक्ष है।

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर के अवसर पर दिल्ली के एक अंग्रेजी दैनिक ने एक कार्टून प्रकाशित किया, शीर्षक था-"हिन्दी दिवस जन्म या अन्त्येष्टि", बड़ी तीखी पर सटीक टिप्पणी थी। हिन्दी में साहित्य की विविध विधाओं में उत्कृष्ट रचनाएं लिखी जा रही हैं। पुरस्कृत भी हो रही हैं पर आजादी के ६० वर्ष बाद भी हिन्दी राजभाषा से बढ़कर राष्ट्रभाषा भी किसी की कृपा अथवा उदारता के कारण नहीं बनी बल्कि इसलिए बनी कि देश के कोने-कोने में यह समझी और बोली जाती है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३४३ में कहा गया है कि संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। साथ ही यह भी जोड़ दिया गया है कि संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष तक संघ के सब उन प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा प्रयोग की जाती रहेगी जिनके लिए प्रारम्भ के ठीक पहले वह प्रयोग की जाती थी। समझ में नहीं आता कि यदि कोई भी किसी भी विदेशी भाषा को केवल दो वर्ष में सीख सकता है और तीन वर्ष में प्रवीणता प्राप्त कर सकता है तो भारत निवासी हिन्दी क्यों नही सीखते।

किसी भी स्वतन्त्र देश की अस्मिता और पहचान तीन प्रतीकों से मानी जाती है अपना झण्डा, अपनी मोहर और गीत तथा अपनी भाषा। आजादी से बहुत पहले स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी ने हिन्दी हिन्दुस्तानी को अपने रचनात्मक कार्यक्रमों की सूची में शामिल किया था। दक्षिण भारत में भी इस बात का कोई विरोध नहीं था। यहां तक कि चक्रवर्ती राजगोपालचार्य के सहयोग से उन्होंने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा भी स्थापित की थी। आजादी के पहले पांच वर्षों में इन प्रतीकों को सर्वाधिक प्रधानता देना आवश्यक था। जनता स्वतन्त्रता के सुखाभास में झूम रही थी। देश में गांधी तथा जवाहरलाल नेहरु जैसे लोकप्रिय नेता थे- वे जो कहते सारा देश सहर्ष मान लेता। पर हमने हिन्दी को केवल राजभाषा की ही पदवी दी, साथ में एक पुछल्ला भी लगा दिया कि पन्द्रह वर्ष साथ-साथ अंग्रेजी भी ज्यों की त्यों चलती रहेगी।

सितम्बर २००६ में मेरी पोती चीन घूमने गई थी। मैंने कहा बेटा चीन की आर्थिक स्थिति के बारे में अंग्रेजी में कोई रपट या पुस्तक लेती आना। लौटकर आई तो बोली मैं चीन में बड़े छोटे कितने ही नगरों में घूमी कहीं कोई भी अंग्रेजी नहीं बोलता, सब चीनी भाषा बोलते हैं, कहीं अंग्रेजी की कोई पुस्तक भी प्राप्य नहीं थी। सारा शिक्षण प्रशिक्षण एवं परीक्षाएं सभी काम चीनी में होता है। चीन का क्षेत्रफल एवं जनसंख्या भारत से अधिक है पर हम आज भी अंग्रेजी के गुलाम बने हुए हैं और उसमें गौरव अनुभव करते हैं।

स्वतंत्रता के आठ वर्ष बाद १९५५ में राजभाषा आयोग गठित किया गया और १८ वर्ष बाद केन्द्रीय राजभाषा विभाग। हिन्दी न जानने वाले सरकारी कर्मचारियों के लिए हिन्दी शिक्षण का प्रबन्ध हुआ और परीक्षा मे उत्तीर्ण व्यक्तियों की वेतनवृद्धि हुई। प्रत्येक मंत्रालय एव निजी बड़े उद्यमों में एक हिन्दी अधिकारी नियुक्त किया गया जिसका उत्तदायित्व कामकाज में हिन्दी को प्रोत्साहित करना है। राजभाषा होने के नाते केन्द्रीय सरकार का पत्राचार हिन्दी में होना था, अहिन्दी राज्यों में भेजे गये पत्रों के साथ अंग्रेजी में अनुवाद संलग्न करना जरूरी था। आज केन्द्र का कितना पत्राचार हिन्दी में होता है यह हम आप सभी जानते हैं।

अंग्रेजी सदा चलती रहेगी

गणराज्य के १५ वर्ष पूर्ण होने के पहले ही संसद ने राजभाषा अधिनियम १९६३ पारित कर दिया ताकि अंग्रेजी का प्रयोग १९६५ के बाद भी चलता रहे। इस प्रकार हिन्दी पर एक के बाद कुठाराघात होता रहा। सन् १९६७ में इस अधिनियम में एक "सराहनीय" संशोधन किया गया। इसकी धारा ३ (५) में यह उपबन्ध किया गया कि अंग्रेजी का प्रयोग तब तक जारी रहेगा जब तक हिन्दी को राजभाषा के रूप में न अपनाने वाले सभी राज्यों के विधान मंडल में अंग्रेजी समाप्त करने का संकल्प न पारित कर दें। अतः हिन्दी को राजभाषा मानने के सारे मार्ग सदा के लिए बन्द हो गए-- न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।

यह प्रश्न उठता है क्या संशोधन मूल संविधान के अनुच्छेद ३४३ (१) के विपरीत नहीं? जब संघ की राजभाषा हिन्दी और देवनागरी होगी तब संघ के किसी भी

राज्य को हिन्दी को राजभाषा का दर्जा न देना असंवैधानिक ही कहा जाएगा। अत: इस संवैधानिक विषमता को दूर करने के लिए **१९६८ में त्रिभाषा सूत्र का आविष्कार किया गया।** इस वर्ष संसद के दोनों सदनों ने पारित किया। यह सभा संकल्प करती है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा जो दक्षिण भारत की भाषाओं में से एक हो को तरजीह देते हुए अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषाओं एवं अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी के अध्ययन के लिए प्रबन्ध होना चाहिए।

संक्षेप में इस सूत्र के तीन आशय हैं। पहला- हिन्दी क्षेत्र हो या अहिन्दी, सारे भारत को अंग्रेजी की दासता सर्वप्रथम है। दूसरा- हिन्दी को राजभाषा की पदवी से हटाकर एक क्षेत्रीय भाषा की कतार में लाकर खड़ा कर दिया गया। (तुम कन्नड़ सीखो तभी मैं हिन्दी सीखूँगा) तीसरा- उत्तरी और दक्षिणी भारतवासियों में यदि भाषा सम्बंधित कोई मनमुटाव था भी तो उसे उजागर कर वैमनस्य के बीज बो दिये गये। यह सूत्र कितना व्यावहारिक रहा यह हम सब देख ही रहे हैं। अपने नेताओं तथा सांसदों की सूझबूझ की जितनी प्रशंसा की जाए थोड़ी है। उल्लेखनीय है कि दिल्ली से प्रकाशित जाने माने दैनिक हिन्दुस्तान समाचार पत्र का बहुत वर्षों तक दक्षिण भारत के एक विद्वान ने कुशल सम्पादन किया था।

हम क्या करें?

हमें संविधान में संशोधन की मांग करनी चाहिए। पहले तो अनुच्छेद ३४३ (१) के अधीन हिन्दी राजभाषा अधिनियम १९६३ में १९६७ में किए गए संशोधन को रद्द करने का प्रस्ताव लाना है। क्या कभी भी सारे अहिन्दी राज्यों के विधानमंडल एकमत से अंग्रेजी हटाने के संकल्प को पारित कर सकेंगे, यह नितान्त भ्रान्तिमय एवं अव्यावहारिक प्रस्ताव है। तीसरे हमें दक्षिण राज्यों में हिन्दी स्वीकार कराने के लिए दत्तचित होकर प्रयत्न करना चाहिए और इस हेतु एक व्यावहारिक कार्यक्रम आवश्यक है। **चौथे, हमें स्वंय हर प्रकार से हिन्दी में कामकाज करना कराना तथा उसे समृद्ध बनाना आवश्यक है।** हिन्दी रत्नाकर समिति इस दिशा में भरसक प्रयास कर रही है।

मैंने कई वर्ष तक जहाजरानी मंत्रालय में मंत्री स्वर्गीय श्री कमलापति त्रिपाठी के साथ काम किया है। हमें उन जैसा ही हिन्दी प्रेमी चाहिए। हमारे कितने कार्यालय और गोदियां दक्षिण भारत में हैं। वे जहां जाते, हिन्दी में ही सरकारी कामकाज करते थे। फाइलों पर अपनी नोटिंग तथा आदेश हिन्दी भाषा में देते थे। मंत्रालय के सचिव श्री रामकृष्ण से उन्होंने हिन्दी सीखने का अनुरोध किया। बात यहां आकर टिकी कि वे अपने सुझाव अंग्रेजी में दे दें पर हस्ताक्षर हिन्दी में करें और वे ऐसा ही करते थे।

दूर क्यों जांए, हमारी बस्ती के ही पद्मश्री गोपाल प्रसाद व्यास कहा करते थे- बिन हिन्दी सब सून। उन्होंने सबके सहयोग से विशेषरूप से स्वर्गीय धर्मवीर (पूर्व राज्यपाल) की सहायता से हिन्दी भवन खड़ा कर दिया जो उनके सुपुत्र तथा जाने माने कवि श्री गोविन्द व्यास बड़े सुचारू रूप से चला रहे हैं। बिना किसी संचित धनराशि या सरकारी सहायता के निर्मित हिन्दी भवन व्यास जी की लगन, आस्था और कर्मठता का ही स्मारक है। अत: असंभव कुछ भी नहीं, आवश्यकता है समर्पित भावना की।

राष्ट्रभाषा भारती २००७ स्मारिका से

आग को अपनी जगाओ।

- बालकवि वैरागी

जब धरा पर धांधली करने लगे पागल अंधेरा-
और मावस धौंस देकर चाट ले सारा सवेरा।
तब तुम्हारा हारकर यूं बैठ जाना बुजदिली है, पाप है
आज की इन पीढ़ियों का बस यही सन्ताप है-
हाय रे! अब भी समय है, आग को अपनी जगाओ
बार मत देखो सुबह की प्राण का दीपक जलाओ।।
मत करो परवाह कोई क्या कहेगा-
इस तरह तो वक्त का दुश्मन सदा निर्भय रहेगा।
सब्र का यह बांध तुमने पूछ कर किससे बनाया।
कौन है जिसने तुम्हें इतना सहन करना सिखाया।
तोड़ दो यह बांध बहने दो नदी को
दांव पर खुद को लगाकर धन्य कर दो इस सदी को।।
मैं समय पर कह रहा हूं और अब क्या शेष है।
तुम निरन्तर बुझ रहे हो बस इसी का क्लेश है।
जो दिया बुझकर पड़ा हो, वह भला किस काम का
यह समय बिल्कुल नहीं है ज्योति के आराम का
आज यदि तुमने अंधेरे से लड़ाई छोड़ दी
तो समझ लो रोशनी की चूड़ियां घर में बिठा कर तोड़ दीं।।

–नीमच (मध्य प्रदेश)

आईए ''अंतिम विकल्प'' के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सभी बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाएं।

''आवाज'' एक शक्ति है।

''अंतिम विकल्प'' जिला, तहसील एवं ग्राम स्तर पर संवाददाताओं के रूप में आपसे सहयोग की अपेक्षा कर रहा है और आपको पत्रकार बनाकर एक जिम्मेदार कार्यकर्ता बनने का न्यौता दे रहा है। पत्रकार बनकर समाज में व्याप्त बुराइयों, भ्रष्टाचार, लूट-खसोट, निर्दोष व गरीबों पर जुल्म या तमाम ऐसा जो कुछ पर्दे के सामने या पीछे हो रहा है, उसका खुलासा करने के लिए आप तैयार हो जाएँ।

इस संदर्भ में हमें शीघ्र मिलें या लिखें :

अंतिम विकल्प

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्रिका

कारपोरेट कार्यालय : 36, एन्ड्रयूजगंज मार्केट, नई दिल्ली-110049, फोन : 09899112882

प्रदेश कार्यालय : मौर्य मार्केट, द्वितीय तल, हार्टमैन कालेज रोड, बरेली, फोन : 09358061422

ईमेल : antimbikalp@yahoo.com dps_rathore@yahoo.com

कार्यालय : इम्प्रैशन ग्राफिक्स, 3, छाबड़ा काम्प्लैक्स, अम्बाला रोड, सहारनपुर-247001 (उ.प्र.)

हिन्दी राष्ट्रभाषा प्रचार-प्रसार के लिए, आपके विचारों व आलेखों का स्वागत

–सम्पादक

भारतीय गणराज्य की राजभाषा हिन्दी के व्यवहार को गतिशील करने के सूत्र

–डॉ. कृष्ण लाल

हिन्दी का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि स्वतन्त्रता के पश्चात् देश को सर्वोच्च नेता इस प्रकार मिले जो न केवल हिन्दी को समर्पित नहीं थे, अपितु हिन्दी को पिछड़ा तथा ज्ञान-विज्ञान के लिए अपूर्ण और अयोग्य मानते थे वे मैकाले मानस पुत्र भारतीय होकर भी किसी न किसी कारण हिन्दी के प्रयोग को टरकाना चाहते थे। आगे चलकर **संविधान-प्रदत्त व्यवस्था के अनुसार जब पन्द्रह वर्ष पश्चात् १९६५ में हिन्दी को पूर्ण रूप से राजभाषा बन जाना था, उससे दो वर्ष पूर्व अनन्तकाल तक अंग्रेजी को सह-भाषा के रूप में संविधान में स्वीकार करा लिया गया।**

इस सरकारी अधिकारी-वर्ग और नौकरशाहों को रटी-रटाई, सामन्ती विदेशी शासकवर्ग की भाषा को सुगमता पूर्वक प्रयोग कर जनसामान्य पर (सेवा नहीं) शासन करने का रास्ता सुलभ हो गया। वही नौकरशाह आज हिन्दी के मार्ग में सबसे बड़ा रोड़ा हैं। इनका दुःसाहस है कि बड़े से बड़े निर्वाचित जन-प्रतिनिधि की बात ये अनसुनी कर देते हैं। हिन्दी की प्रगति को रोकने वाले वही अधिकारी हैं। इनको यह अच्छा नहीं लगता कि अपनी भाषा के आधार पर कोई साधारण व्यक्ति उच्च अधिकारी हो जाए। इससे न केवल इनका वर्चस्व समाप्त होता है अपितु अधिकार की बपौती को भी ठेस पहुँचती है।

प्रत्येक कार्यालय में दिखावे के लिए या संविधान की खाना-पूरी के लिए एक हिन्दी अधिकारी और उसके सहायक नियुक्त होते हैं जिन्हें अछूत के समान अलग बिठाया जाता है। इन्हें कोई अनुशासनात्मक अधिकार प्राप्त नहीं होता। इनका कार्य केवल मूलरूप में अंग्रेजी में 'अफसर' द्वारा तैयार किये गये नियम-उपनियमों का हिन्दी अनुवाद करना होता है जिससे संविधान की खाना-पूरी का दिखावा मात्र हो जाये। ये हिन्दी अधिकारी अंग्रेजीदां अफसर के अधीन नौकर हैं।

इससे भी बड़ी और महत्त्वपूर्ण भूमिका संघ लोक सेवा आयोग की है। वह बीमारी की जड़ है। अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन ने वहां धरना देने का निर्णय भी किया था। वहां के अफसरों की मिली-भगत से उसे उठवा दिया गया और उसकी रक्षा करने में प्रधानमंत्री या गृहमंत्री कोई भी सक्षम नहीं हुआ।

एक बार मुझे किसी कार्य से संघ लोक सेवा आयोग जाकर वहां प्रतीक्षालय में बैठने का अवसर प्राप्त हुआ। वहां ढेरों पत्र-पत्रिकाओं में एक भी हिन्दी में नहीं थी। मैंने इस विषय में कहा तो उत्तर मिला कि हिन्दी की पत्र-पत्रिका कोई भी नहीं मांगता। कार्य समाप्त करने पर जब बिल बनाया तो लिपिक ने कहा कि अंग्रेजी में बनाइये। मैंने कहा कि यह कौन कहता है-मैं तो हिन्दी में ही बनाऊँगा। मेरा यही अनुभव है कि हमारा आग्रह होना चाहिये, संविधान हमारे साथ है।

सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग की समीक्षा के लिये हिन्दी समितियों की बैठकें होती रहती हैं। उनमें आंकड़े बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किये जाते हैं। समिति के सदस्यों को स्वयं कार्यालयों में जाकर देखने का अधिकार होना चाहिये। **बैठक का प्रतिवेदन केवल हिन्दी में तैयार किया जाये और समिति को अनुशासनात्मक/दण्डात्मक कार्यवाही की संस्तुति करने का अधिकार दिया जाना आवश्यक है। समितियों का गठन प्रतिवर्ष नये सिरे से किया जाये और उसके लिये जनसामान्य से आवेदन मांगे जायें। इन समितियों में केवल उन्हीं को नियुक्त किया जाए जो हिन्दी के प्रति निष्ठावान हों,** जिन्होंने हिन्दी के पक्ष में लिखा हो तथा जो अपना सब कार्य हिन्दी में ही करते हों। कार्यालयों में जो भी हिन्दी अधिकारी हैं, उनका दर्जा संयुक्त-सचिव जैसा तो होना ही चाहिये जिससे वह संविधान के अनुरूप हिन्दी की प्रगति न देखने पर अनुशासनात्मक कार्यवाही कर सकें। कार्यालयों में साहित्यिक प्रतियोगितायें कम करके कार्यालयीय कार्यविधि में अधिकाधिक हिन्दी-प्रयोग के आधार पर पुरस्कार दिये जायें। **केवल नामपट्ट द्विभाषी लगाना पर्याप्त नहीं, यह देखना आवश्यक है कि लिपिक से लेकर अफसर तक सभी कर्मचारी कार्यालय में हिन्दी में कार्य करते हैं या नहीं। मन्त्री भी विभिन्न बैठकों/अवसरों पर बोलने के लिये अपने भाषण के प्रारूप हिन्दी में मांगें।** आवश्यक हो तो सम्बद्ध भाषा का दुभाषिया रखें। मंत्रियों को यह सुविधा सुलभ होनी चाहिये। उद्योगपतियों/व्यापारियों को सरकार की ओर से निर्देश होना चाहिये कि वे हिन्दी का राजभाषा के अनुरूप सम्मान करें और अपने उत्पादों तथा विज्ञापनों पर हिन्दी का प्रयोग अवश्य करें। वे भी अपने कामकाज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

यह प्रसन्नता की बात है कि **अब कम्प्यूटर उपलब्ध हैं। प्रत्येक कार्यालय में हिन्दी के अधिक कम्प्यूटर लेकर हिन्दी में कार्य को बढ़ावा दिया जाये।** इस सबके मूल में इच्छा और निष्ठा आवश्यक है। यह निष्ठा मंत्री, उच्चधिकारी सबमें प्रकट होनी चाहिए। हिन्दी के संविधानप्रदत्त अधिकार की रक्षा आवश्यक है।

– विश्वनीड़ ई-९३७ सरस्वती विहार
दिल्ली-३४

संविधान का अनुच्छेद २५ और मत-मजहब

-आचार्य आर्यनरेश

संविधान की धारा २५, आई के अन्तर्गत नागरिकों को जिस व्यक्तिगत मत-मजहब आदि के पालन की स्वतंत्र छूट या अधिकार है, वह सर्वथा यथा-इच्छा सम्पूर्ण अथवा असीमित अधिकार नहीं है। १९५२ में मुम्बई उच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्याधीश मुहम्मद करीम छागला और न्यायमूर्ति श्री गजेन्द्रड़कर ने उपरोक्त मौलिक अधिकार का निर्णय देते हुए कहा था कि "यह अधिकार २५ तीसरा के अन्य प्रावधानों पर निर्भर है।" यदि इससे अन्यो का स्थास्थ्य, नैतिकता व सार्वजनिक स्वास्थ्य नहीं बिगड़ता तभी वह मान्य हैं।

अर्थात् मत-मजहव को वे स्वतंत्र क्रियाएं, वातावरण तथा समाज कल्याण की धारा ३ की नीतियों से विरुद्ध हैं तो उन्हें संविधान की दृष्टि से हटना होगा। जो नेता वोट के लोभ या अज्ञान के कारण मजहब को धर्म कहते हैं उन्हें आत्मचिंतन कर भूल सुधारनी चाहिए।

धर्म का पर्याय मजहव को मान बैठने से अनेक वैचारिक विसंगतियों और भ्रान्तियों का सृजन हो रहा है। वेद ने धर्म का जो स्वरूप वर्णित किया है, उसका मूल चिंतन **संगच्छध्वम् देवा भागं यथापूर्वे** पर आधारित है। वेद निर्देश जो धर्म का मूल सारतत्व है, वह है मनुर्भव अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्य बनो। प्रभु प्रदत्त सभी पदार्थों का हम पृथ्वीवासी उपयोग करते रहें। वस्तुतः जबसे ईश्वरीय वेद प्रणीत धर्म का स्थान मनुष्यकृत मजहवों ने लिया है तब से ही पृथ्वी पर लड़ाई झगड़े होकर मानवों व पशु पंक्षियों के रक्त से धरती का रगं लाल होने लगा।

वेद की शिक्षाएं जहां सभी के लिए हितकारी है वही मजहवों का सूत्रपात व्यक्ति विशेष द्वारा होने के कारण अभिमान, स्वार्थ, जातिवाद व क्षेत्रवाद से रहित नहीं है। मजहव में जितनी अच्छी वाते हैं वे प्रभुप्रदत्त धर्म से ही उद्भूत हैं। जवकि शेष अधिकतर बातें विज्ञान वे मानवता विरोधी हैं। आज इस्लामी आतकंवाद विश्व भर के लिए एक चुनौती बन कर उभर रहा है। अनेक अशान्तिकारक घटनाओं का कारण मजहवी उन्माद का प्रावल्य ही है। ईद पर, वैशाखी पर या काली के नाम पर हजारों पशु-पक्षियों की हत्या का कारण मजहवी परम्पराएं ही हैं। अनेक विद्वानों का मत है कि ईद शब्द ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र के 'ईड' शब्द से बना है। जिसका अर्थ है ईश्वर की उपासना करना। किन्तु मजहव कटरतावादियों ने इसे वध-हत्या के साथ जोड़ दिया। ठीक इसी तरह बलि शब्द पंच महायज्ञों के चतुर्थ यज्ञ बलिवैश्वदेव' से लिया गया है। जिसका अर्थ है प्रत्येक मानव प्रभु का प्यार पाने हेतु अपना भोजन खाने से पहले दूसरे प्राणियों को भी खिलाए। पर मतवादियों ने इसको पशु हत्या के साथ जोड़ दिया। पाप मुक्ति हेतु पशुओं की बलि चढ़ाने का अंध विश्वास भी मत-मजहब की देन है। ऐसे कट्टरपंथियों की सोच है कि चढ़ावा, कब्रे, बलि तीर्थयात्रा स्थान करने से पाप मुक्त हो जाते हैं। पाप के फल से मुक्ति दिलाने के लिए उपरोक्त विधाओं को मान्यता देने वालों ने पापों व अत्याचारों को बढ़ाया। अनेक मजहवो के ग्रन्थों में धरती को गोल व चपटी कहा गया है। इन ग्रन्थों में दूसरो से छुआछूत बरतने का भी विधान है। जबकि भारतीय गणराज्य के संविधान में इस कुप्रथा का निषेध किया गया है। कई ग्रन्थों में इतर आस्था वालो को जीवन से भी वंचित कर देने के आदेश के सूत्र भी कट्टरपंथी तत्वों ने समाविष्ट बताए है। इनके कारण भी आतंकवाद का विश्व व्यापी स्तर पर प्रचार-प्रसार हो रहा है।

समस्त गणराज्य को ही नहीं आज तो मजहवी उन्माद जनित आतंकवाद विश्व भर में शान्ति और सौंदर्यभाव के लिए एक चुनौती बनकर उभर रहा है। उन्मादी प्रवृतियों से आज वह नारी भी दंक्षित है, जिसे भारतीय मनीषा ने देवी और वदनीय तथा पूज्य माना है। जबकि कट्टरपंथी सोच के अनुगामियों की जीवन विद्या अनैतिकता से भरपूर है। ऐसे अनैतिक व्यवहार में लिप्त लोग, भोग-विलास में आसक्त रहकर एड्स सरीखे महाविनाशक रोग के प्रसार में सहायक हो रहे हैं।

जहां वेद वर्णित धर्म ब्रह्मचर्य पालन और योग पर जोर देता है, जबकि संकीर्ण मत-मजहब योगवादी जीवन की खुली छूट दे रहा है। संकीर्ण मजहवी व्यवस्थाओं में नारी का उत्पीड़न ही व्यवहार विद्या है। ऐसी उत्पीडित नारियों में से अनेक है जो बाध्य होकर वेश्यावृति के धंधे की अंधेरी गलियों में भटकने को बाध्य हैं। ऐसे समाज में यौन शोषण के लिए अवोध बच्चों को विदेश भेजने की विभीषिका अब यूनिसेफ की एक रिपोर्ट तक में चर्चित हुई हैं।

ये परिस्थितियां आर्य समाज के लिए भी एक

अवसर बन रही है। आतकंवाद के साथ-साथ बढ़ रहे अत्याचार भ्रष्टाचार नारी शोषण व बालयौनशोषण को रोकने हेतु खुराफाती विचारों पर पड़ी धर्म की चादर उतारकर उनके असली चेहरे को आम जनता के समक्ष रखना आर्य समाज को अभियान गतिमान रखना होगा। महर्षि दयानन्द ने सभी कुरीतियों, कुविचारों और अंधविश्वास के विरूद्ध अपनी पाखंड खंडिनी पताका फहरायी थी। उनका सपना था कि भारत में स्वतंत्रता के बाद अपने गणराज्य में स्वराज्य के साथ ही साथ सुराज्य भी स्थापित है। संसार की रचना के साथ, पहले परमपिता परमात्मा ने वेद में जीवन की विद्या को भी वर्णित किया है। मानव समाज के समक्ष उपस्थित जिन चुनौतियों का उल्लेख किया गया है, उनका समुचित समाधान वेद के निर्देशों में निहित है। शरीर को स्वस्थ, मन को शांत तथा आत्मा को आनन्दित करने वाला महान वैदिक विज्ञान 'योग' भी अहिंसा पर ही आधारित है। अहिंसा का साररूप में अर्थ यहीं है कि हम ऐसा कोई कार्य जान बूझकर न करें जिससे किसी सज्जन प्राणी को कष्ट हो या उसके जीवन के लिए संकट उपस्थित हो, अर्थात् अपनी मनमानी व स्वार्थ की भावना छोड़कर ही प्रभु की प्राप्ति संभव है। यही बात वेद के दूसरे महाविज्ञान 'देव यज्ञ' में भी समाहित है। 'यज्ञ' शब्द के अनेक नामों में से एक 'अध्वर' भी है, जिसका अर्थ है अहिंसा। 'यज्ञ हवन' का अनुष्ठान करने वाला संसार के सब प्राणियों के आधार 'प्राणवायु' बन जाता है। आर्य समाज ने स्वतंत्र भारत गणराज्य के निर्माण हेतु सर्वधिकार बलिदान किए है, अतः जिसने जिसे बनाया हो, वह उसे बिगड़ता नहीं देख सकता। आर्य समाज व्यक्ति का मान उसके गुणों से करता है। वेद प्रचार उसे महर्षि दयानन्द द्वारा सौपा गया है। पर्वूकाल की भान्ति सभी वैदिक शिक्षाओं को व्यवहार में लाएं तो समस्त विश्व को एक कुटुम्ब मानने का भाव प्रबल हो सकता हैं।आर्य समाज को ही विद्यमान परिस्थितियों में उस आदर्श स्थिति के समाज में सृजन हेतु सक्रिय होना होगा, संविधान की धारा २५ की भावना को जन-गण वास्तविक अर्थों में समझने-समझने का संकल्प ग्रहण कर युगधर्म का निर्वहन करना होगा।

—उद्‌गीथ साधना स्थली (हिमाचल)

With Best Compliments From

❋ ❋ ❋

VERMA EXPORTS

Leather Garments & Handicrafts Exporters

❋ ❋ ❋

R-27, Nehru Enclave, New Delhi-110019

Ph- 26468133, 41600898
Mob. 9810019157

With Best Compliments From

❋ ❋ ❋

MAHAJAN & CO.

Builders, Promotors & Developers

❋ ❋ ❋

Sector 15/181, FARIDABAD HARYANA

हर संकट से उबरे हम

–प्रो. मक्खन लाल

प्रो. मक्खन लाल देश के वरिष्ठ इतिहासकार हैं। इस लेख में उन्होंने सप्रमाण यह तथ्य प्रतिपादित किया है कि विगत् हजार वर्षों में हम संकटों से गुजरते रहे हैं किन्तु हमने अपनी आस्था और अस्मिता अक्षुण्ण रखी है। आपदाओं, उत्पीड़न और दमन के विलाप झेलकर भी हिन्दू समाज अपनी आस्थाओं पर अडिग रहा। श्री मक्खन लालजी ने अपने लेख में भारत के समुन्जवल भविष्य का भी विश्वास व्यक्त किया है। उन्हें रंच मात्र भी संदेह नहीं है कि हिन्दू समाज आज के विकृत राजनीतिक माहौल पर विजय पाएगा।

पिछले कुछ वर्षों से भारतवर्ष में हिन्दू समाज अनेक बातों को लेकर न केवल काफी निराश सा है वरन् अपने अस्तित्व को लेकर चिन्तित भी है। देश की कुल ८३ प्रतिशत जनसंख्या के बावजूद पिछले तीन वर्षों में जिस तरह से संप्रग सरकार ने अपना रूप दिखाया.है उससे चिन्ता होना स्वाभाविक है। खुलेआम तुष्टीकरण की नीति ने हिन्दू समाज को हतप्रभ कर दिया है। लाखों हिन्दुओं के अपने ही देश में शरणार्थी होने पर, हिन्दुओं के धर्मस्थलों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर आतंकवादी हमलों में हजारों हिन्दुओं के मारे जाने पर, या कि संसद में आतंकवादियों के हमले से संप्रग नेताओं की न तो नींद उड़ती है और न तो कहीं उनके मन में पीड़ितों के लिए कोई सम्वेदना होती है। प्रधानमंत्री का यह कहना कि देश के संसाधनों पर पहला हक मुसलमानों का है उनकी तुष्टीकरण की मानसिकता तो दर्शाता है। हिन्दु समाज के लिए यह चिन्ता का विषय होना ही चाहिए। मुसलमानों का पहला हक पाकिस्तान पर भी है और यहां हिन्दुस्तान पर भी! स्वाभाविक ही है कि अगर यही सच है तो देश का बंटवारा ही क्यों किया? लाखों लोगों की जाने क्यों गयीं? लाखों लोग अपने स्वजनों से बिछड़ कर काल-कवलित हुए अथवा गुण्डों, बादमाशों आदि के हत्थे-चढ़ गये। सब कुछ सहने एवं बर्दाश्त करने के बाद भी हिन्दुओं को 'साम्प्रदायिक' कहना तथा लांछित करना आज के राजनीतिज्ञों का मुख्य कार्य हो गया है। हिन्दुओं को ८३ प्रतिशत जनसंख्या के बावजूद देश का प्रधानमंत्री, कुछ दिन पहले तक देश का राष्ट्रपति तथा संप्रग अध्यक्ष आदि अल्पसंख्यक समुदाय के हैं। दुनिया के और किस देश में ऐसा है? अल्पसंख्यकवाद तथा अल्पसंख्यकों की मनमानी हमें मध्ययुग की तरफ घसीट रही है।

ऐसे वातावरण तथा राजनीतिज्ञों के गिरते चरित्र से हिन्दू समाज में निराशा तथा हताशा का भाव होना स्वाभाविक है। इतिहास का अध्येता होने के नाते मैं अपने को न तो परिस्थितियों से अलग कर पाता हूं और न ही पूरी स्थिति को इतिहास के परिप्रेक्ष्य में देखने की प्रक्रिया से ही अलग रख पाता हूं।

सन् १९४० से १९४२ तक द्वितीय विश्वयुद्ध अपने चरम पर था। ऐसा लगता था कि यूरोपीय सभ्यता का अन्त काफी नजदीक है। पूरे यूरोप में निराशा का वातावरण भी चरम पर था। ऐसे माहौल में प्रख्यात पुरातत्ववेता गार्डन चाइल्ड की पुस्तक 'व्हाट हैपेन्ड इन हिस्ट्री' (इतिहास में क्या हुआ) १९४२ में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक ने पूरे यूरोपवासियों में भविष्य के प्रति आशा की नई किरणें जगाई तथा आश्वस्त किया कि हम खत्म नहीं होंगे। इन विकट परिस्थितियों से भी उबरेंगे। सन् १९४२ में छपी यह पुस्तक अब तक कुछ नहीं तो ५० बार पुनः मुद्रित तो हुई ही है और भी सामान्य पाठकों के बीच लोकप्रिय बनी हुई है।

अगर हम इतिहास का अवलोकन करें तो हम पाएंगे कि हिन्दु तथा चीनी सभ्यताओं के अलावा उनकी समकालीन अन्य सभ्यताएं थीं ग्रीक, रोमन, इजिप्शियन, मेसोपोटामियन, माया, इंका तथा एजटेक। इन सभ्यताओं के अतिरिक्त हजारों ऐसे समाज थे जिनके अपने रीति-रिवाज थे, अपनी पूजा पद्धति थी और अपनी विशिष्ट जीवन-शैली थी। इन सभी सभ्यताओं का आज कहीं नामो-निशान नहीं है। आखिर वे कहां गयीं? उन्हें न तो आसमान खा गया, न ही पृथ्वी निगल गयी। ये सभी सभ्यताएं आज के दो प्रमुख पंथों-ईसाई एवं इस्लाम द्वारा निगल ली गयीं। भारत के संदर्भ में हम इसका अवलोकन आगे करेंगे।

हमें यह समझ लेना आवश्यक है कि यह कोई पहली बार नहीं है जब हिन्दू समाज एक संकट से गुजर रहा है। पिछले हजार वर्षों में हम बराबर संकटों से गुजरते रहे हैं मगर हमने सदा अपनी आस्था और अस्मिता अक्षुण्ण रखी है। इस देश में इस्लाम एवं ईसाइयत के आने के पहले भी बहुत से लोग अपने सामाजिक रीति-रिवाज

तथा पूजा पद्धति के साथ आये। यहां ग्रीक, कुषाण, शक, हूण आदि का नाम लिया जा सकता है। सभी ने हिन्दुओं पर शासन किया। कोई साल-दो साल नहीं, सदियों तक। लेकिन बहुत जल्द ही वे सभी हिन्दू समाज में विलीन हो गये, बिना किसी मत-परिवर्तन समारोह के। यह हिन्दू समाज की उदारता एवं सहनशीलता का उदाहरण है। इस्लाम और ईसाइयत को भी आये सहस्राब्दी से ज्यादा समय हुआ। इन पंथों के अनुयायियों ने न केवल लगभग एक हजार वर्ष तक हमारे विभिन्न क्षेत्रों पर राज किया वरन् मत-परिवर्तन के लिए हिन्दू समाज को प्रलोभन देने से लेकर अमानुषिक अत्याचार तक किये, फिर भी हमने अपने धर्म को बचाये रखा।

आप भारत के इतिहास के इस पन्ने को किसी दूसरे देश के इतिहास से जरा मिलाकर देखें। इतिहास साक्षी है कि जहां भी मजहब प्रचार के माध्यम से या शासकों के माध्यम से, ये दोनों मत ईसाइयत एवं इस्लाम गये, उस देश की संस्कृति एवं सभ्यता मात्र कुछ ही वर्षों में खत्म हो गयी और लगभग समूची जनसंख्या शासकों या मजहब प्रचारकों के मजहब में परिवर्तित हो गयी। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हो सका हिन्दू समाज के साथ। मात्र कुछ वर्ष की तो बात ही क्या, हजारों वर्ष में भी नहीं। हमारे भविष्य के लिए यह समझना आवश्यक होगा कि हमने खुद को हजारों वर्षों की पराधीनता के बावजूद भी कैसे बचाए रखा। कैसे हिन्दू धर्म का प्रतीक एवं प्राण अक्षुण्ण बना रहा।

भारतीय यानी हिन्दू परम्परा में राजनीति एवं शासकों को कभी भी न तो समाज से ऊपर स्थान दिया गया और, न ही उन्हें समाज को जोड़ने का कारक माना गया। भाषा को भी सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकजुटता से नहीं जोड़ा गया। अगर कोई चीज मुख्य थी तो वह थी भारतवर्ष की धार्मिक एवं सांस्कृतिक भौगोलिक सीमाएं तथा उस पूरे क्षेत्र में फैले धार्मिक, सामाजिक एवं आस्थाओं से जुड़े स्थानों पर्वतों, नदियों, नगरों आदि पर सबका सामूहिक अधिकार। ऐसा भी नहीं था कि ये सभी धार्मिक, सामाजिक एवं आस्थाओं के स्थान किसी क्षेत्र विशेष में हैं, जैसा कि अन्य मत-पंथों- यहूदी, ईसाई तथा इस्लाम में है। ये पूरे भारतवर्ष में फैले हुए हैं। उदाहरण के लिए, पुराणों में अर्चना में सात नदियों का जल पवित्र बताया गया है-

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

एक दूसरा उदाहरण हम लेते हैं मोक्षदायी तीर्थ स्थलों का-

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैप्ता मोक्षदायिका:॥

इसी तरह आदि शंकर द्वारा स्थापित मठों की भौगोलिक स्थिति तथा पवित्र धामों की स्थिति को देखें तो आप पाएंगे कि भारतवर्ष की भौगोलिक एकता राजनीति एवं राज्य से नहीं वरन् समाज एवं धर्म से निर्धारित रही है।

भारतवर्ष के पूरे भौगोलिक क्षेत्र में सैकड़ों राज्य रहे होंगे तथा हजार वर्ष से अधिक इस्लाम तथा ईसाइयत के मानने वालों ने विभिन्न भागों में राज किया लेकिन इससे हिन्दुओं की सामाजिक एवं धार्मिक एकजुटता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। राजनीतिक बिखराव तथा शासकों के मत को भी हिन्दू समाज समाहित करता रहा है।

धर्म एवं संस्कृति के अतिरिक्त एक और महत्वपूर्ण बात है जिसने पूरे समाज को हजारों वर्ष तक न केवल बचाए रखा वरन् पुष्पित पल्लवित भी किया। वह है समाज के सभी लोगों की एक दूसरे के प्रति जिम्मेदारी एवं भागीदारी। सामाजिक परम्परा से लेकर शिक्षा एवं वंचितों के भरण-पोषण की जिम्मेदारी समाज खुद उठाता रहा है। हिन्दू समाज ने कभी भी शासकों को पालक या प्रतिपालक के रूप में नही देखा। वास्तव में समाज अपने आप में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सैद्धान्तिक रूप से पूर्ण था।

इस कड़ी में मैं मात्र दो उदाहरण देना चाहूंगा। सम्पूर्ण हिन्दू परम्परा एवं साहित्य में कोई ऐसा उदाहरण नहीं मिलता कि एक साधन सम्पन्न व्यक्ति का पड़ोसी या कि पूरा का पूरा गांव भुखमरी का शिकार हो और वह व्यक्ति शान-शौकत से रहे या कि लोगों की विवशताओं का फायदा उठाने की कोशिश करे। लोगों की विवशताओं का फायदा उठाना अक्षम्य सामाजिक अपराध है। आज भी ऐसा है। पिछले वर्ष अमरीका में आए समुद्री तूफान तथा उसी समय मुम्बई में आई बाढ़ को हमें याद करना चाहिए। एक तरफ जहां अमरीका में इस भीषण त्रासदी को लूट-पाट, हत्या, बलात्कार आदि का अवसर माना गया, वहीं मुम्बई में लोगों की हर तरह से मदद करना धार्मिक एवं सामाजिक जिम्मेदारी माना गया। यह है हमारी सांस्कृति विरासत।

एक दूसरा उदाहरण मैं लेता हूं शिक्षा के क्षेत्र से।

ऋग्वैदिक काल से लेकर अंग्रेजों के आगमन तक शिक्षा के सभी संसाधन जुटाना समाज की जिम्मेदारी थी। बिना किसी भेदभाव के शिक्षा चाहने वालों को उनकी इच्छानुसार शिक्षा देना विद्यालय एवं आचार्य का कर्तव्य था। इसका परिणाम यह था कि समाज में १८वीं शताब्दी में शिक्षितों का प्रतिशत ८० से ऊपर था। आज हम कहां हैं, कहने की आवश्यकता नहीं है।

– आशा के दीप

मैं अपने तमाम मित्रों की निराशा कि हिन्दू समाज बिखर रहा है अवसान की ओर बढ़ रहा है, से कतई सहमत नहीं हो पाता। इसके कई कारण हैं और ये सभी कारण सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक हैं। राजनीति की बात तो मैं बिल्कुल नहीं करता। यह दूषित, कलुषित एवं विकृत हो चुकी है। ऐसे दूषित एवं विकृत माहौल में भी हम प्रगति के पथ पर निरन्तर शिखर की ओर बढ़ रहे हैं। विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में हमारी गिनती विश्व में अग्रणियों में होती है। भारतीय कम्पनियां आज यूरोप तथा अन्य तमाम देशों की कम्पनियों को अपने में समाहित कर रही हैं। आवश्यकता है तो सिर्फ एक बात की कि प्रगति में आर्थिक संरचना ऐसी हो कि इसका लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुंच सके। शिक्षा को ऐसा बनाएं कि यह पहले की भान्ति सब तक पहुंच सके।

मुझे रंच मात्र भी संदेह नही है कि हिन्दू समाज आज के विकृत राजनीतिक माहौल पर भी विजय पाएगा। जरूरत है तो सिर्फ समाज को बराबर उसकी अपनी जिम्मेदारियों की याद दिलाते रहने की। पहले की भान्ति हमें अपने भविष्य को सरकार के हाथों नहीं सौंपना चाहिए। विभिन्न परिस्थितियों में आज भी हिन्दू समाज ने दर्शाया है कि वह अपने सामाजिक दायित्वों से विमुख नहीं है। समाजसेवियों एवं समाजसेवी संगठनों को राजनीतिक गंदगी से विमुख होकर वास्तव में समाज संरचना की ओर ध्यान केन्द्रित करना होगा।

(पाचजन्य से साभार)

कलम, आज उनकी जय बोल

–रामधारी सिंह 'दिनकर,

जला अस्थियाँ बारी-बारी,
छिटकायी जिसने चिनगारी
जो चढ़ गये पुण्य-वेदी पर,
लिए बिना गरदन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक किनारे,
जल-जल कर बुझ गये,
किसी दिन माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रहीं लू-लपट दिशाएँ,
जिनके सिंहनाद से सहमी,
धरती रही अभी तक डोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
अन्धा चकाचौंध का मारा
क्या जाने इतिहास बिचारा?
साखी हैं उनकी महिमा के सूर्य,
चन्द्र, भूगोल, खगोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

With Best Compliments From

☆ ☆ ☆

DHANWANTRA

Medical & Law Book House

Legal & Medical Book Shop/

Agents Govt. Publications.

☆ ☆ ☆

592, Lajpat Rai Market,

(Opposite Arya Samaj Dewan Hall)

Chandni Chowk Delhi-110006

Phone 23866768

महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और शुद्धि

—हरबंसलाल कोहली

महर्षि दयानन्द के कर्मक्षेत्र में उतरने से बहुत पहले हिन्दुओं ने विधर्मी बन गये लोगों के लिए शुद्ध होकर पुनः वैदिक धर्म में आने का मार्ग बन्द कर दिया था। ऋषि दयानन्द ने इस द्वार को पुनः खोल दिया। लोग शुद्ध होकर वैदिक धर्म में आने लगे। यह कट्टरपंथी अहिन्दुओं के हृदयों के लिए भारी आघात था। वे सारे भारत से शिखा-सूत्र मिटा देने के सपने देख रहे थे। उनके क्रोध का कारण यह था कि जिस जाति को वे अपना ग्रास समझते थे, वह अब अचेतन सी नहीं रही थी। समझदार मुसलमान भी अब यह मानने लगे हैं कि जैसे मुसलमानों को तबलीग (हिन्दुओं को मुसलमान बनाने) का अधिकार है, वैसे ही हिन्दुओं को भी शुद्धि का अधिकार है।

बलिदान

शुद्धि के महान् और विस्तृत कार्य को देखकर कुछ कट्टरपंथी मुसलमानों ने सीधा मार्ग ग्रहण करने के स्थान पर आर्यों और हिन्दुओं को भयभीत करने के लिए आतंकी मार्ग का अवलम्बन किया। शुद्धि का कार्य बन्द करने के लिए पंडित लेखराम के प्राण लिये गये। महर्षि दयानन्द जी द्वारा देहरादून में एक मुसलमान को अपने कर कमलों से शुद्ध करने का वर्णन है, जिसका नाम था:– मोहम्मद उमर वल्द ख्वाजा हुसैन। उसे शुद्ध करके स्वामी जी ने अलखधारी नाम दिया, जो बाद में आर्यसमाज का एक अत्यन्त उत्साही कार्यकर्ता बना और उसने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए अपनी समस्त शक्ति लगा दी।

ब्राह्मणों के अतिरिक्त अन्य सभी वर्णों के लोगों को हिन्दू समाज के कट्टरपंथी मनुष्य ही नहीं समझते थे। महर्षि ने इन उपेक्षितों को अहसास कराया कि तुम भी मनुष्य हो, तुममें ईश्वर का जो प्रकाश है, वह किसी ब्राह्मण से कुछ कम नहीं है। यह चेतावनी काम कर गयी और जड़ता-ग्रस्त समाज में नव चेतना का संचार होने लगा।

तब हिन्दू धर्म में निष्ठा और आस्था रखने वालों में यह धारणा व्याप्त थी कि जो व्यक्ति जन्म से हिन्दू नहीं होता था, वह किसी काल में भी हिन्दू नहीं हो सकता। अन्य धर्मों के प्रवर्तकों ने विभिन्न मतावलम्बियों को अपने धर्म में दीक्षित करने का सतत प्रयत्न किया है; और अपने मतानुयायियों की संख्या बढ़ायी है। कोई व्यक्ति किसी भी धर्म या मत का माननेवाला हो, वह उक्त धर्म प्रवर्तकों में से किसी का भी पन्थ ग्रहण करने को स्वतन्त्र है। मुसलमान नेता हिन्दू अथवा ईसाइयों को मुसलमान बना सकते हैं, ईसाई पादरी किसी हिन्दू अथवा मुसलमान को अपने धर्म में ले सकते हैं, पर स्वामी दयानन्द के समय से पहले कोई हिन्दू कभी किसी विधर्मी को अपने धर्म में लेने का साहस या इच्छा नहीं करता था। जन्म से ही कोई व्यक्ति हिन्दू कहलाने के योग्य होता था, शुद्धि से नहीं। यह प्रवृत्ति घोर आत्मघाती थी। महाभारत के युग तक हिन्दूधर्म में अनेक विधर्मी दीक्षित हुए, सन्देह नहीं, पर इसके बाद 'म्लेच्छों' के विरुद्ध अपनी 'रक्षा' करने के लिए एक जबरदस्त चाहरदीवारी लोगों ने खड़ी कर दी थी। स्वामी जी ने देखा कि इससे जाति अत्यन्त दुर्बल पड़ती जाती है। उन्होंने शुद्धि पर जोर दिया। उनकी मृत्यु के बाद अनेक राजपूत मुसलमान हिन्दू धर्म में पुनः दीक्षित किये गये और इससे हमारी जाति में कितना बल आ गया है। स्वामी श्रद्धानन्द को इस महत उद्देश्य के कारण शहीद होना पड़ा। आर्य समाज ने शुद्धि और संगठन का भी प्रचार किया। सन् 1929 ई० में मोपला (मालाबार) में मजहबी उन्मादियों ने भयानक विद्रोह किया और उन्होंने पड़ोस के हिन्दुओं को जबरदस्ती विधर्मी बना लिया। आर्यसमाज ने इस विपत्ति के समय छाती खोली और कोई ढाई हजार भ्रष्ट परिवारों को फिर से हिन्दू बना लिया। इसी काण्ड के बाद आर्यसमाजियों ने राजस्थान के मलकाना-राजपूतों की शुद्धि आरम्भ की। जब अन्य धर्म वालों को यह अधिकार है कि वे चाहे जितने हिन्दुओं को क्रिस्तान या मुसलमान बना सकते हैं, तब धर्म-भ्रष्ट हिन्दुओं को फिर से हिन्दू बना लेने में क्या अन्याय है?

ईसाइयत और इस्लाम के आक्रमणों से हिन्दुत्व की रक्षा करने में जितनी मुसीबतें आर्यसमाज ने झेली हैं, उतनी किसी और संस्था ने नहीं। सच पूछिये तो उत्तर भारत में हिन्दुओं को जगाकर उन्हें प्रगतिशील पथ पर बढ़ाने का सारा श्रेय आर्यसमाज को ही जाता है।

प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. हरिदत्त वेदालंकार लिखते हैं–"पिछली सदी के किसी अन्य समाज सुधारक को इस बात की कल्पना भी नहीं हुई कि वह विधर्मियों को हिन्दू समाज में मिलाने की व्यवस्था करे। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज को ही इस बात का श्रेय है कि इस व्यवस्था से उन्होंने हिन्दू जाति को सबल और क्रियाशील बनाया।"

विख्यात कवि और स्वतंत्रता सेनानी- सुब्रह्मण्यम भारती

उनके गीत सुनकर मुर्दे भी जी उठते थे

सुप्रसिद्ध कवि और स्वतंत्रता सेनानी सुब्रह्मण्यम् भारती का जन्म ११ दिसम्बर १८८२ को तमिलनाडु के तिरूनेलवेलि जिले के एट्टयपुरम् नामक स्थान पर हुआ था। उनके पिता चिन्नस्वामी अय्यर तथा माता लक्ष्मी देवी थे। चिन्नस्वामी एट्टयपुरम् के राजा के दरबार में उच्च स्तर के दरबारी थे। बालक सुब्रह्मण्यम् को प्यार से सभी सुब्बैया कह कर बुलाते थे जब वे पांच वर्ष के हुए तभी उनकी माता का देहान्त हो गया। पिता जी ने दूसरा विवाह किया। सुब्बैया की नयी माता (विमाता) बड़ी सरल हृदयवाली महिला थी। उन्होंने सुब्बैया का लालन पालन स्वयं के पुत्र की भान्ति ही किया। सुब्बैया कुछ बड़े हुए तो कभी-कभी पिता के साथ राजदरबार में जाने लगे। वे बाल्यावस्था से ही कविता लिखने में रुचि लेते थे। **१८९३ में, जब सुब्बैया की आयु मात्र ११ वर्ष की थी, एट्टयपुरम् के राज कवियों की सभा में उन्होंने भी कविता सुनाई। बाल-कवि की अद्भुत कविता पर खुश होकर राजा ने सुब्बैया को "भारती" उपाधि से सम्मानित किया। तभी से उनका पूरा नाम सुब्रह्मण्यम् भारती हो गया।** भारती ने छोटी उम्र में ही तामिल भाषा में दक्षता प्राप्त कर ली। १५ वर्ष की आयु में वे पढ़ने के लिये काशी चले गये। **काशी में उन्होंने हिन्दी और संस्कृत भाषाएं सीखीं तथा धर्म व दर्शन का गहन अध्ययन किया।**

जीवन की दिशा

उनकी प्रसिद्धि सुनकर एट्टयपुरम् के राजा ने उन्हें अपने राज्य में राजकवि के रूप में आमन्त्रित किया। वे राजा के निमन्त्रण पर काशी से एट्टयपुरम् चले गये तथा कुछ समय राजदरबार में राजकवि के रूप में रहे। लेकिन राज्यबन्धन उन्हें रास नहीं आया और शीघ्र ही वे राजदरबार के बंधन से मुक्त हो गये।

उन्हीं दिनों उनकी पहली कविता "तनिमै इरक्कम्" मदुरा (मदुरै) से प्रकाशित 'विवेक भानु' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई। उन्होंने कुछ दिनों मदुरा (मदुरै) के सेतुपति कॉलेज में तमिल के प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। उसके बाद भारती मद्रास (चेन्नई) आ गये और **वहाँ "शुदेश मित्रन" नाम से तमिल दैनिक में उपसंपादक के रूप में कार्य करने लगे।**

यद्यपि यह दैनिक पत्र राष्ट्रीय भावनाओं का सशक्त माध्यम था किन्तु कानून के नियमों की सीमाओं में बंधा हुआ था। **भारती को राष्ट्र-भक्ति पर अंकुश स्वीकार नहीं था इसलिए उन्होंने अपनी एक स्वतंत्र पत्रिका "चक्रवर्तिनी" शुरू की। इस पत्रिका के माध्यम से सुब्रह्मण्यम् राष्ट्रभक्ति के भावों को जगाने लगे।** इसी पत्रिका में सन् १९०५ में उन्होंने बंकिमचन्द्र के सुप्रसिद्ध राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' का तमिल अनुवाद विवरणात्मक लेख के साथ प्रकाशित किया।

स्वतंत्रता आन्दोलन एवं राष्ट्र प्रेम

सुब्रह्मण्यम् भारती अपनी पत्रिका के माध्यम से राष्ट्र-भक्ति के भाव जगाने के साथ-साथ उस समय चल रहे विभिन्न आन्दोलनों में भी भाग लेने लगे। **सन् 1906 में वे दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में कोलकाता में सम्पन्न हुए कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने गये। चेन्नई लौटकर वे स्वाधीनता आन्दोलनों में बढ़-चढ़कर भाग लेने लगे।** इन्हीं दिनों 'इंडिया' साप्ताहिक पत्रिका के मालिक श्री तिरूमलाचारी ने उन्हें अपनी पत्रिका का सम्पादक बनाया। इसी काल में वे लाला लाजपतराय, बालगंगाधर तिलक और महर्षि अरविन्द घोष के सम्पर्क में आए। सुब्रह्मण्यम् जी ने **पत्रकारिता के साथ ही अपनी कविताओं और सम्पर्कों के माध्यम से राष्ट्र-जागरण के कार्य को आगे बढ़ाया।**

अत्याचारी शासन से संघर्ष

भारती के गीत जनता के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हुए। इससे **अत्याचारी अंग्रेजों की भारती जी तथा 'इंडिया' पत्रिका की ओर वक्र दृष्टि हो गई। उनके द्वारा स्वराज्य दिवस के आयोजन ने आग में घी का काम किया और अंग्रेजों ने इसके खिलाफ मुकदमा शुरू कर दिया। इस मुकदमें में स्वराज्य दिवस के आयोजकों को सजा सुनाते हुए अंग्रेज जज ने कहा, "भारती के गीतों को सुनकर मुर्दा भी जी उठेगा। पराधीन भारत पांच मिनटों में ही स्वाधीन हो जायेगा।" परिणाम स्वरूप भारती के गीतों को गाना देश द्रोह घोषित हो गया।** सुब्रह्मण्यम् फिर भी 'इंडिया' के माध्यम

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

५७ के स्वातन्त्र्य समर के एक भूले शहीद

क्रान्तिवीर बरजोर सिंह

सन् ५७ के प्रथम स्वातंत्र्य समर में देश के कोने-कोने में स्वतंत्रता प्रेमियों ने अंग्रेजों को कड़ी चुनौती दी थी। इस महासंग्राम में देश की जनता ने भी क्रांतिकारियों का पूरा साथ दिया। क्रांति के इस महायज्ञ में अनेक वीरों ने अपने जीवन की आहुतियाँ दी थीं। उनमें से कुछ शूरमा ऐसे भी थे जो जीवन भर अंग्रेजों से संघर्ष करते रहे लेकिन कभी अंग्रेजों की गिरफ्त में नहीं आए। ऐसे ही एक योद्धा थे बरजोरसिंह। झांसी और कालपी के मध्य में स्थिति बिलायांगढ़ी के बरजोरसिंह ने अंग्रेजों का सामना करने के साथ-साथ क्षेत्र में जनसम्पर्क द्वारा जनजागृति का महत्वपूर्ण कार्य किया। जब झांसी की रानी लक्ष्मीबाई झांसी से कालपी जा रही थीं तो रास्ते में बरजोरसिंह ने उनसे भेंट की। रानी के निर्देशानुसार इस वीर ने क्षेत्र के गाँव-गाँव में घूम-घूम कर जनजागरण कर क्रांतिकारियों की शक्ति को कई गुणा बढ़ा दिया। बरजोरसिंह ने कालपी की लड़ाई में प्राणप्रण से भाग लिया। लेकिन दुर्भाग्यवश २३ मई १८५८ को कालपी भी स्वातंत्र्य सैनिकों के हाथ से निकल गयी। बरजोरसिंह ने अब झांसी-कालपी मार्ग के प्रमुख ठिकानों के स्वतंत्रता प्रेमियों को संगठित करके अंग्रेजों की नींद हराम कर दी। उन्होंने अपने साथियों गंभीर सिंह तथा देवीसिंह मोठ के साथ ब्रिटिशों के ठिकानों पर हमले शुरू कर दिये।

उधर झांसी की रानी ने ग्वालियर पर कब्जा कर अंग्रेजों को करारा तमाचा लगाया तो इधर बरजोर सिंह ने अंग्रेजों के ठिकानों को कब्जे में लेना शुरू कर दिया। कालपी के बाद बिलयां गढ़ी क्रांतिकारियों का केन्द्र बन गई। झांसी के क्रांतिकारी काले खाँ, बंनजोर सिंह, दौलत सिंह, गंभीर सिंह तथा देवी सिंह के साथ-साथ सैदनगर, कोंटरा, संवढ़ा, भांडेर आदि अनेक स्थानों के सैंकडों स्वतंत्रता प्रेमी बिलायां में एकत्रित हो गये। ३१ मई १८५८ को मेजर ओर के नेतृत्व में एक बड़ी सेना ने बिलायां गढ़ी पर हमला कर दिया। ब्रिटिश की तोपों ने गढ़ी पर गोलाबारी शुरू की तो बरजोर सिंह घोड़े पर सवार होकर तथा ध्वज लेकर अपने साथियों सहित मैदान में आ डटे। क्रांतिवीरों ने भीषण युद्ध किया। इस युद्ध में अंग्रेजों को बुरी तरह से रौंदते हुए बरजोर सिंह भी घायल हो गये। तब उनके कुछ साथी उन्हें अश्व से उतार कर बेतवा की ओर ले गये तथा एक साथी मोती गूजर बरजोर सिंह के घोड़े पर ध्वज लेकर युद्ध में सन्नद्ध हो गया। अंग्रेजों को बरजोर सिंह के निकलने का पता भी न चला। स्वातंत्र्यवीरों ने गोरों की सेना से जमकर लोहा लिया। अन्त में मोती गूजर व अन्य ३४ सैनिकों को बन्दी बना लिया गया। इस युद्ध में लगभग डेढ़ सौ क्रांतिकारी शहीद हुए। मोती गूजर को अंग्रेजों ने फाँसी के फंदे पर लटका दिया। बरजोर सिंह ने कुछ ही दिनों में स्वस्थ होकर पुनः ब्रिटिश सत्ता का विरोध शुरू कर दिया।

बरजोर सिंह अब तात्या के दाहिने हाथ बन गये। तात्या के उस क्षेत्र में क्रांति की गतिविधियों की बागडोर अब बरजोर ने संभाल ली। उन्होंने अंग्रेजों के साथ छुटपुट लड़ाइयाँ लड़ते हुए संघर्ष जारी रखा। २ अगस्त १८५८ को क्रान्ति सेना ने उनके नेतृत्व में जालौन के अंग्रेज समर्थक शासक को हटाकर जालौन अधिकार कर लिया। बरजोर सिंह की सेना और अंगेजों के युद्ध में ४ सितम्बर १८५८ को महू-मिहौनी तथा ५ सितम्बर को सरावन-सहाव की लड़ाई विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन लड़ाइयों में स्वतंत्रता प्रेमियों ने अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिये। अंग्रेजी शासकों ने उन्हें मारने या पकड़ने के अनेक प्रयास किये लेकिन वे जीवन भर विदेशियों की पकड़ में नहीं आये। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में वे अपनी बहिन के पास पलेरा (जिला टीकमगढ़, म.प्र.) चले गये जहां १८६९ में उनका निधन हो गया।

बरजोर सिंह की स्मृति में बिलायां में १९७२ में एक स्मारक बनाया गया जो आज भी मौजूद है।

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। हिन्दी का प्रचार प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अतः आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपि में ही लिखने का निर्णय करें। –संपादक

मलयेशिया जहां शिकायत करने वाले माने जा रहे हैं हिन्दू आतंकवादी

—जवाहरलाल कौल

मलयेशिया में भारतवंशी हिन्दू उत्पीड़न दमन और उन्माद के त्रिताप से उत्पीड़ित हैं उनकी व्यथा-कथा का वर्णन अपने इस लेख में वरिष्ठ पत्रकार श्री जवाहरलाल कौल ने किया है। गणराज्य भारत की वर्तमान सरकार से भी मलयेशिया के इन भारतवंशियों ने जो आशा लगायी थी- किन्तु

कहने को मलयेशिया एक आधुनिक, विकसित और लोकतांत्रिक देश है लेकिन व्यवहार में मलयेशिया आर्थिक रूप से आधुनिक देश होने के बावजूद न तो धर्मनिरपेक्ष है और न लोकतांत्रिक। लोकतंत्र का हाल यह है कि वह सामान्य विरोध को भी सहन नहीं कर पाता

मलयेशिया के प्रधानमंत्री को संतोष है कि भारत सरकार ने 'हिन्दू फोर्स' के नेताओं से मुलाकात नहीं की। इस तरह भारत सरकार ने मलयेशिया के अंदरूनी मामलों में दखल देना उचित नहीं समझा। हिन्दू संगठन को नेताओं को मिलने का समय न देकर प्रधानमंत्री ने दरअसल मलयेशिया के साथ रिश्तों में आई दरार को पाटने की राजनयिक कोशिश ही की। लेकिन सवाल है कि क्या वह दरार पट जाएगी? पिछले मास जो आंदोलन एक उग्र प्रदर्शन के रूप में मलयेशिया की राजधानी की सड़कों पर फूट पड़ा वह न तो अचानक पैदा हुआ था और न सरकारी दमन से शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। दरअसल मलयेशिया में भारतीय मूल के नागरिक कई बरसों से भेदभाव की शिकायतें करते रहे हैं। क्योंकि इन नागरिकों में अधिकतर हिन्दू हैं इसलिए धार्मिक भेदभाव सबसे संवेदनशील मुद्दा बनता जा रहा था। मंदिरों को हटाने या स्थानान्तरित करने की कार्रवाइयां काफी समय से होती रही हैं लेकिन इस मामले में सरकारी बेरुखी तब प्रकाश में आई जब राजधानी के पास ही एक प्राचीन मंदिर को सरकारी देख-रेख में ही गिरा दिया गया। मलयेशिया में भारतवंशियों की जनसंख्या 8 प्रतिशत है लेकिन वे कभी भी एक ही मंच पर नहीं आ पाए हैं। राजनीतिक स्तर पर भारतवंशियों की एक पार्टी का कुछ महत्व तो बन गया है और वह वर्तमान सरकार में शामिल भी है। लेकिन सरकार को वह महत्वपूर्ण मामलों में प्रभावित करती है इस पर संदेह है। धार्मिक मामले की आजादी में इस पार्टी का विरोध इतना कमजोर था जिसे अधिक से अधिक औपचारिक ही कहा जा सकता है। इसलिए भारतवंशियों के एक वर्ग में असंतोष की भावना बढ़ती जा रही थी। इसी का परिणाम 'हिन्दू अधिकार फोर्स' के रूप में सामने आया।

मलयेशिया के भारतवंशियों की शिकायत है क्या? उन पर आरोप है कि उन्हें अच्छी नौकरियों से बाहर रखा जाता है। उसके कारण उन्हें मजदूरी और चौथे दर्जे की नौकरियों पर ही गुजारा करना पड़ता है। इसके पीछे उन्हें एक सुनियोजित षड्यंत्र दिखाई देता है क्योंकि बराबर की योग्यता के बावजूद भारतीय उम्मीदवारों के बदले मलय या चीनी उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जाती है। यही हाल उच्च शिक्षा के बारे में भी है। इस सबका नतीजा यह निकला है कि सौ साल के बाद भी अधिकतर भारतीय आर्थिक रूप से बुरी हालत में ही रहने पर मजबूर हैं। मलयेशिया के अधिकारी इन आरोपों का खंडन करते हैं। उनके अनुसार भारतवंशियों से बुरा सलूक नहीं किया जाता और उनके हितों का पूरा ध्यान रखा जाता है। इसके पक्ष में वे भी अपनी ओर से आंकड़े पेश करते हैं जिससे यह साबित होता है कि भारतीय नागरिक बड़े पदों पर भी आसीन हैं। मलयेशिया सरकार का दावा आंशिक रूप से सही है। लेकिन हिन्दू संगठन के नेता भी एकदम गलत नहीं हैं। इस विरोधाभास को समझने के लिए मलयेशिया में भारतीय मूल के विभिन्न वर्गों के अनुपात पर ध्यान देना होगा। देश की आठ प्रतिशत आबादी में भारतवंशियों में व्यापारी हैं, विशेष प्रतिक्षित कर्मचारी हैं जो विभिन्न कंपनियों में काम करते हैं और चिकित्सक हैं जिनकी वहां काफी अच्छी साख है। साफ है कि ये सभी वर्ग आर्थिक रूप से कमजोर नहीं हैं। उन्हें आर्थिक भेदभाव की भी शिकायत नहीं है क्योंकि उनकी मलयेशिया को आवश्यकता है। लेकिन बड़ी संख्या में मलयेशिया में वे लोग भी रहते हैं जो वहां मजदूरों के रूप में गए थे। सच तो यह है कि उन्नीसवीं सदी में अंग्रेज ही उन्हें भारत से मलयेशिया ले गए थे। उन दिनों मलयेशिया मलाया प्रायद्वीप कहलाता था और

एकदम अविकसित था। ऐसे लोगों का बहुमत है जो या तो मजदूरों की हैसियत से बसाए गए या सिंगापुर, इंडोनेशिया होकर पिछले दो सौ सालों में वहां बसने गए। उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, इस बात को मलयेशिया सरकार छुपा रही है। संयोग है कि इनमें से अधिसंख्य दक्षिण भारतीय तमिल हैं। यही वर्ग आंदोलित है। लेकिन भारतीय मूल के समाज का संपन्न वर्ग इनके साथ दूरी बनाए रखता रहा है। यही बात मलयेशिया सरकार को इनको नजरअंदाज करने को प्रेरित कर रही है। मलयेशिया में भारतीय मूल के लोगों की सबसे बड़ी पार्टी 'मलेशियन इंडियन कांग्रेस' ने आंदोलनकारियों से पल्ला झाड़ते हुए कहा कि 'हिन्दू राइट्स फोर्स' भारतवंशियों की प्रतिनिधि पार्टी नहीं है। मलेशियन इंडियन पार्टी के नेता 'सामी वेल्लू' प्रधानमंत्री अब्दुल्ला बदावी की सरकार में मंत्री भी हैं।

पिछले महीने भारतीय मूल के लोगों ने मलयेशिया की राजधानी में एक बहुत बड़ा प्रदर्शन किया। इसे मलयेशिया सरकार ने कठोरता से दबाने की कोशिश में न केवल बल प्रयोग किया अपितु कई प्रदर्शनकारियों को विभिन्न प्रकार के आरोपों में गिरफ्तार भी किया। जब इस समाचार से उत्तेजित तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने इसके विरुद्ध बयान दिया तो मलयेशिया सरकार की प्रतिक्रिया बहुत तीखी थी, जिस में राजनयिक शिष्टाचार को भी ताक पर रखा गया था। मलयेशिया के प्रवक्ता ने करुणानिधि से कहा कि वे चुप बैठें और पहले घर के ढेर सारे मामले सुलझाएं। इस तीखी प्रतिक्रिया का कारण यह था कि करुणानिधि ने आमतौर पर भारतवंशियों की नहीं, केवल तमिलों की रक्षा का सवाल उठाया था। लगता है मलयेशिया सरकार को इस संगठन को तमिल टाइगर्स से प्रेरित घोषित करने का अवसर मिल गया। इसी आधार पर उनके विरुद्ध ऐसे कानून का इस्तेमाल किया गया जिसे आतंकवाद को काबू करने के लिए बनाया गया था। आतंकवादी रुझान के आरोपों का खंडन करते हुए हिन्दू फोर्स के कानूनी सलाहकार ने कहा है कि आंदोलन को दबाने के लिए सरकार संगठन को बदनाम कर रही है ताकि दूसरे देश मदद न कर सकें। आतंकवादियों के साथ रिश्तों की बात सही हो या नहीं मलयेशिया की सरकार भारत सरकार को प्रभावित करने में सफल हो गई है। न केवल प्रधानमंत्री इस संगठन के नेताओं से नहीं मिले, विदेशमंत्री ने कहा कि आतंकवादी तो आतंकवादी ही होता है उसका कोई धर्म नहीं होता। यानी मलयेशिया में आंदोलन करने वाले आतंकवादी ही हो सकते हैं। भारतीय मूल के इस आंदोलन को मलयेशिया की शासन व्यवस्था के व्यापक संदर्भ में देखा जाना चाहिए। कहने को मलयेशिया एक आधुनिक, विकसित और लोकतांत्रिक देश है लेकिन व्यवहार में मलयेशिया आर्थिक रूप से आधुनिक देश होने के बावजूद न तो धर्मनिरपेक्ष है और न लोकतांत्रिक। मलयेशिया की ६० प्रतिशत आबादी मलय है जो सभी मुसलमान हैं। दूसरे स्थान पर चीनी मूल के लोग आते हैं। भारतीयों का स्थान तीसरा है। लेकिन व्यवहार में मलयेशिया एक मुस्लिम देश ही है और कोई भी सरकार मुस्लिम नेताओं के विरुद्ध नहीं जा सकती। चीनी आबादी से छेड़छाड़ करना आसान नहीं। भारतीय मूल के लोगों पर दबाव सबसे आसान होता है विशेषकर जब कि वे बंटे हुए हों। लोकतंत्र का हाल यह है कि मलयेशिया सामान्य विरोध को भी सहन नहीं कर पाता। साधारण आंदोलनों और प्रदर्शनों को संभालना प्रशासन के बस की बात नहीं रह गई है। पिछले ही सप्ताह मलयेशिया के कुछ वकीलों ने मानवाधिकारों के लिए एक प्रदर्शन किया। पुलिस ने वकीलों को मार-मार कर भगाया और गिरफ्तार किया। पर मलयेशिया में अभिव्यक्ति पर बहुत दिनों तक अंकुश नहीं लग सकेगा, क्योंकि आधुनिक बाजारवाद और अधिनायकवाद साथ-साथ नहीं चल सकते।

(पृष्ठ ४ का शेष)

मीडिया को तो खैर हिन्दू विरोधी विचारधाराओं का डर बनने में शायद कोई बौद्धिक या त्रासद सुख मिलता होगा। पर संघ और विहिप को क्या हो गया? वे क्यों गुजरात विधानसभा में हिन्दुत्व के इस प्रवाह के विरोधी नजर आए? क्यों उदासीन नजर आए? केसुभाई, काशीराम जैसे अतिरिक्त महत्वाकांक्षी नेता नरेन्द्र मोदी के खिलाफ हिन्दुत्व विरोधियों के साथ मिलकर मोर्चाबन्दी करते नजर आए, इसे उनके विचारधारा-भटकाव का नतीजा ही माना जा सकता है। हमारा काफी समय से मानना रहा है कि बेशक संघ-विहिप हिन्दुत्ववादी संगठन हैं, पर उनके पास विचारधारा को सुपरिभाषित करने की, उसे जन-सामान्य तक पहुंचाने की और उसे राजनीतिक सत्व प्रदान करने की क्षमता का विकास होना अभी बाकी है। चूंकि वैसा नहीं हो पाया है, इसलिए वे कभी वाजपेयी तो कभी केसुभाई, कभी वाघेला तो कभी काशीराम जैसों के विचारधारा-विरोधी उभार को तो रोक ही नहीं पाते, बल्कि खुद भी ऐसे भटकाव का शिकार हो जाते हैं, जैसे कि इस बार गुजरात चुनावों के दौरान साफ-साफ दिखा। मीडिया की तरह उन्हें भी दीवार पर लिखा सच पढ़ने की जरूरत है कि देश की पचासी प्रतिशत जनता क्या चाह रही है।

(लेखक 'राज सरोकार' न्यूज मैग्जीन के कार्यकारी सम्पादक हैं)

पुण्य स्मरण

दयानन्द संस्थान के प्रमुख सहयोगी

उत्तम चन्द इसराणी थे महान कर्मयोगी

–राकेश रानी

दयानन्द संस्थान की स्थापना के समय जिन स्व संस्कृति निष्ठ कर्मयोगियों ने अपने सहयोग का वरदहस्त बढ़ाया उनमें से एक थे भोपाल के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री उत्तम इसराणी। संस्थान के हर अनुष्ठान, हर अभियान में उन्होंने सहयोग दिया ही, जनज्ञान' को भी उनका नियमित सहयोग प्राप्त रहा। गत पाँच दिसम्बर को अपनी नश्वर काया का त्याग कर चिर विदाई ले गए। इसराणी जी हिन्दुत्वनिष्ठा का प्राणवान प्रतिमान थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और अन्य अनेक सामाजिक संगठनों के माध्यम से वह अपनी महाप्रयाण बेला तक हिन्दु हित साधन के अपने संकल्पित पथ पर अडिग रहे। कुछ दिन पूर्व जबलपुर में हुए हृदयाघात के बाद उन्हें भोपाल लाकर चिरायु अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

श्री इसराणी का जन्म २० नवम्बर १८२३ को सिंध प्रान्त (जो अब पाकिस्तान मे है) के सक्खर जिले की लाड़काया तहसील के एक ग्राम 'मियां जो गोठ में हुआ था। अपने बाल्यकाल से ही वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आकर हिन्दुत्व अभियान में सक्रिय सहयोगी हो गए थे। उन्हें भी भारत विभाजन की त्रासदी झेलते हुए अपना निवासस्थान त्यागना पड़ा था। वे सिंध से आकर भोपाल में बस गए थे। भोपाल आकर भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण दायित्वों का सफलता सहित निर्वहन किया। वह संघ के भोपाल विभाग कार्यवाह, फिर प्रान्त कार्यवाह और प्रान्त संघचालक जैसे दायित्वपूर्ण पदों पर आसीन रहे। अपने दायित्वों का सफलता सहित निर्वहन करने वाले श्री उत्तमचन्द इसराणी को कुछ वर्ष पूर्व ही क्षेत्र संघचालक का दायित्व सौंपा गया था। किन्तु बढ़ती आयु गिरते स्वास्थ्य आदि कारणों से लगभग एक वर्ष पूर्व उन्होंने क्षेत्र संघचालक पद के दायित्व से स्वयं को मुक्त करा लिया था। वे अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे। श्री इसराणी मनसा, वाचा कर्मणा हिन्दू संगठन अभियान में अपने योगदान के कारण हिन्दुत्व निष्ठ कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा स्रोत रहे। इस प्रसंग में यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि भोपाल में सिंधी कॉलोनी स्थित उनके आवास में ही वर्षों तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रान्तिय कार्यालय भी रहा। सिद्धान्तवादिता श्री इसराणी की व्यवहार विधा का मूलधार थी, सात्विकता और श्रेष्ठ आचरण से उन्होंने आर्य जीवन आदर्श को साकार किया था। अपने आदर्श जीवन, आदर्श व्यवहार, आदर्श विचार से वे संघ के स्वयंसेवकों के लिए नहीं अपितु समाज के सभी सार्वजनिक क्षेत्र में सक्रिय कार्यकर्ताओं के सम्मान का पात्र बने रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री कुप. सी. सुदर्शन ने श्री इसराणी के निधन पर श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहा था कि राष्ट्र हितार्थ सर्वांग जीवन कैसे बिताया जा सकता है, इसका उत्तम अनुकरणीय उन्होंने (श्री इसराणी ने) हम सबके समक्ष रखा है। यशस्वी गृहस्थ, यशस्वी अधिवक्ता, यशस्वी सामाजिक कार्यकर्ता, यशस्वी स्वयंसेवक, यशस्वी कार्यवाह और यशस्वी संघचालक आदि समस्त भूमिकाओं को विभिन्न स्तरों पर निभाते हुए दैनंदिन शाखा जाने के अपने आग्रह में उन्होंने कभी कमी नहीं आने दी।'

अनेक हिन्दुत्व निष्ठ और लोकतन्त्र के पक्षधर कार्यकर्ताओं के समान श्री इसराणी भी १९७५ से १९७८ तक के आपात्काल में जेल में रहे तब भी उनकी स्थित प्रज्ञता में कोई अन्तर नहीं आया। उन्होंने कारावास में भी अन्य सभी बन्धुओं को सम्बल प्रदान करते हुए आपदा झेलने का साहस और धैर्य बंधाया। अपनी मधुर हँसी से चतुर्दिक आनन्द बिखेरते हुए उन्होंने अनेक लोगों को हिन्दु संगठन कार्य से जोड़ा। विभाजन की विभीषिका से त्रस्त-संत्रस्त अनेक जन को आत्मनिर्भर बनाने में उन्होंने उनका मनोबल बढ़ाकर योगदान किया।

दयानन्द संस्थान और जनज्ञान के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षु से भी उनका सम्पर्क रहा। महात्मा जी ने निधन के बाद जब संस्थान का भार हमारे कंधों पर आया उसके साथ ही साथ संस्थान और जनज्ञान पर जब अभावों अभियोगों का तान-वितान तना तो उन्होंने अपने सक्रिय सहयोग से हमारा मनोबल बढ़ाया।

श्री उत्तमचन्द इसराणी के निधन से दयानन्द संस्थान और जनज्ञान अपने एक प्रेरक संरक्षक से वंचित हो गया। उनकी आत्मीयता हमे सदैव ही स्मरण रहेगी और उनकी ध्येयनिष्ठा हमारे लिए प्रेरणा का स्त्रोत रहेगी। पुण्यात्मा वेदानुयायी कर्मठ ध्येय निष्ठा के प्रेरक पुंज इसराणी जी के निधन पर दयानन्द संस्थान और जनज्ञान परिवार की ओर से इसराणी जी के प्रति श्रद्धार्जलि और परमपिता परमात्मा से उनके शोक संतृप्त परिजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

वेद संबंधी प्रश्नोत्तर

प्रस्तुति –अरविन्द मोहन वेदशीर्ष

१. वेदों की स्वर्णिम सूक्तियों को संकलित कर लिखें।
उत्तर सूक्तियों के अर्थ प्रतिमास भेजे ही जा रहे हैं। और भी संग्रह बन रहे हैं। यथा काल भेजे जाएंगे। जितने सूक्त-मंत्र भेजे हैं, उन्हें ही स्मरण करें, उन पर मनन-चिन्तन आदि करें। कार्य चल ही रहा है।

२. वेदों के दिव्य संदेश को समग्र रूप में प्रकाशित करें।
उत्तर वेदों का दिव्य संदेश समग्र रूप में प्रकाशित करने में पूरे साढ़े बीस हजार मंत्रों पर दस पंक्तियां भी लिखी जाएं तो दो लाख पंक्ति हो जाएंगी। तथा दस पंक्तियों में अर्थ तो समझ में नहीं आएगा, उलटे अनर्थ ही हो जाएगा। अत: आप सुझाव दें, कोई बुराई तो नहीं है। किन्तु समस्या का व्यवहारिक पक्ष व मानवीय शक्ति-साधनों की सीमा को सोचते हुए ही तो सुझाव देना समीचीन है। हमारी संस्था बहुत कुछ कर रही है। पर फिर भी साधन सीमित ही हैं। साधन में क्या आप कुछ सहायता कर सकते हैं?

३. वेदों की भूमिका को विस्तार से लिखें।
उत्तर लिखी जा रही है। फिर भी पत्रकों में यत्किंचित आ ही चुकी है। विस्तृत लेखमाला प्रारंभ होने वाली है जिसका शीर्षक है-"इससे पहले कि आप वेद पढ़े"।

४. वेदों की प्रासंगिता पर स्वतंत्र विचार व्यक्त करें।
उत्तर प्राय: उत्तर प्रश्नावली (क) के बिन्दु २ में आ चुका है। दूसरे आपका 'विज्ञान' शब्द से क्या तात्पर्य है सो स्पष्ट नहीं है। आधुनिक विज्ञान से यदि आपका मंतव्य है तो वेद में यह असुरोपम व आनन्द-मौज बढ़ाने वाला तथा मूल्यों आदर्शों का शत्रु अनीश, और अहैतुकवादी विज्ञान तो नहीं है। भारतीय परम्परा का लक्ष्य मानव को ईश्वर कोटि की सत्ता बनाना है, न कि जीवन को मात्र सुखोपयोग व सुविधापूर्ण बनाना। अत: आधुनिक विज्ञान को वेद में ढूंढना व्यर्थ है।

५. वेदों में विज्ञान को विस्तार से लिखें।
उत्तर 'विज्ञान' का पुरातन अर्थ 'मन से ऊपर की प्रकाशित-आत्म प्रेरणात्मक स्थिति में पहुंचना है। जिससे मानव चरण प्रति चरण ठोकर न खाते हुए सीधे पारमात्मिक संचेतना में प्रवेश कर सके। इस प्रकार का महतात्विक ज्ञान तो वेद के प्रतिमंत्र, प्रति अक्षर में निर्ग्रथित है वह पत्रकों में व्याख्यायित किया ही जा रहा है। इसे समझें। दो फोटो कॉपी पूर्व प्रकाशित, लेखों की साथ संलग्न है। उससे भी आपको अपने प्रश्न का उतर जानने में सुगमता होगी। कांश्यसनैस-संचेतना का विषय बहुत लंबा, जटिल व चक्राकार है। उस पर शीघ्र लेखन आपको प्राप्त होगा।

६. वेदों में प्राचीन सभ्यता पर विशेष लेख लिखें।
उत्तर प्राचीन सभ्यता ही तो 'सभ्यता' विशेषण की अधिकारी है अन्यथा नारी व धनद्वेषी, भूमि व पर्यावरण की ओर से प्रमादी व मात्र परलोक में मुक्ति या यहां मौज-मजा देखने वालों की सभ्यता तो वस्तुत: 'असभ्यता' ही है। लेख यदा कदा प्राप्त होते रहेंगे।

७. वेदों में आधुनिकता के दर्शन करना संभव है?
उत्तर वेदों में आधुनिकता नहीं अत्याधुनिकता के स्पष्ट दर्शन होते हैं। वर्जनाएं, भ्रांतिया, आवेग-संवेग पूर्ण जीवन तथा अनुत्तरदायित्व पूर्ण आधुनिक जीवन जैसी बातों का रंचमात्र भी चिन्ह या इंगित नहीं है। वे पुराणपंथी न होकर अत्यन्त विकसित योद्धा, आखेटक तथा प्रभु समर्पित जीने वाले वीरों की सभ्यता तथा समुदाय हित व जगत् हित स्वयं के क्षुद्र स्वार्थों को वर्जित करके सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय जीवन जीने वालों की ऊर्जस्वी ज्ञान कथा संहिताएं हैं। इस आधुनिकता को आज पुन: विकसित होने में कम से कम पांच सौ वर्ष तो लग ही जाएंगे। वह भी तब जब समस्त मानवता प्रयास करें। अभी तो यह स्वप्न बहुत दूर है। पर यह चरितार्थ होकर रहेगा। हमारा दल इस तथाकथित आधुनिकता के जघन्य जीवन में वेद की उदात्त आधुनिकता के मध्य पुल बनाने में संलग्न है। यह महान सेतु बनने पर तीव्र गति से जन साधारण इस पार से उस पार प्रयाण कर सकेंगे।

८. वेदों में नीतिपरक उद्धरण को दर्शाया जाय।
उत्तर वेद में नीति, सुनीति, प्रणीति सभी भरे पड़े हैं। क्रमिक रूप से हम प्रस्तुत करेंगे।

९. 'वेदों में कूटनीति' विषय पर विचार व्यक्त करें।
उत्तर वेदों में कूटनीति तो उस प्रकार की नहीं है। 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' के महान ग्रंथ राज वेद सर्वस्तरीय व बहुस्तरीय नीति के आश्चर्यावह संग्रह हैं। देश, काल, पात्र, परिस्थिति का सम्बद्धता से वेद की अनेक नीति, अनेकगामी व्यवस्था चर्याएं हैं। बहुत चमत्कारी हैं वेद की नीतियां। पर उन्हें शुद्ध, उचित व अवसर-विवेक से पोषित नीति कह सकते हैं, कूटनीति नाम तो कुछ अशोभनीय सा है।

प्रश्नावली (घ) फरवरी-२००६
उत्तर प्रेषित मार्च-२००६

१. क्या वेद (अध्ययन) वानप्रस्थ जीवन का शास्त्र हैं?

उत्तर यह प्रश्न तो वेद का शिशु-विद्यार्थी भी कभी न करता। वेद सर्वकालिक शास्त्र है। वेदकाल में चार आश्रमों की परम्परा का कोई संकेत नहीं मिलता। चार आश्रमों की परिपाटी तो औपनिषद काल की-अर्थात् महाभारत काल के आसपास की प्रथा है। वेद का इनसे कोई लेना-देना नहीं है। संन्यास का, गृह त्याग का, वानप्रस्थ का कोई चिह्न वेद में प्राप्त नहीं होता। वेद के समस्त ऋषि गृहस्थी हैं तथा सदा गृहस्थी ही रहे।

२. वेद अध्ययन युवाओं की पकड़ से बाहर हैं?

उत्तर यह मिथ्या अवधारणा है। वेद इतने आधुनिक, साहसिक, सरल तथा रचनात्मक व व्यवहारिक शास्त्र हैं कि युवाओं के ही अधिक कार्य के हैं। ऊर्जा से भरे हुए युवक-युवतियों के लिए वेद शक्ति का अक्षय स्रोत हैं। पर अंग्रेजी, हिन्दी में वेद की विशेष उपलब्धि न होने से तथा असम्प्रदायिक व्याख्याताओं के व्यथाकारक अभाव के कारण दिशा निर्देश व प्रसारात्मक प्रशिक्षण के कार्य नहीं हो पा रहे। अत: युवकजनों तक वेद अभी ठीक से पहुंच नही पा रहे हैं। हम प्रयासरत हैं। पर हमने देखा है कि वेद की शिक्षा युवाओं को बहुत रुचिकर लगती है।

३. वेद का प्रचार-प्रसार किनके अधिकार क्षेत्र में है?

उत्तर जो भी वेद के प्रति स्वयं को ज्ञान, भावना, अध्ययन और भक्ति के साथ समर्पित करता है, वेद उसी के अधिकार क्षेत्र में हैं। वह नर हो या नारी अथवा षंढ, युवा हो वृद्ध हो अथवा बालक-वेद उसके अधिकार क्षेत्र में है जो भारतीय अस्मिता के प्रतीक तथा भारतीय दिव्य प्रज्ञा के प्रमाण में सच्ची आस्था रखकर उस ओर चलता है, वही वेद का सम्माननीय अधिकारी है।

४. वेद न होता तो संसार का रूप कैसा होता?

उत्तर वेद होने पर भी आज उनकी उपेक्षा के कारण संसार की जो दुर्गति व दुर्दशा है, उससे भी अधिक होती, यदि वेद न होते।

५. वेद शक्ति का प्रतीक क्यों नहीं हैं?

उत्तर वेद एक मात्र शक्ति का ही प्रतीक है। शक्ति ही वेद में लगातार 'अग्नि' नाम से प्रयुक्त की जाती है। ज्ञान व शक्ति, ज्ञान व कर्म, ज्ञान व भक्ति तथा ज्ञान व लौकिक व्यवहार की भेदात्मक व विभेदात्मक मान्यताएं परवर्ती काल की मूढ़ताएं हैं, जो भारत के विषादकालों और जगत्-जीवन से घृणा के कालों में अनेक कारणों से वपित, पल्लवित व पुष्पित हो गई। पर ये फलवती न कभी हुई न होंगी। वरुण के तेज, रुद्र के प्रताप तथा सर्वव्यापी विष्णु की महत्ता के साथ इंद्र-शक्ति के सहस्त्रों विजय अभियान के प्रकाशक वेद महाशक्ति के ग्रंथ हैं। जब आप जैसा बहुपढ़ व प्रबुद्ध व्यक्ति वेद को सिर्फ सैद्धांतिक ज्ञान एवं अव्यवहारिक आदर्शों का ग्रंथ मानता है तो साधारण जन की मानसिक दुरवधारणाओं का क्या ठिकाना। वेद ही शक्ति है। वेद कर्मठ और अत्यन्त उल्लासपूर्ण व आस्थापूर्ण जीवन के ग्रंथ हैं। ईश्वरीय ऊर्जा तथा सविता का तेज, ओज, पृथ्वी का गुरूत्वाकर्षण तथा उर्वरा शक्ति को सर्वथा स्वयं में समा लेने वाले व शक्ति का संभरण व वितरण करने वाले वेद स्वयं शब्द शब्द में शक्ति के वाहक और निर्झरक हैं।

६. वेद से नारी शक्ति के उद्‌भव को समझायें।

उत्तर वेद में नर-नारी का विशेष भेद नहीं दर्शाया गया। नर-नारी परस्पर पूरक, सम्पूरक एवं अभिव्याज्य, अखण्ड परिपूर्णांक हैं वेद में। दोनों ही शक्ति-स्रोत हैं तथा अन्योन्याश्रित सतत्व हैं। वेद पढ़ने के साथ ही नारी उत्थान पूर्णत: संभव है। हमारे इस ओर भी तीव्र प्रयास चल रहे हैं। नारी शक्ति वह उद्‌भव, विकास व व्यापकता वेद में विस्तार से वर्णित है। अत्यन्त उच्च दृष्टि सम्पन्न व विकासोन्मुख ग्रंथ हैं। वेद दिति यानी सीमितता से अदिति अर्थात् असीमता की ओर बढ़ने के लिए वेद नर-नारी के अत्यन्त प्रभावपूर्ण व सामन्जस्यपूर्ण सह-विकास के पक्षक हैं।

७. वेद एक जीवंत ग्रन्थ हैं। कैसे?

उत्तर ईश्वर, प्रकृति, सूर्य एवं पृथ्वी की तरह वेद भी सदा जीवन्त, सदा सक्रिय तथा सदा आनन्दपूर्ण शक्तिमता में भरे रहने वाले ग्रंथ हैं। सदा जीवन से भरे रहते हैं हम भारतीय अर्द्धमृत एवं विषण्ण और हतभागी अनुरदायित्व पूर्ण व निर्जीव जीवन जीने वाले मूढ़मति हैं जो वेदों को त्याग कर इधर उधर खोज-बीन करते फिरते हैं। पर वेद में तो अजीवन्तता का कोई प्रश्न ही नहीं है।

८. वेदमय जीवन के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर इसका उत्तर अनेक उत्तरों में ऊपर आ चुका है। फिर भी इस प्रकार समझें कि- स्वयं के तन-मन, प्राण व चैतन्य का सतत रूपान्तर करते हुए जगत् के सभी मनुष्यों, सभी प्राणियों तथा पर्यावरण का परिष्कार व प्रगति का

(शेष पृष्ठ ४४ पर)

पर्यावरण की रक्षा आर्थिक विकास का अनिवार्य तत्व

–वेदप्रकाश सिंह

विश्व के सभी देशों के बहुर्मुखी विकास के लिए यह परम आवश्यक है कि आर्थिक प्रगति की गति और पर्यावरण के बीच पूर्ण सामंजस्य और समरसता हो, लेकिन इस युग में केवल आर्थिक विकास पर इतना अधिक ध्यान दिया जा रहा है कि हमारे पर्यावरण के लिए गम्भीर संकट उत्पन्न हो गया है, आज के बहुर्मुखी समाज का स्वस्थ अस्तित्व इस प्रकार की नीति अपनाने से सम्भव नहीं, "अन्तर्राष्ट्रिय पैनल ओन क्लाइमेटिक चेंज" की रिपोर्ट ने यह गम्भीर चेतावनी दी है की आंख मूंद कर आर्थिक विकास कभी समाज के लिए हितकारी नहीं हो सकता, आर्थिक विकास पर जरूरत से अधिक बल देने के कारण सामाजिक जीवन और स्वस्थ समाज के लिए अनिवार्य अन्य महत्वपूर्ण तत्वों की घोर उपेक्षा हो गई है, उदाहरण के लिए एक तीन टांगो वाले स्टूल को ही ले लीजिए, इस पर खड़े होने या बैठने के लिए तीन टांगे तो होनी ही चाहिएं । इसी प्रकार स्वस्थ समाज के संतुलित विकास के लिए तीन तत्व अनिवार्य हैं।

इस युग में विभिन्न देशों की सरकारों के नीति निर्धारकों ने समाज के विकास के लिए केवल एकांगी कदम उठाया है और केवल आर्थिक विकास और पूंजी उत्पादन को अपना लक्ष्य बनाया है, इसीलिए उनके मस्तिष्क में केवल वही योजनाएं घूमती रहती हैं जिनसे व्यवसायों का अधिक से अधिक विकास हो और पूंजी का सृजन होता रहे, वे केवल यह देखते हैं कि आर्थिक विकास के सूचकांक कितने ऊंचे हैं? दीर्घकाल से आर्थिक विकास की योजनाएं बनाने वाले अर्थव्यवस्था के स्वरूप और उसकी स्वस्थ प्रगति को आंकते रहे हैं, वे अर्थ व्यवस्था के स्वरूप का मापदंड (जीडीपी) समग्र राष्ट्रीय उत्पादन मानते रहे हैं, आर्थिक विकास की दर को ही वे आर्थिक विकास का सूचकांक मानते रहे हैं और यह दलील देते रहे हैं कि कारपोरेट जगत अपने कारोबार से कितना धन कमा रहा है और अपने स्टाकहोल्डरों को कितना लाभांश सुलभ कर रहा है, इसी बात को वह एक सम्पन्न और स्वस्थ समाज का एकमात्र प्रतीक मानते रहे हैं,

अनवरत प्रगतिशीलता और स्थिरता के लिए तीन अनिवार्य तत्वों की आवश्यकता होती है–निरन्तर ऊर्ध्वोन्मुख जीडीपी, सामाजिक सामंजस्य और समरसता एवं स्वस्थ पर्यावरण, जीडीपी की दर में निरंतर वृद्धि यह दर्शाती है कि समाज की दशा में कितना सुधार हो रहा है, दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है सामाजिक सामंजस्य और समरसता और तीसरा महत्वपूर्ण तत्व है पर्यावरण, आज विश्व समाज के समक्ष यह नग्न सत्य उजागर है कि आर्थिक विकास की योजना बनाने वाले अर्थशास्त्रियों ने केवल आर्थिक विकास पर ही अपना सारा ध्यान केंद्रित करने की भयंकर भूल ही नहीं की है बल्कि व्यवसायों, स्टाक मारकेट, व्यवसायों को उधार पूंजी देने वाले संगठनों को अनावश्यक वरीयता प्रदान की है,

विश्व के विभिन्न देशों की सरकारों के मुखिया विश्व के आर्थिक फोरमों में निरन्तर बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित होते रहे हैं परन्तु विश्व के सामाजिक फोरमों में केवल गिनी चुनी सरकारों के मुखिया ही शामिल होते रहे हैं, इन फोरमों में भाग लेने वाले हजारों प्रतिनिधियों ने चीख-चीख कर यह कहा है कि समाज और पर्यावरण **के लिए गम्भीर संकट** उपस्थित है, यह आवाज़ बड़े-बड़े पंचसितारा होटलों में रहने वालों ने नहीं बल्कि सड़कों पर रहने वाले गरीब लोग उठा रहे हैं, सुपर पूंजीवाद में, व्यवसाय, लोकतन्त्र और जन जीवन में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहा है, यूनिवर्सिटी और कैलिफोर्निया, बर्कले के पब्लिक पौलिशी प्रोफेसर तथा अमेरिका के भूतपूर्व प्रैसिडेंट बिल क्लिंटन के मंत्रिमंडल के सदस्य रार्बट टीच का कहना है कि आज समाज के स्वरूप का निर्धारण करने में कारपोरेट जगत अधिक शक्तिशाली होता जा रहा है जबकि उन संगठनों और संस्थाओं का प्रभाव क्षीण होता जा रहा है जो सामाजिक असमांजस्य और सामाजिक अशान्ति तथा असन्तोष के विरोध में आवाज़ उठा रहे हैं।

हमारे देश में कानून और व्यवस्था का ह्रास, आर्थिक विकास के क्षेत्र में गरीब और अभावग्रस्त लोगों द्वारा समानता की जोरदार मांग और समाज में व्याप्त अशान्ति सामाजिक अन्याय और भ्रष्टाचार अब और अधिक सहन नहीं किया जा सकता, उन प्रतिकूल और हानिकारक तत्वों का आर्थिक सुधारों के कुछ लेना देना नहीं है बल्कि इन प्रतिकूल और हानिकारक तत्वों से यह बात उभर कर सामने आ रही है कि हमें बृहत्तर और विस्तृत सामाजिक और राजनितिक सुधारों की ओर अबिलम्ब ध्यान देना चाहिए, समाज की दशा एक महत्वपूर्ण तत्व है, यह इस

बात को स्पष्ट करता है कि देश के भौतिक पर्यावरण का देश के आर्थिक और सामाजिक परिवेश से किस प्रकार का सम्बन्ध है? मानव शक्ति के विकास के क्षेत्र में समाज और पर्यावरण संबंधी पहलुओं को विशुद्ध आर्थिक पहलू से अलग नहीं रखा जा सकता, वस्तुतः वह विकास के सार्थक माडेल के अनिवार्य और अविभाज्य अंग है,

अमेरिका के भूतपूर्व वाइस प्रैसीडेंट श्री एल. गोर ने कहा है कि यदि विश्व एक पक्षीय विकास की मृग मारीचका में भटकता रहा तो यह धरती तो शुष्क मरूस्थल में बदल जाएगी या समुन्द्र के गर्भ में ही समा जाएगी। अब यह तथ्य बहुत ही स्पष्टता से उजागर हो गया है कि आज पश्चिम एकांगी आर्थिक विकास की जिस मृग मारीचिका के पीछे आंखे मूद कर दौड़ रहा है उसके कारण धरती के पर्यावरण के लिए गम्भीर संकट उत्पन्न हो गया है, यह बहुत ही बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय होगा यदि विश्व के नवोदित और विकासोन्मख देश अपने आर्थिक विकास की योजनाए क्रियान्वित करने के लिए पश्चिम का अन्धानुकरण न कर ऊपर वर्णित तीनो तत्वों-समग्र राष्ट्रीय उत्पादन की दर में वृद्धि और राष्ट्रीय आय का समाज के सभी अंगों में सन्तुलित वितरण, सामाजिक स्थिरता, सामंजस्य और समरसता और पर्यावरण की रक्षा- को ध्यान में रख कर अपने आर्थिक विकास की योजनाएं बनाएं

–वी-३ कृष्णा पार्क (विकासपुरी, नई दिल्ली)

(पृष्ठ ४२ का शेष)

प्रयास करते हुए जीना ही वेदोमय जीवन का प्रमाण होगा। आखिर इस शून्य व निर्जीव ब्रह्माण्ड में हमारी यह प्रिय मातृभूमि यह धरा ही तो एक विचित्र व अनुपम-अद्वितीय स्थान है। इसे बैकुण्ठ-रूप के अकुण्ठामय प्रभु-आवास्य में परिवर्तित कर देना ही हमारे जीवन का एकमात्र हेतु है। ऐसा करेंगे तो हम स्वयं के जीवन को वेदमय कह सकेंगे।

९. वेद के बाद किस सनातन ग्रंथ को रखा जा सकता है?

उत्तर वेद की किसी ग्रंथ से तुलना नहीं हो सकती वेद के प्रारम्भ में और वेद के उपरान्त भी वेद ही वेद हैं। महाभारतादि ग्रंथ व उनके भीतर की गीता यदि ज्ञान-धाराएं वेद के बिन्दु मात्र को ही वहन करती हैं। महाभारत को पांचवां वेद कहा तो गया है परन्तु यह एक व्याज-स्तुति है, अतिवाद है। वेद वेद हैं और अतुलनीय हैं। फिर भी कहना हो तो मेरी व्यक्तिगत मान्यता है कि **श्री अरविन्द का सावित्री महाकाव्य वेद के थोड़ा आगे का ग्रंथ है। उसमें वेद भी पर्याप्त समाया हुआ है तथा वेद के आगे कहां जाना है, वह इंगित भी किया हुआ है। - अरविन्द मोहन देवशीर्ष श्री अरविन्द चेतना समाज ६५६२/१, चमेलियान रोड दिल्ली-११०००६**

लाहौर में आर्यसमाज का सत्संग हो रहा था। स्वामीजी आए तो लोग खड़े हो गए। स्वामीजी ने निषेध किया कि कितना भी बड़ा मनुष्य आवे, उपासकों को सत्संग में खड़ा न होना चाहिये क्योंकि परमेश्वर से बड़ा कोई नहीं, इस प्रकार होने से उपासना धर्म का निरादर होता है।

अल्पसंख्यक एक विचार

* विश्व में तथाकथित सर्वश्रेष्ठ संविधान की धारा ३६६ में अल्पसंख्यक शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं किया गया है।

* इस अस्पष्टता के कारण स्वार्थी नेताओं में अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की होड़ लगी हुई है जिसके फलस्वरूप धर्म निरपेक्षता में विकृति आ चुकी है।

* संविधान की मूल भावना के अनुसार जनता को धर्म के आधार पर बांटना गलत है।

*कुछ वर्षों से, सरकारी स्तर पर अल्पसंख्यक अधिकार दिवस मनाया जाने लगा है जबकि संविधान में अल्पसंख्यकों को कई प्रकार के विशेषाधिकार और रियायतें पहले से प्राप्त हैं।

* फूट डालो और राज करो नीति के अनुसार ४९ प्रतिशत तक की संख्या वाले समुदाय को भी अल्पसंख्यक माना जा रहा है।

* अपवाद् स्वरूप देश में अल्पसंख्यकों (मुस्लिम-ईसाई) का प्रतिशत १२ से बढ़कर १७ हो गया है।

अतः हम देशहित में मांग करते हैं:-

अखिल भारतीय स्तर पर किसी भी समुदाय को अल्पसंख्यक नहीं माना जाए। राज्य स्तर पर उसी समुदाय को अल्पसंख्यक माना जाए जिसकी संख्या १० प्रतिशत से अधिक न हो अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ, आयोग व निगम भंग किए जाएं। उत्तर प्रदेश में केवल ईसाई, पारसी व यहूदियों को ही अल्पसंख्यक माना जाए। अल्पसंख्यक को बढ़ावा देनेवाले कार्यों में सहयोग ना दिया जाए।

–इन्द्रदेव गुलाटी (सावरकर विचार मंच, बुलन्दशहर)

स्वास्थ्य चर्चा

गाजर खाएं, कैंसर भगाएं

–करमचन्द

'सर, गाजर खाएंगे?' यह पूछती है किटी अपने बॉस से 'जासूस करमचंद' टेलीसिरियल में। वह एक नहीं, बार-बार पूछती है। किटी को शायद पता था कि गाजर में एक नैसर्गिक पेस्टीसाइड होता है, जो कैंसर की रोकथाम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शोधकर्ताओं ने खोजा है कि गाजर में एक पेस्टीसाइड स्वाभाविक रूप से होता है, जो चूहों में प्रयोग किए जाने पर कैंसर होने के आसार में ३० प्रतिशत तक की कमी कर देता है। इस नैसर्गिक पेस्टीसाइड का नाम है फालकैरिनोल। वैसे तो गाजर के कैंसररोधी गुणों के बारे में जानकारी धीरे-धीरे हो रही थी, परन्तु किस वजह से यह गुण होते हैं, यह ज्ञात नहीं था। अब जाकर यह पहेली भी सुलझ गई है। इस अध्ययन के परिणाम 'जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर एण्ड फूड केमिस्ट्री' के एक हाल के अंक में प्रकाशित हुए हैं।

दरअसल, फालकैरिनोल गाजर को स्टोरेज में रखने पर होने वाले फंगस संक्रमण से बचाता है। इसमें गाजर पर काले धब्बे पड़ जाते हैं। वैज्ञानिकों ने इस संबंध में पूर्वप्रकाशित एक अध्ययन के आधार पर फिर से गाजर के कैंसररोधी गुणों पर खोजबीन की। वैज्ञानिकों ने उत्तरी इंग्लैंड के न्यू कैसेल विश्वविद्यालय में प्रयोगशालीय स्थितियों में ऐसे २४ चूहों पर प्रयोग किए, जिनमें पहले से पूर्व कैंसर अर्बुद मौजूद थे। उन्होंने इन्हें तीन वर्गों में बांटा और अलग-अलग किस्म के आहार पर रखा। १८ माह के बाद शोधकर्ताओं ने पाया कि गाजरभक्षी (नारंगी की लोकप्रिय गाजर) चूहों ने (जिन्होंने सामान्य आहार के साथ इसे लिया) और दूसरे चूहों ने (ज़िन्होंने उतनी ही मात्रा में फालकैरिनोल को अपने आहार के साथ लिया) उनमें नियंत्रित समूह के चूहों के मुकाबले अर्बुद के पूर्ण विकसित होने में ३० फीसदी की कमी देखने में आई। इस प्रयोग की वरिष्ठ शोधकर्ता थीं डॉ. क्रिस्टी ब्रांट, जो न्यू कैसेल विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर, फूड एण्ड रूरल डेवलपमेंट की वरिष्ठ प्रवक्ता हैं। उन्होंने यह प्रयोग यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न डेनमार्क एवं डेनिस इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीसाइंसेज के साथ मिलकर किया। डॉ. ब्रांट के मुताबिक, 'हमारे शोध से हमें उन सब्जियों के गुणात्मक स्वरूप (मात्रात्मक के बजाए) के बारे में बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली, जो हम खाते हैं। हमारा प्रयास होगा कि कैंसररोधी के रूप में कितना फालकैरिनोल जरूरी होगा, यह तय करें और यह भी कि अलग-अलग प्रकार की गाजरों में कितना फालकैरिनोल होता है।' कहना न होगा कि अलग-अलग रंगो, आकार एवं परिमाण की गाजरें पैदा की जाती है। गाजर का संस्कृत में मूल नाम गृंज्जन है। इसका एक नाम नारंग है अर्थात् नारंग वर्ण की, जैसा कि उपरोक्त शोध में प्रयोग की गई। इसे आयुर्वेद में तीक्ष्ण, उष्ण, मधुर, तिक्त एवं हल्दी माना गया है। यह क्षुधा को बढ़ाती है तथा कफ-वात नाशक है। यूनानी में भी इसे गरम माना गया है, परन्तु दूसरे दर्जे में, साथ ही इसे तर भी माना गया है। यह बलप्रद मानी गई है। शरीर में सौमनस्य पैदा करती हैं। गाजर के बीजों को तीसरे दर्जे में गरम माना गया है और पहले दर्जे में खुश्क माना गया है। गाजर में गर्जरीन (कैरोटीन) शर्करा, श्वेतसार होता है। इसमें पर्याप्त मात्रा में लोहा भी होता है। बीजों में एक पीले रंग का उत्पत तैल होता है। डॉ. ब्रांट के मुताबिक, प्रत्येक व्यक्ति को हर रोज एक गाजर जरूर खानी चाहिए। यदि वह खुद की उगाई एवं ऑर्गेनिक टाइप की हो, तो सोने पे सुहागा। फालकैरिनोल अधिक मात्रा में लेने पर विषाक्त भी होता है, परन्तु इसके लिए एक बार में ४०० किलो गाजर खानी पड़ेगी। शोधकर्ताओं का मानना है कि चूंकि यह कैंसररोधी मैकनिज्म को उद्दीप्त करता है, इसलिए प्रभावी होता है। तथापि, और अधिक एवं व्यापक शोध जारी है।

बड़े-बड़े गुण

* गाजर हमारे स्वास्थ्य में सुधार कर हमें शक्ति प्रदान करती है। यह हमारे शरीर में रक्त की वृद्धि कर सौंदर्य बढ़ाती है। फसल के मौसम यानी सर्दियों में गाजर सस्ती होती है, मगर गुणों का यह भंडार भी है।
* आँखों की ज्योति बढ़ाने के लिए भी गाजर का सेवन किया जाता है। गाजर का रस तो और भी अधिक गुणकारी होता है। इसमें बीटाकेराटिन पाया जाता है। यह विटामिन ए की एक किस्म है।
* यदि शरीर में यह बीटाकेराटिन काफी हो तो आँखों की रक्षा होगी। बीटाकेराटिन की आपूर्ति होने से आँखों में 'विजुअलपर्पल' नाम का पिगमेंट बनता है। इसकी वजह से जब हम कभी रौशनी, कभी तेज रोशनी, तो कभी अंधेरे की ओर ज़ाते हैं, तो हम इससे कोई परेशानी महसूस नहीं कर सकते। यदि हमारी आँखों में इस पिगमेंट की कमी हो जाए, तो रतौंधी का भय बनता है। गाजर हमें इस भय से मुक्त कर देती है जब हमें गाजर उपलब्ध न हो, तो हम खुमानी, पत्तेदार सब्जियां, संतरा, नारंगी तथा टमाटर आदि को खाकर अपनी आवश्यकता पूरी कर सकते हैं। गाजर मिले, तो इसका रस पीना चाहिए।

रोग निवारक है देवनागिरी लिपि के स्वर

हिन्दी की लिपि को देवनागिरी लिपि कहा जाता है। इस लिपि के उद्‌भव के विषय में कहा जाता है कि एक बार नटराज महेश्वर ने नृत्य करते हुए डमरू बजाया तो उससे चौदह सूत्र प्रकट हुए जो 'महेश्वर सूत्र' नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्हीं सूत्रों से देवनागिरी लिपि का उद्‌भव हुआ। इस लिपि के बारह स्वर अत्यन्त कल्याणकारी व मंगलमय माने जाते हैं। इनके समुचित प्रयोग से रोगों का उपचार व स्वास्थ्य लाभ किया जा सकता है।

अ : इस स्वर का उच्चारण कण्ठ से होता है। जितनी बार 'अ' का उच्चारण करेंगे उतनी बार हृदय की गति का संचालन तीव्रता से होगा, जिससे रक्त शुद्ध हो जाता है।

आ : इसके उच्चारण के दमा, खाँसी के रोग अच्छे होते हैं फेफड़े उत्तेजित होकर शुद्ध होते हैं। नियमित अभ्यास ऊपर तीन पसलियों को बलवान बनाता है।

इ, ई : इसका प्रभाव गले व मस्तिष्क पर होता है। इसलिए गले, नाक और हृदय के ऊपरी भाग की क्रिया विशेष उत्तेजित होती है। इसके उच्चारण से कफ तथा आँतों में जमा मल निकल जाता है और ये भाग स्वस्थ हो जाते हैं।

उ, ऊ : इसका प्रभाव जिगर, पेट और आँतों पर पड़ता है। इसके नियमित अभ्यास से पेट का भार कम होता है। स्त्रियों के पेडू रोग में बहुत लाभकारी है। गर्भाशय स्वस्थ एवं सबल बनाता है।

ए, ऐ : इसके निरन्तर अभ्यास से गुर्दे स्पन्दित होते हैं तथा मूत्र सम्बन्धी रोग दूर होते हैं।

ओ, औ : इसका नियमित अभ्यास आँतों तथा नसों को शुद्ध करता है। जननेन्द्रिय पर भी इसका उत्तम प्रभाव पड़ता है।

अं : बीज मन्त्रों में इसका उपयोग होता है। देर तक घण्टानाद की तरह उच्चारण से छाती व गले को पुष्टता मिलती है तथा हृदय को भी लाभ होता है।

अ : इसके नियमित अभ्यास से मस्तिष्क, कण्ड तथा हृदय को लाभ पहुँचता है।

स्वरों के उच्चारण की विधि–स्वर के उच्चारण के लिये सुगमावस्था में बैठकर रीढ़ सीधी रखें। मुख बन्द करके नाक से साँस पूरी व गहरी लें उसके बाद उच्चारण करें। उच्चारण के बाद साँस वहीं १५ सेकेण्ड या अपनी समर्थता के अनुसार रोक लें। धीरे-धीरे साँस रोकने का अभ्यास बढ़ा दें। यह क्रिया भोजन के पूर्व करनी चाहिए। स्वरों के उच्चारण के साथ साँस को निकालते चलें। इस प्रकार इन स्वरों के नियमित अभ्यास से अनेक रोगों का निवारण होता है।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

से वीर रस की राष्ट्र-भक्ति से ओत-प्रोत कविताएं देते रहे। इस पर वायसराय ने पत्रिका के मालिक तिरूमलाचारी को गिरफ्तार कर लिया। भारती जी बच निकले तो अंग्रेजों ने उनके खिलाफ वारंट जारी कर दिया।

गिरफ्तारी से बचने के लिये उनके मित्रों ने उनसे पांडिचेरी चले जाने का आग्रह किया। क्योंकि पांडिचेरी में अंग्रेजों का शासन नहीं था, वहां फ्रांस का शासन था। वे पांडिचेरी चले गये। वहां से उन्होंने अनेक मुसीबतों का सामना करते हुए अपनी पत्रिका का संपादन शुरू कर दिया। इस पर भारत में ब्रिटिश शासकों ने इंडिया पत्रिका के पढ़ने पर रोक लगा दी। **पत्रिकाओं और राजनैतिक कार्यों पर पूर्णतया रोक लग जाने पर सुब्रह्मण्यम् ने अपना समय काव्य रचना में लगा दिया। पांडिचेरी में रहते हुए उन्होंने भगवद्‌गीता का तमिल अनुवाद तथा पातंजलि योग सूत्र की व्याख्या की। वे २० नवम्बर १९१८ को वापस चेन्नई आ रहे थे तब रास्ते में ही अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। जेल की सजा पूरी करने के बाद भारती जी पुनः स्वतंत्रता संघर्ष में कूद पड़े।**

सुब्रह्मण्यम् भारती जी ने राष्ट्र-भक्ति पूर्ण पत्रकारिता के साथ ही समाज सुधार का कार्य भी किया। उन्होंने हरिजन उत्थान, अस्पृश्यता (छुआ-छूत) निवारण पर बल दिया। वे **स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति, दया के भण्डार, आध्यात्म के पुजारी, पर्यावरण प्रेमी, प्रखर राजनीतिज्ञ, उत्कृष्ट कवि एवं राष्ट्र-प्रेमी व्यक्तित्व के धनी थे।** उन्होंने अपना सारा जीवन राष्ट्र जागरण तथा समाज सुधार के कार्यों को समर्पित कर दिया। १७ सितम्बर १९२१ को ३९ वर्ष की अल्पआयु में ही प्रखर राष्ट्रवादी सुब्रह्मण्यम् भारती का निधन हो गया।

गतांक से आगे

एक साधे सब सधे

–भद्रसेन

धर्म का स्वारस्य-

ऐसे सर्वाधार धर्म का स्वारस्य, पहचान क्या है? जब हम इस पर विचार करते हैं, 'जितने मुंह-उतनी बातें। कोई किसी दिशा में ले जाना चाहता है, तो कोई किसी और ही दिशा की ओर संकेत करने लगता है। दूरदर्शन के आस्था, संस्कार जैसे चैनलों पर और विविध सम्मेलनों, सत्संगों में भी धर्म के नाम पर परस्पर विरोधी, विचित्र-विचित्र बातें सामने आती हैं।

उदाहरण के लिए २००७ में हुए प्रयागस्थ धार्मिक आयोजन अर्धकुम्भ को ही लेते हैं। वहाँ सब से अधिक धार्मिक समझे जाने वाले साधु परस्पर विरोधी क्रियाओं, व्यवहारों में जुटे हुए थे, यह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। जैसे कि इनके खान-पान, रहन-सहन, दिनचर्या, तपस्या, ध्यान-भजन में भी विविधता प्राप्त होती है। यह विविधता केवल रुचि भेद से ही नहीं, अपितु स्पष्ट रूप से धार्मिक मान्यता की दृष्टि से भी प्राप्त होती है। तब कर्मकाण्ड की सारी बातों को भी मानना किसी के वश में नही होता हैं। इसी लिए परस्पर विवाद, शास्त्रार्थ, दंगे हो जाते हैं। अधिकतर यही समझते हैं, कि हमारा धर्म ही सच्चा है तथा इसका मानने वाला ही स्वर्ग का हकदार है।

आज धर्म की ऐसी विचित्र स्थिति बना दी गई है, कि यदि कोई समुद्र पार चला जाता है या विशेष के हाथ से जल पी लेता है या खा लेता है। तो धर्मभ्रष्ट हो गया, तब उसके लिए प्रायश्चित्तों की परम्परा प्रारम्भ हो जाती है।

ऊपर की बातों के साथ कुछ धर्मस्थलों पर आज भी पशु-पक्षियों की बलि दी जाती है, तथा शराब चढ़ाई जाती है। भगवान का घर कहे जाने वाले कुछ धर्मस्थानों पर जिस प्रकार वर्ग विशेष का होने से उनके प्रवेश पर प्रतिबन्ध की बातें चलती हैं। धर्म के नाम पर इस-इस प्रकार के रिवाज या बात को देख कर मुझे एक ऐतिहासिक घटना स्मरण हो उठती है।

१९५७ में जब पंजाब के अन्दर हिन्दी आन्दोलन चला, तो जहां पंजाब तथा दूसरे प्रान्तों के जिलों से सत्याग्रही आए, वहां रोहतक जिले के ग्रामों से विशेष रूप से गिरफतारी देकर जेल गए। तात्कालिक व्यवस्था के अनुसार जेल में जज के सामने एक दिन रोहतक के ग्रामीणों के जत्थे की पेशी हुई। तब जत्थे के नेता से न्यायाधीश ने पूछा- क्या तुम ने १४४ धारा तोड़ी थी? इस पर उत्तर देते हुए उस ग्रामीण ने अपने सरल स्वभाव से अपनी ग्राम की बोली में कहा- 'हमने न बेरा हो सै, कि हो सौ तेरी १४४ धारा? तब भारतीय संविधान के विशेषज्ञ ने समझाया- क्या तुम ने 'हिन्दीभाषा अमर रहे' जैसे नारे लगाये थे? इस पर सारे जत्थे ने दो-चार नारे वहीं और लगा दिये। इतना सुनते ही उस न्यायाधीश ने कहा- ऐसा कर के फिर तो तुमने इस तरह १४४ धारा तोड़ दी। अतः तुम अपराधी हो गए और दण्ड के भागी बन गए। इस पर जत्थे के सरदार ने बड़े भोलेपन से कहा- जज साहब! आपने इतनी कच्ची धारा ही क्यों बनाई, जो नारा लगाते ही टूट गई। इस सारी घटना का मूलभाव यही है, कि हमने धर्म को भयप्रद, निरर्थक लकीरों और अप्रासंगिक बातों में उलझा कर रख दिया है?

धर्म को समझने का एक प्रकार यह भी है, कि हम अपने प्रतिदिन के जीवन व्यवहार में परस्पर बोलते हुए अनेक बार अनेक स्थानों पर धर्म से जुड़े शब्दों का प्रयोग करते हैं। जैसे कि- धर्मशाला, धर्मस्थल, धर्मग्रन्थ, धर्मार्थ औषधालय, धर्मकण्डा आदि। इन शब्दों पर ध्यान दिया जाए, विचार किया जाए, तो यह बात सामने आती है, कि धर्मशाला= अर्थात ऐसा भवन जिस का बिना भेदभाव के सब बर्ताव करते हैं। ऐसे ही धर्मार्थ औषधालय अर्थात दवाई देने की ऐसी जगह जहां बिना आर्थिक लाभ का, कमाई का विचार किस रोगियों के रोग, कष्ट, दुख दूर किए जाते हैं। अर्थात किसी का भला करना। धर्मकण्डा या धर्मार्थकण्डा= अर्थात ऐसा मापने का यन्त्र जो पूर्णतः न्याय, सचाई, ईमानदारी से कार्य करता है। ऐसे ही किसी व्यक्ति को जब हम धार्मिक कहते हैं, तो उस का भाव होता है, कि यह ऐसा व्यक्ति है, जो कि सज्जन, सच्चा, सुच्चा, ईमानदार है। इन सारे शब्दों से यही सन्देश सामने आता है, कि वही धर्म है, जिससे बिना भेदभाव के सभी का भला हो, सभी से ईमानदारी, सत्य, न्याययुक्त व्यवहार करना। इसीलिए ऋषि दयानन्द सरस्वती ने स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में लिखा है- 'जो पक्षपात रहित, न्यायाचरण, सत्यभाषणादियुक्त व्यवहार है- उसे धर्म मानता हूँ।'

यह केवल बड़ों की ही बात नहीं है, अपितु बच्चे

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

हरे चने के जायके

सर्दियों के मौसम में सबसे ज्यादा फल व सब्जी बाजार में आते हैं। हरे चने (छोड़) भी इन दिनों खूब बिकते हैं। इनसे कई तरह के स्वादिष्ट व्यंजन भी बनाए जा सकते हैं।

ढोकले

सामग्री : हरे चने १ किलो, चावल का आटा १ कटोरी, नमक-मिर्च स्वादानुसार, खाने का सोडा, सौंफ १ चम्मच, अदरक, लहसुन का पेस्ट १ चम्मच, दही १ कटोरी, बारीक कटा हरा धनिया, मिर्च, तेल व राई।

विधि : पहले हरे चने छीलकर मिक्सर में पीस लें। अब चावल का आटा व चने का पेस्ट दही में घोलकर गरम स्थान पर रखें, ४-५ घंटे के लिए ताकि खमीर उठ सके। जब खमीर उठ जाए तब सभी सामग्री मिलाएं। अब चिकनाई लगाकर घोल डालें व भाप में पकाएं। चम्मच या चाकू से देखें यदि चिपके नहीं तो निकालकर ठंडा करें व मनचाहे आकार में काटें। कडाही में तेल डालें, राई चटकाएं व ढोकले के साथ सर्व करें।

बड़े

सामग्री : हरे चने १ किलो, उबले आलू २, फूल गोभी, शिमला मिर्च, हरा धनिया, मिर्च, प्याज कटा हुआ। सभी सामग्री कुल १ कटोरी, अदरक, लहसुन का पेस्ट १ चम्मच, नमक स्वादानुसार, सौंफ चम्मच, तेल तलने के लिए।

विधि : हरे चने छीलकर मिक्सर में पीस लें। आलू मेश करें व इसमें सभी सामग्री मिलाएं और इससे बड़े बनाएं। बडों को तेल में मध्यम आंच पर तलें व गरमा-गरम चटनी या सॉस के साथ सर्व करें।

चक्की

सामग्री : हरे चने ३ किलो, शकर १ कटोरी तथा बारीक कटा मेवा।

विधि : हरे चने छीलकर मिक्सर में पीस लें व इन्हें घी में भूनें। शक्कर की डेढ़ तार की चाशनी बनाएं। भुना हुआ छोड़ का पेस्ट इसमें डालें व चलाएं। चिकनाई लगी थाली में फैलाएं। ऊपर से मेवे बुरकें, ठंडी होने पर मनचाहे आकार की चक्की काट लें।

पकौड़े

सामग्री : हरे चने १ किलो, बेसन २ बड़े चम्मच, नमक-मिर्च स्वादानुसार, अजवाइन १ चम्मच, हींग १ चुटकी, कटा हुआ प्याज, बारीक कटा हरा धनिया व मिर्च, अगर लहसुन चाहें तो वह भी ले लें ५-६ कली तथा तेल तलने के लिए।

विधि : चने को छीलकर मिक्सर में पीस लें। सभी सामग्री मिलाएं व घोल बनाएं तथा मध्यम आंच पर गरम पकौड़े तलकर गरमा-गरम चाय के साथ पकौड़े सर्व करें

कढ़ी

सामग्री : हरे चने १ किलो, दही १ कटोरी, हींग १ चुटकी, जीरा १ चम्मच, घी २ चम्मच, नमक-मिर्च स्वादानुसार हल्दी १ चम्मच, बारीक कटा हरा धनिया-मिर्च।

विधि : हरे चने छिलकर मिक्सर में पीस लें। इसमें दही डालकर घोल बनाएं। नमक मिर्च, हल्दी डालें व घोल को पतला करें। पतीली में घी गरम करें। हींग फोड़कर डालें। जीरा डालकर चटकाएं। अब घोल डालकर चलाएं। उबाल आने दें। जब कढ़ी पक जाए तो बारीक कटा हुआ धनिया मिर्च व कढ़ी पत्ता डालकर उतार लें। चाहें तो पकौड़ी भी तलकर डाल सकती हैं। गरमा-गरम कढ़ी, चावल व रोटी के साथ सर्व करें। मेहमान वाह-वाह कर उठेंगे।

(पृष्ठ ४७ का शेष)
भी आपस में बातचीत करते हुए कहते हैं- 'मैं धर्म से कहता हूँ, अर्थात सच कहता हूं।' अत: धर्म और सत्य पर्यायवाची शब्द हैं या धर्म का मुख्य अर्थ सत्य ही है। तभी तो बृहदारण्यक उपनिषद में आया है- **'यो वै स धर्मः सत्यं वैतत्। तस्मात् सत्यं वदन्तमाहुर्धर्मं वदतीति धर्मं वा वदन्तं सत्यं वदतीति। १, ४, १४ इसी का समर्थन अन्यत्र भी प्राप्त होता है- तत्र सत्ये स्थितो धर्मः- कौटिल्य अर्थशास्त्र ३,१,४; धर्ममूले सत्यदाने चाणक्यसूत्र- ४२; न हि सत्यसमो धर्मो, न सत्याद् विद्यते परम्।**

इन्हीं सारी भावनाओं को सामने रखकर महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के पंचम नियम में लिखा है- 'सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर के करने चाहियें'। अत: इस सारे विचेचन से सिद्ध होता है, कि धर्म का भाव है- सत्य, न्याय, निष्पक्ष, संस्कृत, शुद्ध बात का व्यवहार।

बाल जगत

गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति

सादगी के प्रतीक राजेन्द्र प्रसाद

–डॉ. राष्ट्रबंधु

१९०२ में कोलकाता बोर्ड एंट्रेस परीक्षा में छपरा (बिहार) के 'राजेन बाबू' (जन्म ३ दिसम्बर १८९४) को १९०२ में सर्वाधिक अंक एक अंग्रेज परीक्षक ने दिए थे। पुस्तिका प्रश्न पर उस परीक्षक ने टिप्पणी लिखी थी, 'परीक्षार्थी, परीक्षक से अधिक जानता है'। पाँच प्रश्न करने थे, सात दिए गए थे, राजेन्द्र बाबू ने सातों प्रश्न किए और टिप्पणी लिखी, 'कोई पाँच प्रश्न जाँच ले'। इसके बाद की सारी परीक्षाओं में 'राजेन्द्र बाबू' (डॉ. राजेन्द्र प्रसाद) ने सर्वाधिक अंक अर्जित किए और सर्वप्रथम रहे। शिक्षा पूर्ण करने के बाद वह मुजफ्फरपुर में शिक्षक बने। उनकी ख्याति आदर्श शिक्षक के रूप में थी। तदनन्तर वह पटना हाईकोर्ट में कम फीस पर अवश्य मुकदमा जीतने वाले वकील के रूप में चर्चित थे। पूर्वी चंपारण में उन्होंने १९३४-१९३५ में भूकम्प पीड़ितो की सेवा प्राणप्रण से की।

महात्मा गाँधी के आंदोलनों में वह जेल भी गए। बात सन् १९३० की है। रामवृक्ष बेनीपुरी के साथ वह हजारीबाग जेल में थे। बेनीपुरी जी जेल में भी कैदी पत्रिका का संपादन करते थे। पत्रिका का मुद्रण नहीं था, उसे लिखना पड़ता था। कैदी पत्रिका में प्रकाशित होने के लिए एक प्रेरक लेख आया। उसके लेखक थे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और लेख का शीर्षक था- 'प्रजा का ध्यान'। उसमें उन्होंने अंग्रेजों की फजीहत की थी कि वे प्रजा का धन मौजमस्ती में न उड़ाएँ। राजेन्द्र बाबू जल्दी सोने और जल्दी जागने के आदी थे। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि वह अपनी शादी में घोड़े से गिर गए थे, क्योंकि उन्हें झपकी आ गई थी। उसमें उन्होंने परिवर्तन किया। यूरोप में एक मुकदमे के लिए किसी भारतीय के वाद की पैरवी के लिए वह सारी रात जागे। उन्होंने वाद की तैयारी की और मुकदमा जीता। देश के स्वतंत्र होने पर उन्हें प्रथम राष्ट्रपति पद पर सबने चुना और दूसरी बार भी चुने गए। राष्ट्रपति पद पर वह अत्यंत सादगी से रहते थे। उन्होंने अपने व्यय सीमित रखे थे। शेष धन प्रजा का धन कल्याणकारी कार्यों में लगाने का उनका उपक्रम था। राष्ट्रपति पद से उन्होंने विश्राम लिया तो पटना स्थित सदाकत आश्रम में शेष दिन साधारण व्यक्ति की तरह बिताए। सन! १९६२ में उनका सम्मान 'भारत रत्न' की सर्वोच्च उपाधि से देश ने किया। उनका निधन २७ फरवरी १९६३ को सदाकत आश्रम पटना में हुआ।

राजेन्द्र बाबू को राष्ट्रपति बनाने के विरुद्ध

देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को न केवल दूसरी बार, अपितु स्वतन्त्रता के बाद पहली बार भी राष्ट्रपति बनाए जाने के पक्ष में नहीं थे। डॉ. राजेन्द्र बाबू की पौत्री तारा सिन्हा द्वारा हिन्दी में संपादित पुस्तक 'राजेन्द्र बाबू पत्रों के आइने में' यह प्रकट किया है। प्रभात प्रकाशन द्वारा दो खंडों में प्रकाशित इस पुस्तक में पंडित जवाहर लाल नेहरू के उन पत्रों को प्रकाशित किया गया है, जिससे पता चलता है कि नेहरू जी' देश का पहला राष्ट्रपति चक्रवर्ती राजा गोपालाचारी को बनाना चाहते थे। राजेन्द्र बाबू ने नेहरू जी के पत्रों के उत्तर में कड़ा पत्र भी लिखा था और उसकी प्रति सरदार बल्लभभाई पटेल को भी भेजी थी। पुस्तक के अनुसार नेहरू जी ने १० सितम्बर १९४९ को राजेन्द्र बाबू को लिखे पत्र में कहा था, चूँकि संविधान सभा का सत्र समाप्त होने को है। हमें शीघ्र निर्णय कर लेना होगा कि आम चुनाव होने तक अंतरिम अवधि के लिए राष्ट्रपति का चुनाव किस पद्धति से किया जाये। चयन की पद्धति के अतिरिक्त हमें यह भी स्पष्ट सोच लेना है कि किस व्यक्ति को खड़ा करना है। इस अल्पावधि के लिए हमारे शीर्षस्थ सहयोगियोंके बीच चुनावी संघर्ष अत्यंत दुर्भाग्य की बात होगी। बल्लभभाई से मेरी इस विषय पर बात हुई है, और हमारा विचार हुआ कि विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने के बाद सबसे सुरक्षित और अच्छा रास्ता यह होगा, कि आवश्यक परिवर्तनों सहित वर्तमान व्यवस्था ही चालू रखी जाए अर्थात् राष्ट्रपति के रूप में राजाजी (चक्रवर्ती राजगोपालाचारी) को ही यह सर्वोच्च पद दिया जाए। बल्लभभाई और मेरा विचार हुआ कि सर्वसम्मति से चुनाव के लिए राजाजी का नाम दिया

जाए। आशा करता हूँ आप इससे सहमत होंगे और राजाजी के नाम का प्रस्ताव भी आप ही करें। **११ सितम्बर १९४९ अर्थात् अगले ही दिन राजेन्द्र बाबू ने नेहरू के पत्र का उत्तर दिया है** और सरदार पटेल को उसकी एक प्रति मिली। राजेन्द्र बाबू ने नेहरू को पत्र लिखा किसी पद या प्रतिष्ठा का प्रार्थी मैं कभी नहीं रहा। यदि मुझे परोक्ष रूप से भी ज्ञात हो जाता कि यह बात आपके ध्यान में है तो मैं प्रसन्नता से आपको कह देता कि हम दोनों मे से किसी एक को चुनने का प्रश्न ही नहीं है। मैं स्वयं ही उन सबसे जो इस चुनाव में रुचि ले रहे हैं कहता कि वे राजाजी को पूरा समर्थन दें। **राजेन्द्र बाबू ने उस पत्र में यह भी लिखा कि आपने अपनी राय तो पहले मुझे बताई होती, आपने तर्कों के आधार पर मुझे अयोग्य ठहराकर छोड़ा है और वे तर्क भी ऐसे जो कसौटी पर नहीं टिकते।** राजेन्द्र बाबू का पत्र नेहरू जी को 11 सितम्बर को ही मिल गया और आधी रात उन्होंने उसका उत्तर भी लिखा है। उसमें उन्होंने सफाई दी कि उनकी बातों को गलत न समझा जाए फिर सरदार पटेल ने 16 सितम्बर १९४९ को राजेन्द्र बाबू को पत्र लिखकर स्पष्ट किया कि पंडित नेहरू से उनकी हाल में कोई बात हुई थी। केवल दो जून में हमारी बात हुई थी ८ दिसम्बर १९४९ को नेहरू जी ने राजेन्द्र प्रसाद को लिखे पत्र में फिर कहा कि राजाजी और आप ही राष्ट्रपति पद के दो योग्य प्रत्याशी हैं 12 दिसम्बर १९४९ को राजेन्द्र बाबू ने नेहरू को पत्र लिखकर फिर कहा कि राष्ट्रपति बनने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। पुस्तक के अनुसार राजेन्द्र बाबू और नेहरू जी में मतभेद हिन्दू कोड बिल पर ही नहीं, सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन को लेकर भी हुआ था। नेहरू जी नहीं चाहते थे कि राजेन्द्र बाबू मन्दिर का उद्घाटन करें क्योंकि इससे धर्मनिरपेक्षता के विरुद्ध संदेश जाएगा, जबकि राजेन्द्र बाबू ने नेहरू जी की परवाह न कर सोमनाथ मन्दिर का उद्घाटन किया। ❑

कलियों जैसे मुस्काओ तुम

—पवन कुमार

कलियों जैसे मुस्काओ तुम।
फूलों की तरह खिल जाओ तुम।
सागर जैसे तुम गहरा बनो।
रंगों की तरह सुनहरे बनो।
पर्वत जैसे बन जाओ तुम
कलियों जैसे मुस्काओ तुम
फूलों की तरह खिल जाओ तुम।
सूरज की तरह उजियाला दो
मानवता को सहारा दो।
तुम मदमाता संगीत बनो
सरगम जैसे तुम गीत बनो।
कलियों की तरह मुस्काओ तुम
फूलों की तरह खिल जाओ तुम

—वेद मंदिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, इब्राहीमपुर, (दिल्ली)

दयानन्द जी का संदेश

वेदों के अनुकूल चले हम, सब में यही भावना हो,
परहित में जीवन यह बीते, प्रभु से यही कामना हो।
सत्यं शिवं सुन्दरम् लेकर,
सबका होवे शुद्धाचरण।
कदम लड़खड़ाये जब दानव के,
भू पर होगा, धर्मावतरण।
शौर्य, शक्ति, साहस का हमसें, फिर से नई सर्जना हो,
वेदों के अनुकूल चलें हम, सबमें यही भावना हो।
स्वच्छ समाज बनाकर उसमें,
बहे प्रेम की सुन्दर धारा।
मावनता निर्भय हो करके,
मंगलमय पा जाय किनारा।
क्रन्दन रहित बने फिर भारत, ऐसी नई कल्पना हो,
वेदों के अनुकूल चले हम, सब में यही भावना हो।
कोई नहीं समस्या आवे,
सबका जीवन सुखमय हो।
दुख दारिद्रय का नाम न हो,
डाल-डाल पर किसलय हो।
प्रेम, दया, ममता हर आंगन, ऐसा भारत अपना हो,
वेदो के अनुकूल चलें हम, सबमें यही भावना हो।

—राधेश्याम शर्मा, सुलतानपुर (उ.प्र.)

॥ ओ३म् ॥

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला राजकोट-363650 (गुजरात) दूरभाष : (02822) 287756

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 5, 6, 7 मार्च 2008 (बुधवार से शुक्रवार) को ऋषि जन्म स्थली टंकारा में समारोहपूर्वक आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ : दिनांक 28 फरवरी से 6 मार्च 2008 तक

ब्रह्मा : आचार्य विद्यादेव/रामदेव जी **भक्ति संगीत : श्री सत्यपाल पथिक**

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : श्री बृज मोहन मुंजाल (प्रबन्ध निदेशक हीरो ग्रुप इण्डस्ट्रीज)

बोधोत्सव

दिनांक 6-03-2008 वीरवार को दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक

मुख्य अतिथि : माननीय श्री भैरोसिंह शेखावत (पूर्व उपराष्ट्रपति, भारत सरकार)

विशिष्ट अतिथि : पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा (प्रधान, डी.ए.वी.), **श्री राधेश्याम शर्मा** (उपप्रधान डी.ए.वी.)

कार्यक्रम के आमन्त्रित विद्वान्

महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती (नोएडा), **श्रीमती शिवराजवती** (समाज सेविका एवं वरिष्ठ ट्रस्टी), **श्रीमती शशि प्रभा कुमार** (जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली), **श्री गोपाल चन्द्र** (यू.के.), **आचार्या प्रेमलता** (दाधिया), **आचार्या अन्नपूर्णा** (देहरादून), **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (विधायक), **पं. राम किशन शर्मा** (नैरोबी), **सुरेशचन्द्र अग्रवाल** (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात), **श्री वाचोनिधि आर्य** (गांधीधाम), **श्री रमेश चन्द मेहता** (अहमदाबाद), **श्री सुरेन्द्रपाल** (नागपुर), **डॉ. वेदप्रकाश आर्य** (देहरादून)

इनके अतिरिक्त असंख्य विद्वान् एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

बाहर से आने वाले ऋषि भक्त ऋतु अनुकूल हल्का बिस्तर साथ लावें और आने की पूर्व सूचना टंकारा अथवा दिल्ली कार्यालय को अवश्य देवें, जिससे व्यवस्था बनाई जा सके।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल	**शान्ति प्रकाश बहल**	**रामनाथ सहगल**
मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान	*कार्यकारी प्रधान*	*मन्त्री*

उपकार्यालय : आर्यसमाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

दूरभाष : 23362110, 23360059 टेलीफैक्स : 41552119

अजमेर में भव्य ऋषि मेला

अजमेर : प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी भव्य ऋषि मेले का शुभारम्भ ११ नवम्बर से वेद पारायण यज्ञ से हुआ।

१६ नवम्बर से ऋषि बलिदान दिवस समारोह का प्रारम्भ यज्ञ के उपरान्त ध्वजारोहण द्वारा हुआ। वेद पारायण यज्ञ वैदिक विद्वान् आचार्य वेदपाल के ब्रह्मत्व में संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में सभा के उपप्रधान शत्रुघ्न आर्य रांची द्वारा ध्वजारोहण किया गया। ब्रह्मचारियों की ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रों एवं राष्ट्रगीत गायन से वातावरण अध्यात्ममय हो गया। मध्याह्न कालीन सत्र में मेरठ से पधारे विद्वान् सत्येन्द्र आर्य ने में बताया कि वेद के माध्यम से ईश्वर का ज्ञान प्राप्त हो सकता है महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पहली बार सही वेदभाष्य कर लोगों को बताया कि वेदों के अनुरूप ईश्वर निराकार है एवं उसकी उपासना आत्मा एवं अंत:करण की पवित्रता से ही संभव है। श्री सत्यपाल पथिक जी भजनोपदेशक ने अपनी ओज पूर्ण वाणी एवं सुमधुर कंठ से जनता को मुग्ध कर दिया,

ब्रह्मचारी राजेन्द्र आर्य ने अपनी ओजस्वी वाणी में कहा कि आज धर्म के नाम पर अनेकों सम्प्रदाय बन गए हैं जो लगभग विगत ४ हजार वर्षों से प्रचलित है सबसे पुरातन धर्म वैदिक धर्म है जो लोगों को जोड़ता है एवं प्रचलित संप्रदाय मनुष्य को तोड़ते हैं। श्री ओमप्रकाश शर्मा भजनोपदेशक ने भी सुमधुर भजनों द्वारा श्रोताओं को बांध कर रखा। दूसरा सत्र पाखंड खंडन सत्र रहा जो मध्याह्न २.३० से आरंभ हुआ जिसमें श्री भूपेन्द्रसिंह ने अपने भजनों के माध्यम से जनसमूह को सार्थक संदेश दिया। डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि इस देश में पाखण्ड फैला तो अनार्ष ग्रन्थों के एवं अनार्ष विचारों के विस्तार से आर्ष और अनार्ष का सरल विवेचन करते हुए उन्होंने कहा कि जो हमारे ऋषियों द्वारा रचित ग्रंथ हैं वे आर्ष ग्रंथ और ऋषियों द्वारा प्रतिपादित परंपराएं एवं विचार हैं वे आर्ष हैं।

वेद गोष्ठी का संयोजन देश के ख्याति नाम विद्वान् डॉ. कृष्णपाल ने किया एवं डॉ. महावीर मीमांसक ने अध्यक्षता। स्वामी प्रणवानन्द गुरुकुल गौतम नगर भी उपस्थित थे। वेद गोष्ठी का विषय "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" इस पर विद्वानों ने विस्तृत चर्चा की।

वेद गोष्ठी के सत्र में डॉ. वेदपाल और डॉ. सुपर्ण जी सारस्वत अतिथि सूर्यादेवी बनारस, डॉ. महावीर मीमांसक आदि के विचार जनता ने सुने।

पाखंड खंडन सम्मेलन में डॉ. धर्मवीर मंत्री परोपकारिणी सभा ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि हम बेवकूफ न बनें और लोगों के बहकावे में न आकर जो सत्य हो केवल उसे स्वीकार करें। डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. राजेन्द्र जिज्ञासु, स्वामी प्रणवानन्द आदि वैदिक विद्वानों ने भी इस सम्मेलन में भाग लिया, इस सम्मेलन में डॉ. कुशलदेव जी द्वारा डॉ. रघुवीर वेदालंकार द्वारा दर्शनानंद द्वारा रचित वैदिक विचारधारा एवं शास्त्रार्थ महारथी शांति प्रकाश नामक पुस्तक का विमोचन भी कराया गया। ऋषि मेले का प्रथम सत्र ओमप्रकाश आर्य भजनोपदेशक के भजन से आरंभ हुआ। आचार्य प्रियवंदा जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यज्ञ और धर्म दोनों एक दूसरे के पर्यायवाची हैं। गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल द्वारा पंच महायज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डाला गया। १०० वर्षीय छ: माह के संन्यासी स्वामी सर्वानन्द ने अपने सुमधुर भजनों के माध्यम से जनता को मुग्ध कर दिया।

ऋषि मेले के अवसर पर सरस्वती भवन में चांदकरण शारदा वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय 'महिला सशक्तिकरण के बिना राष्ट्र का विकास संभव नहीं है' था। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार कु. पायल, मॉडल स्कूल ने प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता का संयोजन कुमारी सरला शारदा द्वारा किया गया। पं. नरेन्द्र जन्म शताब्दी समारोह में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती की आर्ष पद्धति से शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ आचार्य होने के नाते डॉ. मुमुक्षु आर्य सम्मान निधि से सम्मानित किया गया, अभिनन्दन पत्र वाचन डॉ. धर्मवीर ने किया। आर्यवीरों द्वारा यतीन्द्र शास्त्री के संयोजन में शौर्य प्रदर्शन किया गया।

रात्रिकालीन सभा मंच संचालन ब्रह्मचारी हरिप्रकाश ने किया। पथिक जी और भूपेन्द्र जी के मधुर भजनों ने जनता को देर रात तक रोके रखा। प्रखर वक्ता ज्वलंत शास्त्री ने ओजस्वी भाषण द्वारा जनता में आर्यसमाज के प्रति समर्पण का भाव जगाया। वड्‌लूर से पधारे स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने आर्ष पद्धति पर विशेष जोर दिया। श्री आनन्द पुरुषार्थी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

समापन दिवस आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन के रूप में आरम्भ हुआ, सम्मेलन की अध्यक्षता आर्यजगत् के विद्वान् राजेन्द्र जिज्ञासु ने की। श्री सत्यपाल पथिक भजनोपदेशक

(शेष पृष्ठ ५४ पर)

समाचार-दर्शन

आर्यसमाज अशोक विहार-२ दिल्ली

दिल्ली : आर्यसमाज अशोक विहार-२, दिल्ली में तीन से छः दिसम्बर तक सप्तदिवसीय सामवेदीय यज्ञ एवं गीता प्रवचन का आयोजन किया। सप्ताह के दौरान विद्वानों के प्रवचन भी हुए।

आर्यसमाज प्रशांतविहार का वार्षिकोत्सव

दिल्ली : आर्यसमाज प्रशांतविहार के वार्षिकोत्सव का समापन छः दिसम्बर को एक सार्वजनिक सभा के रूप में हुआ। जिसे कई आर्य नेताओं ने सम्बोधित किया।

रोहिणी में निःशुल्क प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

दिल्ली : माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट द्वारा रोहिणी सैक्टर-७ में तीन से नौ नवम्बर तक निःशुल्क प्राकृतिक चिकित्सा एवम् ध्यान शिविर आयोजित हुआ। योगाचार्य डॉ. विनोद कुमार शर्मा का योगदान उल्लेखनीय रहा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

दिल्ली : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कुछ राज्य सरकारों द्वारा यौन शिक्षा पर अड़े रहने के मद्देनजर इसके विरूद्ध अभियान का श्रीगणेश करने का निर्णय एक विशाल बैठक में लिया गया। जो आर्य समाज हनुमान रोड में सम्पन्न हुई। कैप्टन देवरत्न आर्य और श्री प्रकाश आर्य ने देशभर के आर्य कार्यकर्ताओं ने इस अभियान में सक्रिय योगदान का आह्वान किया है।

छात्राओं का आदर्श व्यवहार
गाउन में उपाधि लेने से इंकार

लुधियाना : शान्ति देवी आर्य महिला कॉलेज में आयोजित दीक्षांत समारोह में ४६ छात्राओं ने गाउन डालकर उपाधियां लेने से इंकार कर कीर्तिमान स्थापित किया है। कॉलेज की प्रिंसिपल श्रीमती निर्मला पाधी ने उनके इस कदम पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि इन छात्राओं ने अपने तौर पर निर्णय लेकर अग्रेजों की परम्परा को तोड़कर भारतीय संस्कृति का सम्मान किया है। इन छात्राओं के केसरिया रंग का स्वार्थ धारण की स्नातक व स्नातनोत्तर उपाधियां ली।

शोकांजलि

दिल्ली : आर्य समाज जनकपुरी तथा उत्तम नगर क्षेत्र के वयोवृद्ध सामाजिक कार्यकर्ता श्री महाराजेश्वर सहाय का ८६ वर्ष की आयु में निधन हो गया। श्री महाराजेश्वर अनेक सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागी रहे थे। 'जनज्ञान' एवं दयानन्द संस्थान परिवार दिवंगत आत्मा की शान्ति की प्रार्थना करता है।

माता रामचमेली का देहांत

दिल्ली : आर्यसमाज राजौरीगार्डन की वरिष्ठ सदस्या माता रामचमेली का गत् पाँच दिसम्बर को निधन हो गया। उनके अन्तिम संस्कार में क्षेत्र के निवासियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। वह विगत अनेक वर्षों से टंकारा में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव में भाग लेती थीं।

'जनज्ञान' एवम् दयानन्द संस्थान के कार्यकर्ताओं ने दिवंगत आर्य देवी के निधन पर शोकांजलि समर्पित करते हुए परम पिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते हुए शोकाकुल परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की।

आर्य समाज बेतिया (बिहार)

बेतिया : आर्य समाज बेतिया द्वारा पाँच दिवसीय धर्म प्रचार शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें स्वामी अग्निव्रत, पं. सियाराम निर्भय, साध्वी यशोदा आर्य, श्री रामचन्द्र सिंह के भजन व उपदेश हुए।

श्री वेदपाल आर्य को पितृशोक

सोनीपत : हरियाण के प्रमुख आर्य नेता जी वेदपाल आर्य के पिता श्री शेर सिंह आर्य का ८० वर्ष की आयु में विगत माह निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ डॉ. सुकामा जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। श्रद्धांजलि सभा में आचार्य बलदेव जी, आचार्य विजयपाल, श्री देवव्रत चौधरी राजपाल, मास्टर रामपाल दाहिया आदि अनेक आर्य नेता उपस्थित थे। जनज्ञान परिवार की ओर से दिवगंत आत्मा की स्मृति में नमन।

आर्य समाज जे.वी.टी. गार्डन छतरपुर एक्स.

दिल्ली : आर्य समाज जे.टी.वी.एस. गार्डन छतरपुर एक्सटेंशन का पाँचवा वार्षिकोत्सव २५ दिसम्बर से ३० दिसम्बर तक आयोजित हुआ। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण व गायत्री महायज्ञ का भी आयोजन किया गया।

आर्य समाज अजमेर के चुनाव एवम् स्पष्टीकरण

आर्य समाज अजमेर के चुनाव स्थगित करने हेतु

दायर स्टे याचिका माननीय न्यायालय द्वारा खारिज किये जाने पर पूर्व में निर्धारित संवैधानिक प्रक्रिया के अनुसार गुप्त मतदान से सम्पन्न हुआ, जिसमें श्री कृष्णपाल सिंह प्रधान, श्री श्रद्धानन्द शास्त्री मंत्री व श्री गोविन्द सिंह कोषाध्यक्ष चुने गए । उपरोक्त जानकारी श्री चन्दराम आर्य द्वारा प्रेषित एक पत्र में दी गई है।

आर्य नेता का निधन

जयपुर। आर्यसमाजी व समाज सेवी श्री भगवती प्रसाद सिंह भास्कर का अकस्मात् निधन विगत माह हो गया। आर्यसमाज, आदर्श नगर में रविवार 18 नवम्बर को आयोजित शोक सभा में सैंकड़ों महिलाओं व पुरुषों ने श्रद्धांजली अर्पित करते हुए उनके द्वारा आर्यसमाज के लिये किये गये योगदान की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

श्री मदनलाल खन्ना को भावभीनी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के महासचिव श्री मदन लाल खन्ना का दु:खद निधन हो गया। पहली दिसम्बर को सूरज भान डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बसन्त विहार, में शान्ति यज्ञ तथा शोक सभा का आयोजन किया गया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा डी.ए.वी. प्रबन्धकर्तृ समिति के प्रधान श्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा ने अपने भावुक उद्‌बोधन में श्री खन्ना को अपना सच्चा, बुद्धिमान तथा दृढ़ साथी बताते हुए कहा कि उनकी मृत्यु से डी.ए. वी. संस्था तथा आर्यसमाज को गहरा धक्का लगा है।

विख्यात इतिहासकार पुरूषोतम नागेश ओक का निधन

स्वदेश के राष्ट्रवादी इतिहासकारों में अग्रण्य श्री पुरूषोत्तम नागेश ओक का गत चार दिसम्बर को पुणे में निधन हो गया। वे ताजमहल पर अपने शोध परक ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए बहुचर्चित और सुविख्यात थे। उनकी पुस्तक ताजमहल नहीं तेजोमहालय ने देश-विदेश में शोध को नवीन दिशा प्रदान की। उनके द्वारा ताजमहल के बारे में उठाए गए प्रश्न आज भी अनुत्तरित हैं।

दो मार्च, १९२७ को इन्दौर में जन्में श्री ओक ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान आजाद हिन्द फौज से जुड़कर अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध में सहभागिता की थी। मुम्बई विश्व विद्यालय से एम.ए. और विधि स्नातक उपाधि प्राप्त करने के बाद वे १९४७ से १९५३ तक वे हिन्दुस्तान टाइम्स और द स्टेट्समैन के संवाददाता रहे। आगे चलकर उन्होंने नई दिल्ली स्थिति अमरीकी दूतावास में भी काम किया। इतिहास सदा ही उनका प्रिय विषय रहा।

'इन्सटीट्यूट फॉर टीराइटिंग वर्ल्ड हिस्ट्री' के वे संस्थापक अध्यक्ष रहे। श्री ओक के ताजे शोध का निष्कर्ष था ईसा पूर्व कालखंड में संस्कृत भाषा और वैदिक सभ्यता का सकल विश्व में सम्मान था। हिन्दू धर्म और वैदिक संस्कृति के वे निष्ठावान साधक थे। सरस्वती शोध संस्थान के निदेशक श्री कल्याण रमण सहित देश के शीर्ष साहित्याकारों ने श्री ओक के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

जनज्ञान परिवार भी सत्य इतिहास शोधक श्री पुरूषोतम नागेश के शोक में उनके परिजनों के साथ सहभागी हैं।

आर्ष गुरुकुल वड्लूर कामारेड्डी, आं.प्र. का वार्षिकोत्सव (२७ जनवरी से ३ फरवरी २००७ तक)

कामारेड्डी : प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में माघ कृ. ५ रविवार से कृष्ण ११ रविवार संवत् २०६४ तक ८ दिन का योगसाधन शिविर होगा। इसमें योगशिक्षणार्थ श्री स्वामी विष्वङ्., स्वामी अमृतानन्द, श्री वेणुगोपाल जी गांधीनगर गुजरात पधार रहे हैं। अन्तिम दिन उत्सव में श्री आचार्य बलदेव जी गुरुकुल कालुआ जीन्द भी पधारेंगे शिविरार्थी १५ दिन पूर्व ५००/- भोजन शुल्क भेजकर स्वीकृति प्राप्त करें। साधक २७ जनवरी तक गुरुकुल पहुंच जाएं।

(पृष्ठ ५२ का शेष)

स्वरचित रचनाओं को सुनाकर जनता को मुग्ध कर दिया। स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने वेदों में जो ज्योतिष चिह्नित है उसकी व्याख्या कीं।

आर्यसमाज नला बाजार द्वारा महर्षि दयानन्द स्मारक न्यास (भिनाय कोठी) को क्रय कर न्यास को सौंपा गया किन्तु न्यास द्वारा लगभग ३० वर्षों तक कोई विकास न करने के कारण आर्यसमाज नला बाजार द्वारा आज आर्यजगत् में सबसे विकसित संस्था परोपकारिणी सभी को सौंपने का निर्णय लिया एवं इस आशय का पत्र सभी की सहमति प्राप्त करने हेतु सभा को सौंपा जिसे सभा में सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। सभा में उपस्थित न्यास के वर्तमान अध्यक्ष केप्टन देवरत्न आर्य, न्यास के कोषाध्यक्ष रामगोपाल गर्ग जी ने भी अपनी सहमति प्रदान की। एवं सभा द्वारा उनका पुष्पहार से स्वागत भी किया गया।

आप हमारी सहायता इस प्रकार भी कर सकते हैं

१. वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम दिल्ली-३६ में अपनी ओर से अथवा अपने किसी प्रियजन की स्मृति में कुटिया बनवा सकते हैं। जो आजीवन आपकी होगी। इस समय व्यय लगभग दो लाख रुपए होगा। एक कुटिया १५ × १२ फुट की, पीछे शौचालय और स्नानागर ५ × ७ फुट, रसोई ७ × ७ फुट की, आगे बरामदा १२ × ७ फुट। प्रत्येक कुटिया अपने आप में पूर्ण इकाई है। वेदमंदिर में यज्ञशाला, सत्संग भवन, कार्यालय आदि के निर्माण हेतु अधिक से अधिक धनराशि १००, ५००, १००० रुपये अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्वयं तथा अपने मित्रों से धन संग्रह करके धनराशि ''दयानन्द संस्थान'' के नाम भेजें। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।

२. वेद मन्दिर गौशाला में गौ दान करें तथा गउओं के लिए चारा आदि की व्यवस्था हेतु मुक्तहस्त से दान देकर गौरक्षा अभियान में सहयोगी बनें।

३. परमात्मा की अमरवाणी ''चारों वेदों का हिन्दीभाष्य'' मूल्य १८०० रु. अभी १२०० रु. में अपने तथा अधिक से अधिक अपने मित्र परिवारों में पहुंचायें। डाक से मंगाने पर १८० रुपये अधिक लगेंगे।

४. बढ़िया पेपर पर छपा चारों वेदों का हिन्दी भाष्य मूल्य ३२०० रु. अभी २२५० रु. में। डाक से मंगाने पर २०० रु. अधिक लगेंगे।

५. विगत बयातालीस वर्षों से लगातार वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न मासिक ''जनज्ञान'' के सदस्य बनें और अपने मित्रों को बनायें। वार्षिक शुल्क. १००/- रुपये है। ग्यारह सौ रुपये में जीवन भर जनज्ञान भेजा जायेगा, साथ ही अभी तीन सौ पचास रुपये का वैदिक साहित्य भी उपहार में प्राप्त करें।

६. प्रतिमास ''जनज्ञान'' की कम से कम दस प्रतियां प्रचारार्थ ६०/- रुपये में मंगाकर बांटें तथा ''जनज्ञान'' मासिक में विज्ञापन देकर हमारे ''राष्ट्र जागृति अभियान'' में सहयोग प्रदान करें।

७. संस्थान ने बीस से अधिक ट्रैक्ट वेदप्रचार तथा हिन्दू जागरण अभियान को गतिमान बनाने हेतु प्रकाशित किए हैं, जिनकी सूची ''जनज्ञान मासिक'' में प्रकाशित होती रहती है। अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर बांटें तथा नये संस्करण छापने में सहयोग देकर इस धर्मप्रचार कार्य में हमारे सहयोगी बनें।

अध्यक्ष--दयानन्द संस्थान

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	1800 रु.
2.	सामदेव : आध्यात्मिक भाष्य	201 रु.
3.	वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या)	100 रु.
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)	100 रु.
5.	भारत के वीर बच्चों की कहानियां	15 रु.
6.	धरती का स्वर्ग	15 रु.
7.	सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र)	60 रु.
8.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	15 रु.
9.	धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं)	15 रु.
10.	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	5 रु.
11.	वैदिक सम्पत्ति	200 रु.
12	धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या)	15 रु.
13.	योग और ब्रह्मचर्य	15 रु.
14.	गीत मंजरी (भजनों का अनुपम संग्रह)	20 रु.
15.	Inside the Congress	60 रु.
16.	Life and Teachings of Swami Dayanand	200 रु.
17.	History of the assassins	60 रु.
18.	Concept of God	60 रु.
19.	श्रीमद्यानन्द प्रकाश	60 रु.
20.	Light of Truth	250 रु.
21.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	15 रु.
22.	वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य	60 रु.
23.	संक्षिप्त महाभारत	80 रु.
24.	संक्षिप्त रामायण	20 रु.
25.	ऋग्वेद शतकम	10 रु.
26.	चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं	25 रु.
27.	सत्संग पद्धति	10 रु.
28.	वैदिक सान्ध्य गीत	15 रु.
29.	A Short Life Story of Swami Dayanand	30 रु.
30.	गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा, कम से कम दस प्रति मंगायें	4 रु.
31.	बृहत्तर भारत-पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार	300 रु.
32.	ईश्वर-(संसार के वैज्ञानिकों की दृष्टि में)	150 रु.
33.	अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र-स्वामी ब्रह्ममुनि	200 रु.
34.	अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या-स्वामी ब्रह्ममुनि	100 रु.
35.	मोपला (उपन्यास)-वीर सावरकर	10.00 रु.
36.	वीर सावरकर-संक्षिप्त जीवन परिचय	5.00 रु.
37.	भाई परमानन्द (जीवन परिचय)	30.00 रु.
38.	बाल सत्यार्थ प्रकाश	60.00 रु.
39.	मां गायत्री	2.00 रु.
40.	स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा	2.00 रु.
41.	विश्व को वेद का संदेश	3.00 रु.
42.	विश्व को आर्यसमाज का संदेश	3.00 रु.
43.	Great Gayatri	2.00 रु.

१०० रु. से अधिक धार्मिक साहित्य पर १५ प्रतिशत ३०० रु. से अधिक लेने पर २० प्रतिशत तथा ५०० रु. से अधिक लेने पर २५ प्रतिशत होगा। आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य बांटिये

1.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे?	3.00 रु.
2.	हिन्दुओं को चेतावनी–वेदभिक्षुः	2.00 रु.
3.	भारत के मुसलमानों का क्या करें? –वेदभिक्षुः	2.00 रु.
4.	हम सब हिन्दू हैं–सावरकर	2.00 रु.
5.	इस्लाम में क्या है? –राकेश रानी	2.00 रु.
6.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ –जहीर नियाजी	2.00 रु.
7.	हिन्दू जागो ! देश बचाओ	2.00 रु.
8.	इस्लाम–एक परिचय	2.00 रु.
9.	पोप की सेना का भारत पर हमला – वेदभिक्षुः	2.00 रु.
10.	पादरियों को चुनौती	2.00 रु.
11.	बाईबिल को चुनौती	2.00 रु.
12.	क्या ईसा खुदा का बेटा था?	2.00 रु.
13.	और पादरी भाग गया	2.00 रु.
14.	बाइबल कसौटी पर	4.00 रु.
15.	Bible in the Balance	3.00 रु.
16.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा?	2.00 रु.
17.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा?	2.00 रु.
18.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश	2.00 रु.
19.	हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा	2.00 रु.
20.	A challange to the Christian Faith	50 पैसे

एक रुपये वाली "हिन्दू धर्म रक्षक" साहित्य की १००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत और ५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

व्यवस्थापक–दयानन्द संस्थान

२२८६-आर्यसमाज मार्ग, नई दिल्ली-५

मुफ्त प्राप्त करें

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य मूल्य १८००/- रुपये
बढ़िया वैदिक साहित्य मूल्य ५००/- रुपये
जनज्ञान मासिक ११००/- रुपये

३४०० रुपये का साहित्य उपहार भेंट किया जायेगा--मात्र २१०० रुपये सहयोग राशि प्रदान कर दयानन्द संस्थान के ''संरक्षक सदस्य'' बनें।

- परमपिता परमात्मा की अमर वाणी ''**चारों वेदों का हिन्दी भाष्य**'' द्वारा अपने गृह एवं पूजास्थल को आलोकित करें। अपने मित्र परिवारों को भेंट में दें।
- ''**जनज्ञान मासिक**'' आपके परिवार को वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय एकता के प्रेरक भावों और संस्कारों की ओर प्रेरित कर उसे स्वर्गोपम बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

प्रत्येक सदस्य सदैव शुभ अवसर पर एक नया संरक्षक सदस्य बनाकर सहयोग का हाथ बढ़ाएं तथा अपनी पवित्र आय से मात्र २१०१/- रुपए की लघु राशि प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

वेदप्रकाश सिंह
(अमरीका में संस्थान के प्रतिनिधि)
संपादक 'सौरभ' न्यूयार्क
८०-१५, ४१ AVENU APARTMENT २४१
NEWYORK ELMHURT

पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि
संरक्षक
दयानन्द संस्थान
सहयोग मंडल
नई दिल्ली

राकेश रानी
अध्यक्ष
दयानन्द संस्थान
एवं सम्पादक 'जनज्ञान'
नई दिल्ली

सहयोग राशि ''दयानन्द संस्थान'' के नाम निम्न पते पर प्रेषित कीजिए :

दयानन्द संस्थान, २२८६, आर्यसमाज मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-११०००५
दूरभाष : ४१००४७४१, ४१०१५४५७

जन-ज्ञान (मासिक) २२८६, आर्यसमाज मार्ग करौल बाग, नई दिल्ली-५	पौष-माघ सम्वत्-२०६४ जनवरी-सन्-२००८	Delhi Postal Regn. No. DL(C)-01/1114/06-08 R. N. 10719/65 Posted at N. D. PSO on Dates 5 & 6 of January 2008

ओ३म्

मन प्राणों में वेद पले
दु:ख कष्ट से मुक्ति मिले

वेद नहीं जिसके घर में
हिन्दु न कहलाए जग में

वेद सृष्टि का मूल महान
आर्य जनों, यह लो पहचान

"परमात्मा" की
दिव्य-सनातन वाणी

मंत्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर, ऋषि-देवता आदि विवरण सहित 23 X 36 सें.मी. साइज मे कुल पृष्ठ 2200, बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन प्राय: 8 किलो। सुन्दर मुद्रण।

चारों वेदों का सरल, रोचक हिन्दी भाष्य

महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी भाष्य, मूल संस्कृत सहित

अभी वेद घर में लाओ, शुद्ध आर्य जन कहलाओ

प्रसारार्थ लागत मूल्य
रु.1800/=
अभी मात्र 1200/= में प्राप्त करें
डाक व्यय पृथक

श्रेष्ठ बढ़िया कागज़ पर लागत मूल्य 3200/-
अभी लेने पर 2250/-

कृपया आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

अधिक विवरण व राशि भेजने के लिए:
दयानंद संस्थान, 2286 आर्यसमाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, (भारत) दूरभाष -
प्रधान कार्यालय: महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, इब्राहीमपुर, पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-1100036 (भारत) दूरभाष - 45415457, 25724741

साइबर सेपियन्स 23512929,23551818